सामुदायिक

RNI No. MPBIL02443/2020-TC

GOONJ

National News Magazine

वर्ष : 01 अंक : 06 अप्रैल 2023 मूल्य: ₹ 50 पृष्ठ : 52

सशक्त नारी सशक्त प्रदेश

लाड़ली बहना योजना

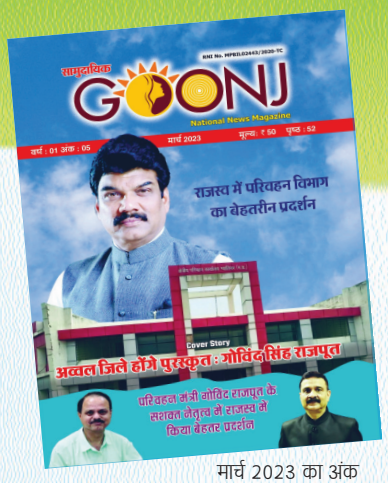

मार्च 2023 का अंक

ग्वालियर, अप्रैल 2023

(वर्ष 01, अंक 06, , पृष्ठ 52, मूल्य 50 रुपए)

प्रेरणास्रोत
श्रीमती संध्या सिकरवार

चेयरमैन
डॉ. जे. एस. सिकरवार

सम्पादक
कृति सिंह

सलाहकार
आशीष प्रताप सिंह राठौड़

उप संपादक
अंतिमा सिंह -कौस्तुभ सिंह

सहायक संपादक
अठेन्द्र सिंह कुशवाह

बिजनेस एडिटर
हरीश पाल

सलाहकार संपादक
राजीव तोमर, भूपेन्द्र तोमर

कार्यकारी संपादक
डॉ. आर. एन. एस. तोमर

सब एडिटर/एडिटिंग
इमरान गौरी

कानूनी सलाहकार
एड. अरविन्द दूदावत

एडिटोरियल प्रभारी
स्तुति सिंह

छायांकन/सिटी रिपोर्टर
अनिल सिंह सिकरवार

न्यूज एंकर
प्रिया शिन्दे, कल्पना पाल

संकलन
अभय बघेल, स्निग्ध तोमर

गूंज पत्रिका संपादकीय कार्यालय
ई-69/70, हरिशंकरपुरम लश्कर ग्वालियर मध्य प्रदेश
(संपर्कः 7880075908)

इस अंक में

44

48

48

06

45

45

23

46

47

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक कृति सिंह के लिए गूंज ई 69-70 हरिशंकर पुरम ग्वालियर मध्य प्रदेश से मुद्रित एवं ई 69-70 हरिशंकर पुरम ग्वालियर मध्य प्रदेश से प्रकाशित । संपादक-कृति सिंह **RNI.Title Code-MPBIL02443/2020-TC**

हम बनेंगे आपकी आवाज़.....

कृति सिंह
संपादक

आज के डिजिटल दौर में मीडिया की भूमिका काफी अहम है। इसी को ध्यान में रखते हुए गूंज 90.8 एफ. एम. रेडियो के माध्यम से लोगों का मनोरंजन कर रहा है। हम अपने पाठकों को ग्वालियर चंबल अंचल एवं इसके आसपास की ऐतिहासिक धरोहरें, लोक संगीत, पुरातत्व, पर्यटन, धर्म, राजनीति, खेल, समाजसेवा, समाज सेवा के क्षेत्र में कार्यरत लोगों से रूबरू करा रहे हैं। समाज का प्रत्येक व्यक्ति गूंज का हिस्सा बने और हमारे साथ मिलकर विकास में अपना योगदान दें। हमें आशा है कि हमारे प्रिय पाठक गूंज 90.8 एफ एम से जुड़ कर हमारे उद्देश्य को सफल बना समाज की उन्नति में अपना योगदान देंगे।

रेडियो दुनिया में सबसे भरोसेमंद और उपयोग किए जाने वाले मीडिया में से एक है। ग्वालियर का पहला कम्युनिटी रेडियो स्टेशन गूंज 90.8 एफ. एम . आपकी अपनी आवाज ने समाज के हर क्षेत्र में अलग मुकाम हासिल कर चुके लोगों को एक मंच प्रदान किया है। गूंज को अभी बहुत कम समय हुआ है लेकिन दर्शकों का गूंज के प्रति जो प्यार और अपनापन हमें मिला है वह वाकई सराहनीय है। ग्वालियर चंबल की हुनरमंद प्रतिभाओं को आगे लाना और ग्वालियर अंचल का नाम पूरे विश्व में रोशन करना ही गूंज का मुख्य उद्देश्य है। इसी को बात ध्यान में रखते हुए गूंज के रूप में रेडियो स्टेशन शुरू करने का जो सपना देखा था आज वह साकार हो गया है। लोगों के बीच आज उस सपने को पूरा होता देखकर मुझे काफी प्रसन्नता होती है। रेडियो स्टेशन शुरू करना कोई आसान काम नहीं था यह अपने आप में एक बड़ी चुनौती थी। जिसे गूंज की पूरी टीम ने बखूबी पूरा किया है।

गूंज 90.8 एफ. एम . आपकी अपनी आवाज़ आमजन के लिए शुरू की गई एक पहल है जिसे आप सभी ने सफल बनाया है। हमारा पहला कर्तव्य गूंज किस तरह से आमजन की कसौटी पर खरा उतरे इसका भी हम ख्याल रखते हैं। जनता से जुड़ी समस्याओं को अधिकारियों तक पहुंचाना हमारा मुख्य उद्देश्य है। हम किस तरह से समाज के विकास में योगदान दे सकें। गूंज मीडिया ग्रुप की यह पहली प्राथमिकता होगी कि ग्वालियर शहर से जुड़ी हर खबर को हम सबसे पहले पाठकों तक पहुंचाएं। गूंज के माध्यम से ग्वालियर शहर से जुड़े इतिहास, कला, संस्कृति, पर्यटन, कम्युनिटी, शिक्षा आदि विषयों पर कई जानकारियां हमारे पाठकों को मिल रही हैं। हमारा यह पहला प्रयास होगा कि आमजन से जुड़े मुद्दों पर फोकस हो आमजन की आवाज और उनसे जुड़े पहलूओं को सार्थक रूप से उठाना ही हमारा पहला कर्तव्य रहेगा।

हमारे द्वारा प्रसारित किए जाने वाले कार्यक्रमों महिला हिंसा के प्रति जागरूकता अभियान, कैंसर, टी.वी. आदि बीमारियों से बचाव हेतु जागरूकता अभियान सेमीनार, विजन जीरो, यातायात के प्रति जागरूकता, महिला उत्थान एवं बेटियों को आगे बढ़ने में बढ़ावा देने वाले कार्यक्रमों पर भी फोकस रहेगा। केन्द्र एवं राज्य सरकारों द्वारा महिलाओं के लिए चलाई जा रहीं विभिन्न योजनाओं के बारे में भी विस्तृत जानकारी दी जाएगी जिससे महिलाएं जागरूक हो सकें। महिलाओं से संबंधित कानूनी अधिकारों उनके क्या-क्या अधिकार होते हैं और भी कई पहलुओं पर कार्यक्रमों के माध्यम से प्रोग्राम प्रसारित किए जाएंगे। गूंज का मुख्य उद्देश्य समाज व्यक्ति को जीवनशैली, आगे बढ़ने की प्रेरणा व एकजुटता का भाव प्रदान करना है। एक संस्था के रूप में की गूंज का प्रयास है समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचना और उन्हें अपना एक हिस्सा बना लेना।

गूंज 90.8 एफ. एम . आपकी अपनी आवाज़ आमजन के लिए शुरू की गई एक पहल है जिसे आप सभी ने सफल बनाया है। हमारा पहला कर्तव्य है कि गूंज किस तरह से आमजन की कसौटी पर खरा उतरे इसका भी हम ख्याल रखते हैं। जनता से जुड़ी समस्याओं को अधिकारियों तक पहुंचाना हमारा मुख्य उद्देश्य है। हम किस तरह से समाज के विकास में योगदान दे सकें। गूंज मीडिया ग्रुप की यही पहली प्राथमिकता होगी कि ग्वालियर शहर से जुड़ी हर खबर को हम सबसे पहले पाठकों तक पहुंचाएं।

स्वच्छता सर्वेक्षण में ग्वालियर प्रथम आए इसके लिए प्रयास करेंगे: निगमायुक्त

● गूंज न्यूज नेटवर्क

नगर निगम के आयुक्त हर्ष सिंह ने कहा है कि उनकी प्राथमिकताएं सबसे पहले स्वच्छता सर्वेक्षण में ग्वालियर को पहले स्थान पर लाना है। उन्होंने कहा कि उनका प्रयास यह भी रहेगा कि सभी विकास कार्यों की मॉनीटरिंग हो उनकी गुणवत्ता बेहतर रहे । वहीं उन्होंने कहा कि विकास कार्य समय पर पूरे हों इसका भी प्रयास रहेगा। वहीं अतिक्रमण मुक्त शहर बनाने का भी वह प्रयास करेंगे। नगर निगम आयुक्त अपना पदभार ग्रहण करने के उपरांत पत्रकारों से चर्चा कर रहे थे। उन्होने बताया कि निगम में स्वच्छता सर्वेक्षण का कार्य अगले माह से शुरू होगा। इसके लिए जो कार्य करना था वह पूरे कर लिये गये हैं वहीं स्वच्छता सर्वेक्षण में मीडिया से लेकर जनप्रतिनिधियों से भी अपेक्षित सहयोग लेना होगा उसके बाद ही ग्वालियर को अव्वल लाने में सफलता मिलेगी। महानगर की यातायात व्यवस्था को लेकर पूछे एक प्रश्न के उत्तर में आयुक्त हर्ष सिंह ने बताया इसके लिए कमिश्नर तथा पुलिस अधीक्षक के साथ मिलकर बैठक में एक योजना बनाने की बात हुई है। उन्होंने बताया कि जहां से वाहन घूम नहीं पाते ऐसे स्थान चिन्हित कर उनके अतिक्रमणों को तत्काल हटवाया जायेगा। निगम आयुक्त हर्ष सिंह ने बताया कि महानगर में व्याप्त हवा प्रदूषण को लेकर सभी चिंतित है। इसके लिए कमिश्नर के साथ एक बैठक कर हवा प्रदूषण को दूर करने के प्रयास किये जायेंगे इसके लिए निगम के संसाधनों का भी भरपूर उपयोग किया जायेगा। उन्होंने बताया कि सोलर तथा वाटर कन्जरवेशन के लिए भी जोर दिया जायेगा। महानगर में एलईडी लाइटें खराब होने के बारे में पूछे प्रश्न के उत्तर में हर्ष सिंह ने कहा कि नगर में 63 हजार लाइटें लगी हैं। वहीं इनमें से लगभग तीन हजार खराब हो रहीं हैं और एक हजार ठीक की जा रहीं है। अब इसके लिए नया टेंडर हो गया है जल्द ही लाइटें ठीक करने का काम शुरू हो जाएगा। गारबेज शुल्क को लेकर पूछे प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि यह मामला मेरे संज्ञान में आया है हम इसका परीक्षण कर रहे हैं। ई गवर्नेंस को लेकर उन्होंने कहा कि कुछ विदुंओं को और ई गवर्नेंस में जोडा जायेगा तथा उसे अपडेट कराया जायेगा। महापौर द्वारा पेयजल को छूट प्रदान करने के बारे में पूछे जाने पर आयुक्त हर्ष सिंह ने कहा कि वह इसके लिए बैठक लेकर जल्द ही कोई गाइड लाइन जारी करेंगे। पत्रकार वार्ता में अपर आयुक्त अमर सत्य गुप्ता पीआरओ मधु शोलापुरकर मौजूद थे।

शिकायत मिलने पर तत्काल मौके पर पहुंचे पुलिसः पुलिस अधीक्षक

● गूंज न्यूज नेटवर्क

ग्वालियर के पुलिस अधीक्षक राजेश सिंह चंदेल 2010 बैच के भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी हैं। पुलिस अधीक्षक ग्वालियर द्वारा समस्त थाना प्रभारियों से उनके थाना क्षेत्र के संबंध में आवश्यक जानकारी प्राप्त की और थानावार लंबित अपराधों, लंबित चालान, लंबित मर्ग, सीसीटीएनएस, महिला संबंधी अपराध एवं सीएम हेल्पलाइन पर लंबित शिकायतों व क्षेत्र की कानून व यातायात व्यवस्था के संबंध में जानकारी प्राप्त कर उन्हें आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि यातायात पुलिस के साथ ही थाना प्रभारी की भी अपने क्षेत्र में यातायात व्यवस्था बनाए रखने की जिम्मेदारी है। इसलिए प्रत्येक थाना प्रभारी अपने-अपने क्षेत्र में यातायात व्यवस्था सुचारू बनाए रखें और रोड़ पर अतिक्रमण करने वालों को समझाइस दें। थाना प्रभारी अपने-अपने क्षेत्र में प्रभावी चैकिंग अभियान चलाएं, इसके साथ ही भीड़भाड़ वाले इलाकों तथा क्षेत्रों में पुलिस बल को लगाया जाए जो आसमाजिक तत्वों पर निगाह रखें। शिकायत मिलने पर तत्काल मौके पर पुलिस पहुंचे और कार्यवाही करें। पुलिस अधीक्षक ने थानावार लंबित अपराधों, लंबित चालान, लंबित मर्ग, सीसीटीएनएस, महिला संबंधी अपराध एवं सीएम हेल्पलाइन पर लंबित शिकायतों व क्षेत्र की कानून व यातायात व्यवस्था के संबंध में जानकारी प्राप्त कर उन्हें आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। बैठक में उन्होंने सभी राजपत्रित अधिकारियों से परिचय प्राप्त करने के उपरान्त उनसे कहा कि पुलिस की समाज में महती भूमिका है, इसलिए हमें पुलिस विभाग की गरिमा बनाए रखने के लिए कानून की हद में रहकर नियमानुसार कार्यवाही करनी चाहिए। पुलिस विभाग के किसी भी अधिकारी व कर्मचारी की कोई जाति नहीं होती है वह सिर्फ पुलिसवाला होता है और हमे इसी भावना के साथ काम करना चाहिए। थाना प्रभारी अपने-अपने क्षेत्र में प्रभावी चैकिंग अभियान चलाएं, इसके साथ ही भीड़भाड़ वाले इलाकों तथा क्षेत्रों में पुलिस बल को लगाया जाए जो आसमाजिक तत्वों पर निगाह रखें। एसपी ग्वालियर ने लंबित समंस वारंट की शत प्रतिशत तामील कराने के निर्देश समस्त थाना प्रभारियों को दिए साथ ही उन्हे शराब पीकर वाहन चलाने वाले वाहन चालकों तथा बिना नम्बर के दो पहिया व चार पहिया वाहनों के विरुद्ध अभियान चलाकर प्रभावी कार्यवाही करने के निर्देश भी दिये। बैठक में उन्होने कहा कि थाने अथवा कार्यालय में अपनी फरियाद लेकर आने वाले पीड़ित की बात को सहानुभूति पूर्वक एवं गंभीरता से सुना जाकर विधि सम्मत कार्यवाही की जाए।

परिवहन विभाग ने बनाया 4012 करोड़ के राजस्व संग्रहण का रिकॉर्ड

परिवहन मंत्री गोविंद राजपूत के नवाचार और सतत निर्देशन में निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है परिवहन विभाग

प्रदेश के परिवहन विभाग ने एक बड़ी उपलब्धि हांसिल करते हुए वित्तीय वर्ष 2022-23 के लिए राजस्व संग्रहण का नया रिकॉर्ड बनाया है। विभाग को मिले 3800 करोड़ के लक्ष्य से अधिक 4012 करोड़ का सर्वकालीन राजस्व संग्रहण प्राप्त करने में सफलता अर्जित की गई है। परिवहन मंत्री श्री राजपूत के नेतृत्व में विभाग निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। राजस्व एवं परिवहन मंत्री गोविंद सिंह राजपूत द्वारा परिवहन विभाग की सतत समीक्षाओं और मॉनिटरिंग के माध्यम से राजस्व प्राप्ति के लिये किए जाने वाले प्रयासों एवं नवाचारों को उचित समय पर दिए जाने वाले दिशा निर्देशों के कारण ही विभाग से इस तरह की सफलता का सर्वकालीन रिकॉर्ड बनाया है। प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के मार्गदर्शन, राजस्व एवं परिवहन मंत्री गोविंद सिंह राजपूत के सतत निर्देशन तथा प्रमुख सचिव परिवहन सुखवीर सिंह एवं परिवहन आयुक्त सजंय कुमार झा, अपर परिवहन आयुक्त (प्रवर्तन) अरविंद कुमार सक्सेना की कार्यकुशलता से विभाग ने यह बड़ी उपलब्धि अर्जित की है। इस सफलता पर परिवहन मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने विभागीय अफसरों एवं कर्मचारियों को बधाई देते हुए आने वाले वित्तीय वर्ष में भी इसी कार्यकुशलता और लगन से कार्य करने के निर्देश दिए हैं। परिवहन मंत्री श्री राजपूत के नेतृत्व में विभाग निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। राजस्व एवं परिवहन मंत्री गोविंद सिंह राजपूत द्वारा परिवहन विभाग की सतत समीक्षाओं और मॉनिटरिंग के माध्यम से राजस्व प्राप्ति के लिये किए जाने वाले प्रयासों एवं नवाचारों को उचित समय पर दिए जाने वाले दिशा निर्देशों के कारण ही विभाग से इस तरह की सफलता का सर्वकालीन रिकॉर्ड बनाया है। परिवहन मंत्री श्री राजपूत द्वारा संभागीय एवं जिला परिवहन अधिकारियों और प्रवर्तन अमले को राजस्व संग्रहण हेतु सामूहिक टीम भावना से कार्य करके प्रभावी परिणाम देने हेतु प्रेरित किया गया। इसके सकारात्मक परिणाम विभागीय अमले द्वारा राजस्व संग्रहण के रूप में सामने आया है। परिवहन मंत्री श्री राजपूत द्वारा वन टाइम सेटलमेंट स्कीम के उचित प्रचार द्वारा लंबे समय से पंजीकृत किंतु बकाया कर राशि और पेनल्टी नहीं जमा कर रहे वाहनों को प्रेरित कर बकाया जमा कराने के लिए दी जा रही छूट को वाहन मालिकों तक पहुंचा कर उन्हें प्रेरित किया गया।

परिवहन मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने गूंज पत्रिका का अवलोकन किया। इस अवसर पर उन्होंने पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल एवं पूरी टीम को बधाई दी। गूंज के सलाहकार आशीष प्रताप सिंह और सहायक संपादक अठेन्द्र सिंह कुशवाह ने उन्हें पत्रिका भेंट की।

इस हेतु 5, 10, 15 और 20 वर्ष तक के वाहन निर्माण आयु पूर्ण होने पर मोटर यान कर में क्रमशः 10, 20, 30 और 90 फीसदी की छूट की सुविधा देकर बकाया मोटरयान कर देने प्रेरित किया गया। इसके अलावा बकाया मोटरयान कर पर पेनाल्टी को किसी भी आयु सँवर्ग के वाहन के लिए ओटीएस करने पर पूर्ण रूप से माफ़ करने की अधिसूचना 30 सितंबर 22 को जारी कर 31 मार्च 23 तक इस स्कीम का लाभ लेने के लिए प्रेरित करने से अच्छे परिणाम आए ।

वाहन-4 पोर्टल पर फोकस से मिले बेहतर परिणाम

परिवहन मंत्री श्री राजपू के मार्गदर्शन में मध्यप्रदेश में 1 अगस्त 2022 से वाहन -4 पोर्टल की शुरुआत की गई । इस पोर्टल में पहले गैर परिवहन वाहनों का पंजीयन प्रारम्भ हुआ। बाद में 23 जनवरी 2023 से कमर्शियल वाहनों का पंजीयन इस पोर्टल पर प्रारम्भ कर दिया गया। परिवहन मंत्री श्री राजपूत द्वारा इस नवीन तकनीक को अपनाने हेतु सभी परिवहन अधिकारियों और ऑटोमोबाइल डीलर्स के लिए ट्रेनिंग प्रोग्राम, एनआईसी द्वारा चलवाने निर्देशित किया गया जिससे इस सिस्टम को समझा जा सके । परिवहन मंत्री द्वारा सिस्टम के उपयोग करने पर आने वाली कठिनाइयों के समाधान हेतु परिवहन विभाग और एनआईसी अधिकारियों को प्रतिदिन समीक्षा करने के निर्देश दिये गए थे। परिवहन मंत्री श्री राजपूत के इस पहल के सकारात्मक परिणाम सामने आये। वाहनों की नवीनतम मॉडल की कीमत समय से पोर्टल पर प्रदेश के परिवहन कार्यालयों को दिखने से लाइफ टाइम टैक्स का सही आँकलन हुआ है। इसके अलावा सारथी पोर्टल द्वारा लर्निंग लाइसेंस बनाने की फेसलेस प्रक्रिया को सरल करने से ड्राइविंग लाइसेंस के रूप में , लर्निंग लाइसेंस को परिवर्तित करने हेतु प्रदेश के नागरिक प्रेरित हुए, इससे विभाग को राजस्व की प्राप्ति हुई।

मोटरयान कर जमा नहीं करने वाले वाहनों पर सख्ती

परिवहन मंत्री श्री राजपूत द्वारा विभागीय अमले को ऐसे वाहनों को भी चिन्हित करने निर्देश दिए गये जो लंबे समय से मोटरयान कर जमा नहीं कर रहे थे । ऐसे मोटरयानों को नोटिस देकर कर जमा करने का विकल्प दिया गया। विकल्प का उपयोग नहीं करने पर चेकपोस्ट और संभागीय सुरक्षा स्क्वाड द्वारा ऐसे वाहनों को जप्त कर बकाया कर जमा करने की आवश्यक कार्रवाई कराई गई। मंत्री श्री राजपूत के निर्देश पर समय-समय पर ओवरलोडिंग, बिना परमिट के वाहनो के संचालन और परमिट की शर्तों का उल्लंघन करने वाले वाहनों के विरुद्ध अभियान चलाने के निर्देश के बाद परिवहन विभाग द्वारा की गई कार्रवाई से वाहन मालिकों और चालकों में उचित दस्तावेज रखकर वाहन चलाने की आदत विकसित हुई जिससे भी राजस्व प्राप्त हुआ है।

प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के मार्गदर्शन, राजस्व एवं परिवहन मंत्री गोविंद सिंह राजपूत के सतत निर्देशन तथा प्रमुख सचिव परिवहन सुखवीर सिंह एवं परिवहन आयुक्त सजंय कुमार झा, अपर परिवहन आयुक्त (प्रवर्तन) अरविंद कुमार सक्सेना की कार्यकुशलता से विभाग ने यह बड़ी उपलब्धि अर्जित की है। इस सफलता पर परिवहन मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने विभागीय अफसरों एवं कर्मचारियों को बधाई देते हुए आने वाले वित्तीय वर्ष में भी इसी कार्यकुशलता और लगन से कार्य करने के निर्देश दिए हैं।

3800 करोड़ की जगह मिला 4012 करोड़ का राजस्व

परिवहन मंत्री गोविंद सिंह राजपूत के कुशल मार्गदर्शन में विभागीय अमले द्वारा किये गए अथक प्रयासों के कारण ही वित्तीय वर्ष 2022-23 का 3800 करोड़ का निर्धारित राजस्व संग्रहण का लक्ष्य 31 मार्च से 15 दिन पहले ही प्राप्त कर लिया था। उसके बाद बचे हुए दिनों में 31 मार्च 23 तक परिवहन विभाग ने 3800 करोड़ के विरुद्ध 4012 करोड़ का राजस्व प्राप्त कर यह सर्वकालीन रिकॉर्ड कायम किया है।

विफलता को सफलता में बदलने करें निरंतर प्रयासः आईएएस तरुण पिथोड़े

गूंज विशेष शख्सियत में इस बार हम अपने पाठकों को रूबरू करा रहे हैं आईएएस अधिकारी तरूण पिथोड़े जी से जो कि 2009 बैच के आईएएस अधिकारी हैं। श्री पिथोड़े भोपाल कलेक्टर भी रह चुके हैं। हाल ही में उन्होंने एक किताब लिखी है ऑपरेशन गंगा जिसे लेकर वह आजकल काफी सुर्खियों में हैं। पिछले दिनों ग्वालियर आए श्री पिथोड़े गूंज को दिए साक्षात्कार में अपनी नई किताब एवं जिंदगी के बारे में बातचीत की पेश हैं बातचीत के मुख्य अंश।

जैसी आपकी ये किताब आयी आपने इससे पहले भी बहुत सारी किताबें लिखी हैं लेकिन बात करें ऑपरेशन गंगा की यूक्रेन युद्ध के दौरन एक ऐसा समय जो भारतीय छात्रों की बात करें या वहां पर फंसे हुए नागरिक थे जो भी हालत उन्होन देखा आपको इस किताब को लिखने का विचार कहां से आया है?

मैंने इस के पहले भी किताब लिखी है कोविद पर है द बैटल ऑफ अगेंस्ट द ब्यूरो ऑफ क्राइम उस किताब को लिखने के बाद मुझे सुझाव मिला कि यह भी एक विषय है जिस पर लिखा जा सकता है और मुझे लगा कि हां जिस प्रकार की किताब मैंने लिखी है या जिस प्रकार के मुख्य चैलेंज देखें हैं। उसके अलावा भी यह चैलेंज के साथ हम लोग प्रशासनिक सेवा में डिजास्टर मैनेजमेंट को लेकर काफी गंभीर रहते हैं। और काफी सारे डिजास्टर इन दिनों होते हैं यह भी मुझे लगा कि एक प्रकार का नहीं डिजास्टर कहूंगा। उसी प्रकार का कुछ था आपदा सी थी उसे कैसे मैनेज किया गया सीखने के लिए मुझे किताब लिखना उचित लगा मैंने लिखना शुरू किया।

आपने ऑपरेशन गंगा किताब लिखी और कुछ समय पहले भारत में ऑपरेशन दोस्त चलाया तो इन सब के मध्यम से भारत अपनी खास पहचान बना रहा है आने वाले समय में यह बातें भारत के लिए कितनी प्रभावी सबित होने वाली है?

हम पूरी तरह से आगे बढ़ रहे हैं। भारत की ताकत बढ़ रही है। उसका कारण भारत में जो हमारे युवा है उनको एक प्रगति मिल रही है। वह जो कर सकते हैं वह करने की लिए उनको संभावना मिल रही है, इसीलिये ये सारी चीजें हैं जिनके कारण पूरा भारतवर्ष एक होकर एक दिशा में चल रहा है और जिस दिशा में वह जा रहे हैं उसे वह सफ़लता मिल रही है और

यह सफ़ाई हमारे जो भारतीय दुसरे देश में रह कर उन्हें सफ़लता मिल रही है और उसी सफ़लता के करण ही पूरी दुनिया यह महसूस कर रही है। भारतीय सक्षम होते हैं भारतीय कहीं और अध्ययन कर सकते हैं शांति से रहते हैं। और एक सौम्य व्यवहार रखते हैं और भारतीय लोगों के प्रति और भारत के प्रति लोगों का जो विश्व के लोग हैं। दूसरे देश में उनका रवैया बहुत साकारात्मक है रूप से बदल रहा है जो कि एक अच्छी बात है और मुझे लगता है भविष्य में यह और सकारात्मक होगी।

अभी हमने बात की इस किताब की अगर सर बात करें मध्य प्रदेश लोकसभा (MPPSC) आयोग या संघ लोक सभा आयोग (UPSC) की के एक महीने बाद प्रारंभिक परीक्षा होने है तो ऐसे में आप क्या कहना चाहेंगे उन विद्यार्थियों को जो इस बार यह परीक्षा देने वाले हैं?

– मैं सिर्फ यहीं कहना चहुंगा कि इस दौर से मै भी गुजरा हूं और अभी बच्चे जिस दौर से गुजर रहे होंगे। वह में समझ सकता हूँ इस समय सिर्फ अवसर है कि वह प्रयास बहुत करते रहे। पुराने वर्षों की जो पेपर हैं उनको हल करते रहे जो क्लास में उनके पेपर, दिए गए होंगे उनको हल करते रह अभ्यास मूल मंत्र होता है। हम जितना अभ्यास करेंगे उतना ही हम जीत के करीब पहुंचेंगे और इसका कोई दुनिया में विकल्प नहीं इसमें फिर से कहना चाहूंगा कि यह समय है, सिर्फ नकरात्मक सोच को भूलने का और ये सोचने का समय बिलकुल भी नहीं है कि क्या होगा क्या नही जो होगा वह होगा लेकिन अभी समय है, सिर्फ और सिर्फ मेहनत करने का।

कही ना कही स्टूडेंट लाइफ में बहुत जरूरी होता जाता है टाइम मैनेजमेंट , काम समय है ऐसे में टाइम मैनेज कैसे करे?

– ये भी बहुत कमाल की बात है की हर इंसान को इस दुनिया में 24से 20 घंटे ही मिले हुए हैं। 1 दिन में हर व्यक्ति के सामने पर्याप्त अवसर है। जो उस अवसर का प्रयोग कर सकता है वह आगे बढ़ेगा और जो उस अवसर का प्रयोग नहीं कर पा रहा है वह पीछे रह जाएगा । अब जरूरत है कि हम उसको कैसे और एफिशिएंट ली यूटिलाइज कर सकते हैं।

प्रिपरेशन के दौरान डिप्रेशन होना स्वाभाविक है क्योंकि कोई स्टूडेंट लंबी जर्नी तय करता है तो कहीं ना कहीं बहुत सारी ख्याल आते हैं कि होगा , नहीं होगा नहीं होगा और भी बहुत सारे ख्याल ऐसे में डिप्रेशन को खुद से कैसे दूर रखा जाए?

देखें डिप्रेशन तब आता है जब हमें लगता है कि अब आगे हमारे लिए कुछ बचा नहीं है या सब कुछ खत्म हो गया है। मैं आपको यह बताना चाहता हूं ऐसा कभी नहीं होता कि सब कुछ खत्म हो जाए हम जब मेहनत करते हैं और असफल हो जाते हैं तब हम बहुत सारे बातें सीख चुके होते हैं वह हमें भले ही सफलता के लिस्ट में नहीं पहुंचा पाया लेकिन हमारे अंदर ऐसी क्षमता पैदा कर देता है जिससे कि हम जीवन में सफल हो सकते हैं। और हमारी परीक्षा किसी एक्शन किसी एक व्यक्ति से नहीं निर्धारित होती है। हमारी सफलता पूरे उम्र में पूरे जिंदगी में जो काम किए होते हैं उसे निर्धारित होती है। इसलिए किसी भी व्यक्ति को यह नहीं सोचना चाहिए कि उसने प्रयास किया लेकिन उसके पास कुछ बचा नहीं। हमेशा हमारे पास एक नया विकल्प होता है एक नया रास्ता होता है। हमेशा हमारे पास एक नई आशा होती है। यदि अगर हम आज असफल हो गए हैं तो हमें प्रयास करके नए रास्ते पर चलना चाहिए। हम एक ना एक दिन जरूर सफल होंगे।

आप जाते-जाते ग्वालियर को क्या संदेश देना चाहते हैं?

–मैं ग्वालियर वासियों से बस यही कहूंगा कि मैं बहुत आभार प्रकट करता हूं ग्वालियर वासियों का मैं यहां पर आया और आपने मुझे सम्मान दिया आपने मुझे मौका दिया मेरी बात सुनने का मैं सभी ग्वालियर वासियों का बहुत हृदय से धन्यवाद करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि प्रत्येक ग्वालियर वासी सुखी रहे समृद्धि रहे जो भी अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है उन्हें उसमें सफलता प्राप्त हो ईश्वर हमेशा आपका साथ दे।

जन-जन की बात बना मोदी जी का 'मन की बात' कार्यक्रम

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के मन की बात कायक्रम 'गागर में सागर' की कहावत को चरितार्थ करते हुए देश की हर भाषा में देश के करोड़ों लोगों के लिए प्रेरणास्रोत साबित हो रहा है मोदी जी ने इस कार्यक्रम के माध्यम से लद्दाख और लक्षद्वीप से लेकर पूर्वोत्तर और पंजाब तक, किसान से विज्ञान तक, सेल्फ हेल्प ग्रुप से लेकर स्टार्टअप तक और सहकारिता से स्पेस तक व्यक्तियों और संस्थाओं के साथ-साथ हर क्षेत्र को 99 एपिसोड्स में छूने का बेहद सफल प्रयास किया है मोदी जी ने कई जनजागरण और सामाजिक बदलाव के कामों को इस कार्यक्रम के माध्यम से सफल बनाया है, जैसे, स्वच्छ भारत, फिट इंडिया, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, जल संरक्षण और जल संचय, वोकल फॉर लोकल, आत्मनिर्भर भारत, सुगम्य भारत और सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देना मन की बात के ज़रिए विकलांग शब्द के बदले दिव्यांग शब्द देकर करोड़ों लोगों को सम्मानित करने और उन्हें समाज की प्रगति के साथ जोड़ने का काम किया।

पीएम मोदी ने 91 एफ.एम. स्टेशन शुरू किए

18 राज्यों में 2 करोड़ लोगों तक पहुंच बढ़ी, कहा- मैं लिसनर और होस्ट दोनों हूं

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश में रेडियो कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए 100 वाट कैपेसिटी के 91 एम. एम. रेडियो स्टेशनों का उद्घाटन किया। 18 राज्यों और दो केंद्र शासित प्रदेशों के 84 जिलों में इन स्वरू रेडियो स्टेशनों का उद्घाटन वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए किया गया। उद्घाटन के दौरान पीएम मोदी ने कहा कि जब बात रेडियो और स्वरू की होती है, तो इससे मेरा रिश्ता एक श्रोता का भी है, और एक होस्ट का भी है।

न्योमा में दुनिया का सबसे ऊंचा ट्रांसमीटर लगा

लेह में मौजूद केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने बताया कि लद्दाख के न्योमा गांव में दुनिया का सबसे ऊंचाई पर ट्रांसमीटर लगाने का रिकॉर्ड बना है। न्योमा 4100 की ऊंचाई पर है, यहां से कई किलोमीटर तक रेडियो का लाभ मिलने वाला है। न्योमा के अलावा लद्दाख के खल्त्से, दिस्किट में भी रेडियो स्टेशन शुरू हुए हैं।

पीएम मोदी ने कहा कि डिजिटल इंडिया ने रेडियो को नए लिसनर भी दिए हैं, और नई सोच भी दी है। देश में हुए टेक रिवोल्यूशन ने रेडियो और स्वरू को नया अवतार दिया है। इंटरनेट के कारण रेडियो पिछड़ा नहीं बल्कि ऑनलाइन स्वरू और पॉडकास्ट के जरिए इनोवेटिव तरीकों से सामने आया है। ऑल इंडिया रेडियो की एफ. एम. सर्विस का विस्तार ऑल इंडिया एफ. एम. बनने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। ऑल इंडिया रेडियो के 91 एफ. एम. ट्रांसमिशन की ये शुरुआत देश के 85 जिलों के 2 करोड़ लोगों के लिए तोहफे की तरह है। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में स्वराज द्वीप और कार निकोबार में ट्रांसमीटरों के उद्घाटन में मौजूद लोग। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में स्वराज द्वीप और कार निकोबार में ट्रांसमीटरों के उद्घाटन में मौजूद लोग। अभी कुछ दिन बाद ही मैं रेडियो पर मन की बात का 100वां एपिसोड करने जा रहा हूं। मन की बात का ये

GOONJ **MAN KI BAT@100**

मन की बात कार्यक्रम लोकतंत्र की नींव पर खड़ा है और लोकतंत्र का एक मुख्य पहलू जनता और नेता के बीच संवाद है, ये संवाद जितना मजबूत और सार्थक होता है लोकतंत्र की नींव उतनी ही मजबूत और सफल होती है मोदी जी ने इस कार्यक्रम में देश की सज्जन शक्ति, सात्विक शक्ति और सृजनात्मक शक्ति को प्लेटफॉर्म देने का काम किया है प्रधानमंत्री मोदी ने पद्म पुरस्कारों का लोकतंत्रीकरण किया, पहले पद्म पुरस्कार सिफारिशों और लोगों के रसूख को देखकर दिया जाता था, आज पद्म पुरस्कार छोटे से छोटे व्यक्ति, जिन्होंने बड़े से बड़ा काम किया है, को पारदर्शी पद्धति से दिया जाता है प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी एक परफेक्ट कम्युनिकेटर हैं, उनके जैसी कम्युनिकेशन स्किल वाला नेता पूरी दुनिया में विरले ही दिखता है। खादी एक वस्त्र नहीं विचार है, गांधी जी के बाद अगर किसी ने खादी को स्वीकृत और प्रचारित किया है तो वो मोदी जी ने किया है भारत के कई उत्सवों की बातों को 'मन की बात' में शामिल करके मोदी जी ने एक भारत, श्रेष्ठ भारत की कल्पना को साकार करने का प्रयास किया मोदी जी ने कई भारतीय खेलों को पुनर्जीवित करने का काम मन की बात के माध्यम से किया है ये एक ऐसा आश्चर्यजनक कार्यक्रम है जिसमें 9 सालों से देश के प्रधानमंत्री जनता से संवाद कर रहे हैं लेकिन कभी भी एक भी राजनीतिक बात नहीं की है। भारत के लोकतंत्र में मोदी जी के 2 बड़े योगदान हैं- मोदी जी हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था से जातिवाद, परिवारवाद और तुष्टिकरण से मुक्त करके इसे पॉलिटिक्स ऑफ परफॉर्मेंस की दिशा में ले गए हैं।

अनुभव, देशवासियों से इस तरह का भावनात्मक जुड़ाव केवल रेडियो से ही संभव था। मैं इसके जरिए देशवासियों के सामर्थ्य और कलेक्टिव ड्यूटी से जुड़ा रहा। एफ एम ट्रांसमिशन से बन रही इस कनेक्टिविटी का एक और आयाम है। देश की सभी भाषाओं और विशेष तौर पर 27 बोलियों वाले इलाकों में इन स्वरू ट्रांसमिशन्स से प्रसारण होगा। इसका मतलब ये कनेक्टिविटी सिर्फ संवाद के साधन को ही आपस में नहीं जोड़ती बल्कि लोगों को भी जोड़ती है।

रेडियो कनेक्टिविटी 35,000 वर्ग किमी बढ़ेगी

ये रेडियो स्टेशन राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के उन इलाकों में शुरू किए गए हैं, जहां से इनके लिए मांग की गई थी। वहीं, बॉर्डर से सटे कुछ इलाकों में भी कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए ये ट्रांसमीटर्स लगाए गए हैं। इन एफ. एम. ट्रांसमीटर्स के जरिए दो करोड़ लोगों तक पहुंच होगी। इनके शुरू होने से देश में स्वरूकनेक्टिविटी का दायरा 35,000 वर्ग किमी बढ़ गया है। 30 अप्रैल को पीएम मोदी के रेडियो प्रोग्राम मन की बात का 100वां एपिसोड है। इससे दो दिन पहले देश में रेडियो कनेक्टिविटी को बढ़ाने के लिए यह बड़ा कदम उठाया गया है।

इन राज्यों में शुरू हुए रेडियो स्टेशन

जानकारी के मुताबिक 91 एम. एम. रेडियो स्टेशन बिहार, झारखंड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, असम, मेघालय, नगालैंड, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, आंध्र प्रदेश, केरल, तेलंगाना, छत्तीसगढ़, गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, लद्दाख के अलावा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में शुरू हो गए हैं। इन राज्यों में कुल 84 जिलों को कवर किया गया है।

क्या होता है फीक्वेंसी मॉड्यूलेशन यानी एफ एम ट्रांसमीटर

एफएम ट्रांसमीटर एक पोर्टेबल ऑडियो डिवाइस से एक स्टैंडर्ड एफएम रेडियो पर एक सिगनल टेलीकास्ट करता है। एफएम ट्रांसमीटरों का इस्तेमाल आमतौर पर कार रेडियो पर पोर्टेबल ऑडियो डिवाइस चलाने के लिए किया जाता है जिसमें ऑक्स इनपुट जैक या ब्लूटूथ ऑडियो कनेक्टिविटी नहीं होती है। उनका उपयोग एक घर के आसपास एक कंप्यूटर या टेलीविजन जैसे स्टेबल ऑडियो सोर्स को टेलीकास्ट करने के लिए भी किया जाता है।

केन्द्रीय गृह मंत्री शाह ने 'राष्ट्रीय कॉन्क्लेवः मन की बात- 100' स्मारक डाक टिकट और सिक्का जारी किया

पीएम की 'मन की बात' आकाशवाणी को युवा पीढ़ी तक ले गई

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने दिल्ली में मन की बात के 100 एपिसोड पर राष्ट्रीय सम्मेलन में एक स्मारक सिक्का जारी किया। दरअसल, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के रेडियो कार्यक्रम के 100वां एपिसोड पूरे हुए हैं। पीएम मोदी के मन की बात-100 पर राष्ट्रीय कॉन्क्लेव के समापन सत्र पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि लोकतंत्र के अंदर जनसंवाद के अनेक माध्यम होते हैं और मोदी जी ने आकाशवाणी को जनसंवाद को चुना। इससे आकाशवाणी युवा पीढ़ी तक

पहुंचा। मैं बचपन से आकाशवाणी का बड़ा प्रशंसक रहा हूं। मैंने कई महत्वपूर्ण बातें आकाशवाणी पर सुनी हैं। बांग्लादेश पर भारत की विजय को मैंने आकाशवाणी पर सुना है। आपातकाल के बाद, एक तानाशाह के पराजय को सुबह 5 बजे आकाशवाणी के बुलेटिन पर सुना कि इंदिरा गांधी पराजित हो गई हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हमारे लोकतंत्र में 2 बड़े योगदान किए हैं। एक, उन्होंने लोकतांत्रिक व्यवस्था को जातिवाद, परिवारवाद और तुष्टिकरण से मुक्त किया है। दूसरा, उन्होंने पद्म पुरस्कारों का लोकतंत्रीकरण किया है। पहले पद्म पुरस्कार सिफारिश से मिलते थे। आज पद्म पुरस्कार छोटे से छोटे व्यक्ति लेकिन बड़ा योगदान करने वाले को दिया जाता हैअमित शाह ने कहा कि 'मन की बात' कार्यक्रम की खूबी यह है कि नरेंद्र मोदी जैसे

राजनीतिक व्यक्ति ने इसके 99 कड़ियों में एक भी राजनीतिक मुद्दे का जिक्र नहीं किया। लोकतंत्र में प्रधानमंत्री मोदी का बड़ा योगदान जाति की राजनीति, भाई-भतीजावाद, तुष्टिकरण की समाप्ति और पद्म पुरस्कारों का लोकतंत्रीकरण करना है। 'मन की बात' कार्यक्रम की आधे घंटे की कड़ी करोड़ों लोगों को राष्ट्र के प्रति योगदान देने के लिए प्रेरित करती है। प्रधानमंत्री मोदी हर चुनौती को अवसर में बदलते हैं। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि विकलांग शब्द कितना अपमानजनक था और हमें मालूम नहीं था कि हम सालों से इसका इस्तेमाल कर रहे थे। मोदी जी ने मन की बात के एक एपिसोड से विकलांग कोदिव्यांग बनाने का काम किया और करोड़ों लोगों को सम्मानित किया।

इस अवसर पर केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री अनुराग सिंह ठाकुर, केन्द्रीय रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव, वित्त राज्यमंत्री श्री पंकज चौधरी और सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के सचिव श्री अपूर्व चंद्र सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

योजना में पंजीयन के प्रति दिख रहा है अपार उत्साह, अब तक एक करोड़ 14 लाख से ज्यादा बहनों ने कराया पंजीयन

शिवराज के दिल से निकली लाड़ली बहना योजना बहनों के दिल में बसी

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के दिल से निकली लाड़ली बहना योजना प्रदेश की सभी बहनों के दिल में समा गई है। बहनों में योजना के प्रति अपार उत्साह देखने को मिल रहा है। आज दिनांक तक योजना में एक करोड़ 14 लाख 39 हजार 165 महिलाएँ योजना में अपना पंजीयन करा चुकी हैं। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने बेटियों को वरदान बनाने वाली लाड़ली लक्ष्मी योजना के बाद अपनी बहनों के आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण के लिये 5 मार्च 2023 को मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना लाँच की। यह योजना प्रदेश की बहनों को इस तरह भायी कि लगभग सवा माह की अल्प अवधि में ही पंजीयन की संख्या एक करोड़ के पार पहुँच गई। बहनों के पंजीयन की कार्यवाही 30 अप्रैल तक जारी रहेगी। मुख्यमंत्री स्वयं योजना की जानकारी देने के लिये प्रदेश के विभिन्न जिलों में महिला महासम्मेलन कर बहनों से रू-ब-रू होकर संवाद कर रहे हैं। मुख्यमंत्री श्री चौहान की सजगता और संवेदनशील सोच से उपजी लाड़ली बहना योजना में अब तक भोपाल संभाग के भोपाल जिले में 2 लाख 71 हजार 38, रायसेन जिले में 2 लाख 25 हजार 139, राजगढ़ जिले में 2 लाख 58 हजार 142, सीहोर जिले में 2 लाख 20 हजार 606 और विदिशा जिले में 2 लाख 52 हजार 989 आवेदन हो चुके हैं। चम्बल संभाग के भिण्ड जिले में 2 लाख 51 हजार 647, मुरैना जिले में 3 लाख 4 हजार 35 और श्योपुर जिले में 99 हजार 205 आवेदन हुए हैं। ग्वालियर संभाग के ग्वालियर जिले में 2 लाख 82 हजार 940, अशोकनगर में एक लाख 38 हजार 684, दतिया में एक लाख 30 हजार 933, गुना में 2 लाख 10 हजार 684 और शिवपुरी जिले में 2 लाख 59 हजार 306 आवेदन बहनें भर चुकी हैं। मुख्यमंत्री का शुरू से मानना है कि परिवार, समाज, प्रदेश और देश तभी सशक्त होगा, जब महिलाएं सशक्त और आत्म-निर्भर होंगी। उनके जीवन का ध्येय है कि प्रदेश की सभी बहनों का जीवन सरल, सुखद और आंनदमय बनाया जाये। बहनें

अपनी छोटी-मोटी जरूरतों और पैसों की आवश्यकता के लिए परेशान न हों। इसी उद्देश्य से प्रदेश में उन्होंने अभिनव मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना को शुरू किया है। योजना में ऐसे गरीब और मध्यमवर्गीय परिवार की बहनें जिनकी वार्षिक आय ढाई लाख रूपये से कम है, जिनके पास 5 एकड़ से कम भूमि है और जिन परिवारों में कोई आयकर दाता नहीं है, ऐसे परिवारों की 23 से 60 आयु वर्ग की बहनों को योजना में पात्र माना जाकर हर महीने एक-एक हजार रूपये उनके खातों में अंतरित किये जायेंगे। योजना के प्रभावी क्रियान्वयन के लिये सभी गाँव और वार्ड में शिविर लगा कर बहनों के आवेदन भरवाये जा रहे हैं। इस कार्य में सरकारी मशीनरी के साथ जन अभियान परिषद एवं अन्य समाजिक संस्थाएँ भी सहयोग कर रही है। मुख्यमंत्री श्री चौहान स्वयं इन शिविरों में पहुँच कर प्रक्रिया का अवलोकन भी कर रहे है। बहनों को ई-केवायसी कराने में परेशानी न हो इसके लिये संबंधित संस्थाओं को प्रति केवायसी 15 रूपये की राशि भी राज्य सरकार दे रही है। इन सभी व्यवस्थाओं और मुख्यमंत्री श्री चौहान की संवेदनशीलता से प्रदेश की सभी बहनें आनंदित है और उन्हें अब इंतजार है अपने जीवन में एक नई सुबह का, जिसका उदय 10 जून 2023 को

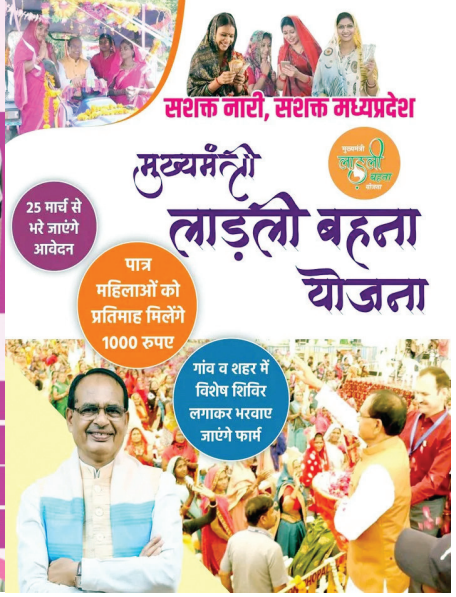

होगा। यह दिन प्रदेश की बहनों के लिये ऐतिहासिक बन जायेगा, जब उनके खातों में मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना की 1000 रूपये की प्रथम किस्त आयेगी।

इन दिनों पूरे मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना की जानकारी देने और बहनों के फार्म भरवाये जाने के लिये विभिन्न गतिविधियाँ जारी हैं। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान स्वयं जिला स्तरीय महासम्मेलनों में बहनों को योजना के प्रावधानों से अवगत करा रहे हैं। मुख्यमंत्री पहले सम्मेलन में आई बहनों का फूलों की वर्षा कर स्वागत-अभिनंदन करते है और संवाद की शुरूआत फिल्मी तराने फूलों का तारों का सबका कहना है-एक हजारों में मेरी बहना है के साथ करते है। मुख्यमंत्री का यह जुदा अंदाज प्रदेश की बहनों को खूब भा रहा है।

सम्मेलन में आई बहनें भी अपने शिवराज भईया के स्वागत में तख्तियों पर आत्मीय बेनर लगा कर अभिवादन कर रही हैं। तख्तियों पर लिखी भावनाएँ कुछ इस प्रकार की हैं - शिवराज भईया की नई सौगात-आधी आबादी रहे खुशहाल, हम बहनों को मिला सम्मान - शिवराज भईया बड़े महान, लाड़ली बहना योजना के लिये शिवराज भईया को धन्यवाद। प्रदेश की बहनों द्वारा अपने मुख्यमंत्री भईया को योजना शुरू करने के लिये लाखों की संख्या में खत लिखे जा रहे हैं। हर सम्मेलन में बहनें शिवराज भईया को रक्षा-सूत्र और राखी भी बांध रही हैं। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के दिल से निकली लाड़ली बहना योजना प्रदेश में 5 मार्च को लांच की गई है। गरीब और मध्यमवर्गीय परिवार की बहनों को सामाजिक-आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिये गहन चिंतन के बाद मुख्यमंत्री ने योजना को अमलीजामा पहनाया। एक अप्रैल से योजना में आवेदन लेने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। प्रदेश में योजना का प्रचार-प्रसार करने अनेक माध्यमों को अपनाया जा रहा है। इसी बीच मुख्यमंत्री श्री चौहान स्वयं संभागीय और जिला मुख्यालयों में लाड़ली बहना योजना को समझाने बहनों का महा सम्मेलन भी कर रहे हैं। इन सम्मेलनों में बड़ी संख्या में बहनें शामिल हो रही है।

पिछली 5 मार्च को भोपाल के जंबूरी मैदान में हुए बहनों के सम्मेलन में मुख्यमंत्री श्री चौहान ने स्टेप बाय स्टेप योजना की प्रक्रिया बहनों के साथ साझा की और एक बहन का आवेदन भी भरवाया। मुख्यमंत्री का बहनों के साथ यह संवाद निरंतर जारी है। मुख्यमंत्री श्री चौहान का शुरू से मानना है कि परिवार, समाज, प्रदेश और देश तभी सशक्त होगा, जब महिलाएँ सशक्त और आत्म-निर्भर होंगी। उनके जीवन का ध्येय है कि प्रदेश की सभी बहनों का जीवन सरल, सुखद और आंनदमय बनाया जाये। बहनें अपनी छोटी-मोटी जरूरतों और पैसों की आवश्यकता के लिए परेशान न हों। इसी उद्देश्य से प्रदेश में उन्होंने अभिनव मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना को शुरू किया है। योजना में ऐसे गरीब और मध्यमवर्गीय परिवार की बहनें जिनकी वार्षिक आय ढाई लाख रूपये से कम है, जिनके पास 5 एकड़ से कम भूमि है और जिन परिवारों में कोई आयकर दाता नहीं है, ऐसे परिवारों की 23 से 60 आयु वर्ग की बहनों को योजना में पात्र माना जाकर हर महीने एक-एक हजार रूपये उनके खातों में अंतरित किये जायेंगे।

योजना के प्रभावी क्रियान्वयन के लिये सभी गाँव और वार्ड में शिविर लगा कर बहनों के आवेदन भरवाये जा रहे हैं। इस कार्य में सरकारी मशीनरी के साथ जन अभियान परिषद एवं अन्य समाजिक संस्थाएँ भी सहयोग कर रही है। मुख्यमंत्री श्री चौहान स्वयं इन शिविरों में पहुँच कर प्रक्रिया का अवलोकन भी कर रहे है। बहनों को ई-केवायसी कराने में परेशानी न हो इसके लिये संबंधित संस्थाओं को प्रति केवायसी 15 रूपये की राशि भी राज्य सरकार दे रही है। इन सभी व्यवस्थाओं और मुख्यमंत्री श्री चौहान की संवेदनशीलता से प्रदेश की सभी बहनें आनंदित है और उन्हें अब इंतजार है अपने जीवन में एक नई सुबह का, जिसका उदय 10 जून 2023 को होगा। यह दिन प्रदेश की बहनों के लिये ऐतिहासिक बन जायेगा, जब उनके खातों में मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना की 1000 रूपये की प्रथम किस्त आयेगी।

पंच क्रांति के जरिए प्रदेश सरकार करेगी समाज के सभी वर्गों का कल्याण

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने ग्वालियर में अम्बेडकर महाकुंभ में कहा कि इस सुअवसर पर हम प्रदेश के विकास और समाज के सभी वर्गों के कल्याण के लिये पंच क्रांति की बात करने आए हैं। पंच क्रांति में शिक्षा की क्रांति, रोजगार की क्रांति, आवास अर्थात रहने के लिये जमीन की क्रांति एवं सभी वर्गों के सम्मान की क्रांति शामिल है। उन्होंने ग्वालियर में बाबा साहब अम्बेडकर धाम और संस्थान स्थापित करने के लिये स्थल उपलब्ध कराने और समाज के सभी वर्गों के कल्याण के उद्देश्य से समस्त पिछड़ी उप जातियों के अलग-अलग बोर्ड बनाने की घोषणाएँ कीं। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि बाबा साहब ने कहा था कि शिक्षित रहोगे तो आगे बढ़ोगे। इसी भाव के साथ प्रदेश सरकार ने शिक्षा की क्रांति के तहत श्रमोदय विद्यालय और ज्ञानोदय जैसे विद्यालय खोले हैं। छात्रावासों की स्थापना की है। साथ ही यदि किसी बच्चे को छात्रावास उपलब्ध नहीं हो पाता तो कमरे का किराया भी सरकार भर रही है। मेडिकल और इंजीनियरिंग जैसे पाठ्यक्रमों और विदेश में पढ़ाई की फीस भी सरकार भर रही है। प्रदेश में अब हिंदी में भी मेडिकल और इंजीनियरिंग की पढ़ाई शुरू की गई है। कायाकल्प अभियान में छात्रावासों की व्यवस्था बेहतर की जा रही है।

केन्द्रीय नागरिक उड्डयन एवं इस्पात मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर ने ऐसा संविधान बनाया, जिससे विश्व में लोकतंत्र की जननी के रूप में भारत की पहचान स्थापित हुई। संविधान की बदौलत ही एक ओर भारत आर्थिक शक्ति के रूप में और दूसरी ओर आध्यात्मिक शक्ति के रूप में उभर रहा है। उन्होंने कहा कि बाबा साहेब ने संविधान के माध्यम से अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग ही नहीं महिलाओं को भी हक दिलाया। श्री सिंधिया ने कहा कि आजादी के अमृत महोत्सव पर सभी संकल्प लें कि बाबा साहेब द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चल कर विकसित मध्यप्रदेश एवं भारत का निर्माण करेंगे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी एवं मुख्यमंत्री श्री चौहान के नेतृत्व में केन्द्र एवं राज्य सरकार ने केदारनाथ, बद्रीनाथ, उज्जैन आदि तीर्थ-स्थलों की तरह बाबा साहेब की जन्म-स्थली महू को भी तीर्थ के रूप में विकसित किया है। श्री सिंधिया ने राज्य सरकार द्वारा अनुसूचित जाति के कल्याण के लिये चलाई जा रही योजनाओं का जिक्र भी किया। केन्द्रीय कृषि एवं किसान-

कल्याण मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने कहा है कि बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर के विचार आज भी प्रासंगिक हैं और सदियों तक बने रहेंगे। बाबा साहेब ने भारत को संविधान दिया है। केन्द्रीय मंत्री श्री तोमर ने बाबा साहेब के विचारों को आगे बढ़ाने ग्वालियर में अंबेडकर महाकुंभ करने के लिये मुख्यमंत्री श्री चौहान के प्रति आभार जताया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री चौहान ने बाबा साहेब के जन्म से लेकर सम्पूर्ण जीवन से जुड़े पाँच स्थान को मुख्यमंत्री तीर्थ-दर्शन योजना में शामिल करने की सराहनीय पहल की है। श्री तोमर ने कहा कि देश में सभी को सामाजिक न्याय मिले, इस भाव के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री श्री चौहान अनुसूचित जाति सहित समाज के सभी वर्गों के कल्याण के लिये काम कर रही है। सांसद श्री वी. डी. शर्मा ने कहा कि बाबा साहेब ने संविधान के जरिए देश को एक सूत्र में बांधने का काम किया। संविधान के इसी भाव के साथ प्रधानमंत्री श्री मोदी सबका साथ-सबका विकास की अवधारणा पर काम कर देश की तरक्की के लिये जुटे हैं। खुशी की बात है कि राज्य सरकार ने बाबा साहेब के जीवन से जुड़े 5 स्थानों को मुख्यमंत्री तीर्थ-दर्शन योजना में शामिल किया है।

चीन छूटा पीछे, आबादी में भारत बना नंबर-1

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष के मुताबिक इस साल जून तक भारत की आबादी चीन से 29 लाख अधिक हो जायेगी। यूं तो सिमटते संसाधनों में आबादी का बढ़ना कोई अच्छी बात नहीं है, लेकिन हमारे लिये यह सुखद है कि यहां दुनिया की सबसे अधिक युवा कार्यशील आबादी देश में मौजूद है। रिपोर्ट के अनुसार भारत में कार्यशील माने जाने वाले 15-64 आयुवर्ग की 68 फीसदी आबादी है। जबकि चीन में साठ साल से अधिक आबादी साठ फीसदी है। कुल मिलाकर नब्बे के दशक में जिस युवा आबादी के बूते चीन दुनिया की दूसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बना है, वैसे ही अवसर व हालात अब भारत के पक्ष में हैं। लेकिन हमारी बढ़ी आबादी तभी वरदान बन सकती है जब हम जनसंख्या लाभांश की क्षमता का दोहन करते हुए नये रोजगार के अवसर विकसित करें। जैसी दलील चीन ने अपनी गुणवत्तापूर्ण व प्रशिक्षित आबादी की बढ़त के रूप में दी है, उसका निष्कर्ष भी यही है कि जनसंख्या का लाभ न केवल संख्या पर निर्भर करता है बल्कि इसके लिए गुणवत्ता भी महत्वपूर्ण कारक है। ऐसे में आर्थिक स्थिरता के लिये बड़े पैमाने पर कौशल उन्नयन को बढ़ावा देना होगा। हमारे सामने शिक्षा की गुणवत्ता में गिरावट, बेरोजगारी तथा स्वास्थ्य सुविधाओं में गुणात्मक अभाव की चुनौती है। पर्याप्त नवाचार का अभाव हमारी विकास दर को धीमा कर देता है। व्यावसायिक शिक्षा की गुणवत्ता में कमी रोजगार के विकल्पों को कम करती है। जिसके चलते वैश्विक बाजार में दखल बनाने के मौके को हम गवां देते हैं। यदि नीति नियंता इस दिशा में गंभीर नहीं होते हैं तो बढ़ी आबादी बोझ भी बन सकती है। विकास गाथा को समावेशी बनाने के लिये देश के करीब डेढ़ अरब लोगों को साझेदारी करनी होगी। निस्संदेह, सबसे बड़ी व युवा आबादी वाले देश में दुनिया की सबसे तेज बढ़ती अर्थव्यवस्था को हम सुनहरे अवसर में बदल सकते हैं। वर्ष 2055 तक कामकाजी आबादी की बढ़त जारी रहने से हम इस मौके का लाभ ले सकते हैं। दरअसल, यह वक्त बढ़ी आबादी को अपनी ताकत बनाने का है। हम आबादी नियंत्रण के सख्त उपाय भारत जैसी लोकतांत्रिक व्यवस्था में नहीं अपना सकते। वैसे भी माओ काल तथा उसके उपरांत भी सिंगल चाइल्ड पॉलिसी की सख्त नीति से चीन की आबादी में जो गिरावट शुरू हुई, उससे चीन फिर उबर नहीं पाया है। इस नीति को खत्म करने तथा ज्यादा बच्चों के लिये प्रेरित करने के बावजूद लोगों का इससे मोहभंग हो गया। जिसके दूरगामी परिणाम चीन की अर्थव्यवस्था में नजर आएंगे। मजदूरी बढ़ने से चीन के निर्यात अब महंगे होने लगे हैं। बहरहाल, जिस युवा आबादी के बूते चीन ने आर्थिक तरक्की की इबारत लिखी, वह मौका हमारे पास है। बशर्ते जाति-धर्म की राजनीति करने वाले नेता बाज आएं और डेढ़ अरब की आबादी के जरिये एक राष्ट्र के रूप में विकास की नई इबारत लिखें। हमारी आबादी में 35 साल से कम उम्र की 66 फीसदी आबादी देश की तरक्की की तस्वीर बदल सकती है। देश में बड़ा घरेलू बाजार हमारी ताकत है और हम विदेश निवेश को बढ़ाकर अर्थव्यवस्था की प्राणवायु बना सकते हैं। साथ ही देश में तेजी से उभरता मध्यम वर्ग भी हमारी ताकत है। सस्ती मजदूरी हमारे औद्योगिक विकास की दर को नये आयाम दे सकती है। इसके अलावा देश के व्यापक कृषि क्षेत्र को नये आयाम देकर इससे जुड़ी पचास फीसदी से अधिक आबादी को देश की ताकत बना सकते हैं। जरूरत इस बात की है कि उद्योगों का विकेंद्रीयकरण करके उन्हें ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित किया जाये। इससे जहां कृषि अवयवों के उद्योगों में उपयोग किये जाने से किसानों की आय बढ़ेगी, वहीं गांवों से शहरों की ओर तेजी से बढ़ता पलायन भी रुकेगा। देश की जीडीपी में फिलहाल अट्ठारह फीसदी योगदान देने वाले कृषि क्षेत्र से प्राप्त हिस्से में वृद्धि से देश की आर्थिकी को नई दिशा मिल सकती है। लेकिन यहां उल्लेख करना जरूरी होगा कि जहां चीन की श्रमशक्ति में महिलाओं की भागीदारी 61 फीसदी है, वहीं भारत में यह महज बीस फीसदी है। भारत को कम से कम वैश्विक औसत 47 फीसदी के करीब तो आना होगा। आज जरूरत देश की श्रमशक्ति को ताकत बनाने की है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि संघर्षग्रस्त सूडान से फंसे भारतीयों को वापस लाने के लिए केंद्र सरकार ने ऑपरेशन कावेरी शुरू किया है। दिलचस्प बात यह है कि इस ऑपरेशन को ऑपरेशन कावेरी नाम देने का विकल्प बहुत मायने रखता है। यह उसी तर्ज पर है, जैसा कि पीएम ने यूक्रेन से लोगों को निकालने के ऑपरेशन को ऑपरेशन गंगा का नाम दिया था। कावेरी कर्नाटक और तमिलनाडु के

दक्षिणी राज्यों से होकर बहने वाली प्रमुख भारतीय नदियों में से एक है। यह नदी क्षेत्र के लोगों के लिए पवित्र मानी जाती है और इसकी देवी कावेरीअम्मा (मां कावेरी) के रूप में पूजा की जाती है। मोदी सरकार द्वारा इस ऑपरेशन के नामकरण पर एक अन्य शीर्ष सूत्र ने बताया कि नदियां बाधाओं के बावजूद अपने गंतव्य तक पहुंचती हैं। यह एक मां की तरह है जो यह सुनिश्चित करती है कि वह अपने बच्चों को वापस सुरक्षित लाएगी। वहीं सूडान में सिविल वॉर के बीच ऑपरेशन कावेरी के तहत भारतीयों को निकाला जा रहा है। 246 भारतीयों के दूसरा बैच को ग्लोबमास्टर से मुंबई लाया गया। फ्लाइट लेफ्टिनेंट हर राज कौर बोपाराय इस प्लेन की पायलट थीं। ग्लोबमास्टर उड़ाने वाली देश की पहली और एकमात्र महिला पायलट हैं।

इससे पहले 367 नागरिकों का पहला बैच सऊदी अरब के जेद्दाह से नई दिल्ली एयरपोर्ट पहुंचा था। एयरपोर्ट पर पहुंचे लोगों ने भारत माता की जय, इंडियन आर्मी जिंदाबाद, नरेंद्र मोदी जिंदाबाद के नारे लगाए। रेस्क्यू की गई एक बच्ची ने कहा- हम वहां किसी भी

पल मारे जा सकते थे। इससे पहले बीते साल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुआई वाली सरकार ने रूस के साथ संघर्ष के बीच यूक्रेन से भारतीय छात्रों को निकालने में एक बड़ी चुनौती वाली भूमिका निभाई थी। यूक्रेन में फंसे भारतीय छात्रों को निकालने के लिए चलाए गए अभियान को ऑपरेशन गंगा नाम दिया गया था। गंगा न केवल एक विशाल जल संसाधन है बल्कि भारत में इसकी पूजा की जाती है। इसी तरह अफगानिस्तान में तालिबान के हमले के समय भारत सरकार द्वारा चलाए गए बचाव अभियान को ऑपरेशन देवी शक्ति का नाम दिया गया था। ऑपरेशन देवी शक्ति के नामकरण के पीछे तर्क बताते हुए सूत्रों ने कहा था कि देवी दुर्गा रक्षक हैं और संकट में लोगों की मदद के लिए आगे आती हैं। उन्होंने कहा था कि ईश्वर का नाम तनावपूर्ण स्थिति में लोगों का मनोबल बढ़ाने में मदद करता है। पीएम मोदी भी मां दुर्गा के भक्त हैं। इस वर्ष भारत ने भूकंप प्रभावित तुर्किये और सीरिया में बचाव और राहत सामग्री भेजी थी और उसे ऑपरेशन दोस्त नाम दिया गया था। तुर्किये और सूडान के नागरिकों ने सहायता के लिए भारत का आभार व्यक्त किया था। भारत में तुर्किये के राजदूत फिरात सुनेल ने कहा था, ÷दोस्त करा गुंडे बेल्ली ओलुर (जरूरत में काम आने वाला दोस्त ही सच्चा दोस्त होता है)। भारत का बहुत-बहुत धन्यवाद। इस तरह ऑपरेशन दोस्त शब्द अस्तित्व में आया था।

भारत के 10 बड़े रेक्स्यू ऑपरेशन

जब अपनों पर आया संकट, देवदूत बनकर पहुंची सरकार

मोदी सरकार ने सूडान से भारतीय नागरिकों को वापस लाने के लिए अभियान चलाया है। इस अभियान को ऑपरेशन कावेरी नाम दिया गया है। इससे पहले भी जब दुनिया भर में मानव निर्मित या प्राकृतिक आपदा आई है। तब भारत सरकार ने अपने नागरिकों को सुरक्षित घर लाने के लिए कई मिशन चलाए हैं। आइए जानते हैं साल 1990 से लेकर अबतक कितनी बार सरकार देवदूत बनकर भारतीयों को दूसरे देशों से सुरक्षित वापस लेकर आई है।

कुवैत अभियान गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज

1990 में इराक के तानाशाह सद्दाम हुसैन ने सैनिकों और टैंकों के साथ कुवैत पर आक्रमण कर दिया। देश के कई महत्वपूर्ण अधिकारी सऊदी अरब भाग गए। हमले के 12 दिनों के बाद 13 अगस्त से 170,000 भारतीय नागरिकों को सुरक्षित निकाला गया। यह उस समय तक दुनिया का सबसे बड़ा अभियान था। इस अभियान के लिए एयर इंडिया का नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया।

खाड़ी देशों के अन्य मिशन

भारत सरकार को खाड़ी देशों में कई बार मिशन को अंजाम देना पड़ा है। जून 2006 में इजरायल और लेबनान के बीच युद्ध छिड़ने के बाद ऑपरेशन सुकून शुरू किया। 19 जुलाई से 1 अगस्त के बीच 2280 नागरिकों को सुरक्षित निकाला गया था। इसमें नेपाली और श्रीलंकाई नागरिक भी शामिल थे।

2011 में 15,400 भारतीयों को ऑपरेशन होम कमिंग के तहत लीबिया से वापस लाया गया था। 2015 में यमन में ऑपेशन राहत शुरू किया गया। इसमें 4,640 भारतीयों समेत 41 देशों के 960 नागरिकों को सफलतापूर्वक वहां से निकाला गया।

रूस-यूक्रेन युद्ध के दौरान ऑपरेशन गंगा

हर साल भारत से हजारों बच्चे यूक्रेन में मेडिकल की पढ़ाई के लिए जाते हैं। 2022 में रूस के यूक्रेन पर हमले के बाद 16 हजार स्टूडेंट्स फंस गए थे। इसके अलावा करीब दो हजार अन्य नागरिक यूक्रेन में थे।

हवाई क्षेत्र बंद होने से पहले छात्रों को देश वापस लाना था। इसके लिए भारत सरकार ने ऑपरेशन गंगा नाम से अभियान चलाया। इस अभियान के तहत भारतीय छात्रों के साथ-साथ पाकिस्ता, बांग्लादेश और श्रीलंका के छात्रों को वहां से लाया गया था।

कोरोना महामारी में अभियान

2020 में कोरोना फैलने के बाद दुनिया भर में हड़कंप मच गया। ऐसे में दूसरे देशों में काम करने वाले नागरिकों और पर्यटकों को सुरक्षित लाने की जिम्मेदारी मोदी सरकार पर थी। तब दो बड़े अभियान चलाए गए। वंदे भारत अभियान के तहत 60 लाख नागरिकों को वापस लाया गया। सरकार के आंकड़ों के अनुसार 18,89,968 लोग एयर इंडिया और एयर इंडिया एक्सप्रेस उड़ानों के माध्यम से देश लौटे। वहीं, 36,92,216 नागरिक प्राइवेट विमानों और 5,02,151 नागरिक भूमि के माध्यम से बॉर्डर पार वतन लौटे।वहीं, दूसरा अभियान ऑपरेशन समुद्र सेतु चलाया गया। इस अभियान के तहत नौसैनिक जहाजों से 3,987 लोगों को लाने में कामयाबी मिली थी।

नेपाल भूकंप के बाद ऑपरेशन मैत्री

2015 में नेपाल में आए भूकंप के बाद भारत ने मैत्री अभियान शुरू किया। यह केंद्र सरकार और सेना का संयुक्त अभियान भूकंप के 15 मिनट बाद शुरू हुआ। इस अभियान में 5 हजार भारतीय नागरिकों को वापस लाया गया।

कब थमेंगे नक्सली वारदात

छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा में सुरक्षाबलों पर नक्सलियों ने हमला कर दिया. नक्सलियों द्वारा लगाए गए आईईडी में विस्फोट की वजह से 10 जवान शहीद शहीद हो गए. अरनपुर थाना क्षेत्र में माओवादी कैडर की उपस्थिति की सूचना पर दंतेवाड़ा से डीआरजी बल को नक्सल विरोधी अभियान के लिए रवाना किया गया था. जहां अभियान के बाद वापसी के दौरान माओवादियों ने अरनपुर मार्ग पर आईईडी विस्फोट किया पुलिस अधिकारियों ने बताया कि घटना की जानकारी मिलने के बाद घटनास्थल के लिए अतिरिक्त बल रवाना किया गया है. गौरतलब है कि हाल के दिनों में सुरक्षाबलों की तरफ से नक्सलियों के खिलाफ लगातार कार्रवाई की जा रही थी. वहीं नक्सलियों की तरफ से भी लगातार घात लगाकर हमले किए जा रहे हैं. पिछले महीने बीजापुर में माओवादियों के लगाए प्रेशर आईइडी की चपेट में आकर सीएएफ के एक जवान शहीद हो गए थे.

अरनपुर के नजदीक जिस जगह पर नक्सलियों ने विस्फोट की घटना की है, उससे पता चलता है कि नक्सलियों को पहले से ही जवानों के मूवमेंट का रुट मैप पता था। दो दिन पहले ही विस्फोटक वाली जगह के सौ मीटर पहले आमा तिहार मनाने के लिए नाका लगाया गया था। नाके पर जवानों की वाहन धीमी होने से नक्सलियों को विस्फोट करने के लिए अतिरिक्त समय मिल गया। सुरक्षा बल के अधिकारियों का मानना है कि सोची-समझी रणनीति से नक्सलियों ने घटना के लिए व्यूह रचना की थी, जिसकी जद में जवान आ गए। बस्तर में टैक्टीकल काउंटर आफेंसिव कैम्पेन (टीसीओसी) में दो वर्ष की असफलता से बौखलाए नक्सलियों को आखिरकार सुरक्षा बल पर बड़ा हमला करने का मौका मिल गया। छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा में नक्सली हमला ऐसे समय में हुआ, जब केंद्र और राज्य दोनों स्तरों पर यह दावा किया जाने लगा था कि राज्य में माओवादियों के प्रभाव में भारी कमी आई है। इस लिहाज से हमला नक्सलियों की ओर से यह बताने की हताशा भरी कोशिश हो सकती है कि वे अभी खत्म नहीं हुए हैं और बड़े हमलों को अंजाम दे सकते हैं। हालांकि पिछले कुछ समय के रेकॉर्ड को देखें तो इसमें दो राय नहीं कि देश के विभिन्न क्षेत्रों में नक्सलियों का असर कम हुआ है। न केवल उनके कई नेता पुलिस के हत्थे चढ़े हैं बल्कि

उनकी गतिविधियों का दायरा भी सीमित हुआ है।बावजूद इसके, माओवादियों की ओर से किया गया यह हमला उस परसेप्शन पर सवाल खड़ा करने में कुछ हद तक सफल जरूर हुआ है, जो पिछले कुछ समय की स्थितियों से बनता जा रहा था। इसलिए यह और जरूरी हो जाता है कि इस हमले से जुड़े तमाम पहलुओं पर गंभीरता से विचार करते हुए यह देखा जाए कि कौन-कौन से बिंदु ऐसे हैं, जहां चूक की गुंजाइश रह गई थी। शुरुआती सूचनाओं में ऐसे कई बिंदु उभरते नजर आते हैं। स्टैंडर्ड ऑपरेशन प्रसीजर (एसओपी) के उल्लंघन से लेकर ह्यूमन इंटेलिजेंस की नाकामी तक ऐसे तमाम पहलुओं की ठीक से जांच होनी चाहिए ताकि आगे के लिए सही सबक लिए जा सकें। इसी बिंदु पर पॉजिटिव पहलुओं को भी रेखांकित किए जाने की जरूरत है।हमले में एक वाहन के उड़ाए जाने के बाद घायल साथी जवानों को जल्द से जल्द चिकित्सा सुविधा मुहैया कराने की चिंता के बीच भी अन्य जवानों ने तत्काल मोर्चा संभालते हुए नक्सलियों पर गोलीबारी शुरू कर दी और उन्हें जान बचाकर भागने को मजबूर कर दिया। यह दिखाता है कि जवानों ने कितनी मुस्तैदी दिखाई और उनका मनोबल कितना मजबूत था। इन तात्कालिक पहलुओं के साथ ही एक दीर्घकालिक मसला यह भी है कि समाज में माओवाद को लेकर किस तरह का नजरिया बन रहा है।

जंतर-मंतर पर रेसलर्स का फिर 'दंगल'

देश के टॉप मेडल विनर पहलवान एक बार फिर जंतर मंतर पर बैठ गए हैं। उनका कहना है कि जब तक उनकी शिकायत पर उपयुक्त कार्रवाई नहीं होती वह धरने पर बैठे रहेंगे। यह स्थिति वाकई दुर्भाग्यपूर्ण है। खासकर इसलिए कि पहलवानों ने कोई पहली बार अपनी मांग नहीं रखी है। तीन महीने पहले भी

वे धरने पर बैठे थे। उनकी शिकायत भी कोई मामूली नहीं है। भारतीय कुश्ती महासंघ और उसके अध्यक्ष के खिलाफ यौनशोषण का आरोप ऐसा नहीं हो सकता, जिसे नजरअंदाज कर दिया जाए। हैरत की बात यह है कि तब इन पहलवानों को पूरे मामले की जांच-पड़ताल के बाद मुनासिब कार्रवाई का जो आश्वासन दिया गया था, वह किसी अंजाम तक पहुंचता नहीं दिख रहा।

हालांकि जानी-मानी बॉक्सर मैरी कोम की अध्यक्षता में एक समिति बनाई गई थी। कहा जा रहा है कि उस समिति ने इसी महीने के पहले हफ्ते में अपनी रिपोर्ट भी सौंप दी थी, लेकिन उस बारे में कोई औपचारिक सूचना उपलब्ध नहीं है। अगर सचमुच यह रिपोर्ट आ गई है तो उसे सार्वजनिक क्यों नहीं किया गया? चूंकि इस मामले में आरोप सार्वजनिक तौर पर लगाए गए हैं, इसलिए गोपनीयता बरतने का कोई मतलब नहीं बनता। देशवासियों के सामने उन पहलवानों और महिला

पहलवानों ने आकर शिकायत की, जो देश का गौरव हैं। चाहे कुश्ती महासंघ हो या खेल मंत्रालय, वे समय पर इनकी शिकायत सुनने और उनका हल निकालने में नाकाम रहे। तभी ये पहलवान जंतर-मंतर पर धरना देने को विवश हुए। इसलिए अब दूध का दूध और पानी का पानी होना चाहिए। अगर इन पहलवानों की शिकायत गलत पाई गई तो वह बात भी सार्वजनिक की जानी चाहिए। लेकिन अगर उनकी शिकायत सही है तो दोषी व्यक्तियों के खिलाफ बिना देर किए कार्रवाई होनी चाहिए। चूंकि ऐसा होता नहीं दिख रहा, इसलिए खेल मंत्रालय समेत देश का पूरा खेल ढांचा संदेह के घेरे में आ रहा है। और, अब तो एक नाबालिग समेत सात महिला पहलवानों ने पुलिस में भी शिकायत दर्ज करा दी है। हालांकि शिकायत मिल जाने के बाद भी पुलिस ने एफआईआर दर्ज नहीं की और इसके लिए भी पहलवानों को अदालत का रुख करना पड़ा। समझना चाहिए कि यह किसी खेल संगठन या उसके पदाधिकारियों से ही जुड़ा मसला नहीं है। इससे यह सवाल भी जुड़ा है कि हम खिलाड़ियों के साथ किस तरह का व्यवहार करते हैं? उनकी शिकायतों को कितनी गंभीरता से लेते हैं? दुनिया में देश का मान बढ़ाने वाले इन खिलाड़ियों को इंसाफ पाने के लिए बार-बार ऐसे सड़क पर उतरना पड़े, यह सरकार और प्रशासन के लिए कोई अच्छी बात नहीं है।

विपक्षी एकता की कोशिश

अखिलेश-ममता से केजरीवाल तक, जानें किसे कौन सा फॉर्मूला दे रहे हैं नीतीश-तेजस्वी

यह तो तय था कि आगामी वर्ष आम चुनाव से पहले भाजपा के खिलाफ विपक्षी एकजुटता की कोशिशें तेज होंगी। लेकिन कर्नाटक चुनाव से पहले ही एकजुटता की कवायद शुरू हो जाएगी, ऐसी उम्मीद कम ही थी। शायद मानहानि मामले में राहुल गांधी की सांसद के रूप में सदस्यता समाप्त किये जाने और फिर उनसे सरकारी आवास खाली कराये जाने के घटनाक्रम ने विपक्षी दलों को एकजुट होने के लिये प्रेरित किया। बुधवार को बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, राजद नेता व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव के कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष के घर पर राहुल गांधी से हुई मुलाकात को विपक्षी एकता की दिशा में बड़ी पहल कहा जा रहा है। हालांकि, इन एकता के प्रयासों में कोई नई बात नहीं है क्योंकि बिहार सरकार में पहले ही तीनों दल शामिल हैं। इससे पूर्व फरवरी में भी मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पूर्णिया रैली में कांग्रेस से मोदी सरकार के खिलाफ तुरंत एकजुट होने की बात कह चुके थे। लेकिन राहुल प्रकरण ने विपक्षी दलों को असुरक्षाबोध से भर दिया और यह निष्कर्ष समझ में आने लगा कि यदि हम एकजुट न हुए तो तंत्र के निरंकुश व्यवहार का शिकार होना पड़ सकता है। जिसके चलते कई राजनीतिक दल, जो विपक्षी एकता में कांग्रेस की भूमिका के प्रति किंतु-परंतु करते थे, वे भी अब एकता के प्रयासों को नई उम्मीद से देख रहे हैं। यहां तक कि कांग्रेस की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी भी समान विचार वाले दलों के साथ समन्वय की बात करने लगी हैं।

विपक्षी दलों को एकजुट करने के लिए बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और उप-मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने कोशिशें तेज कर दी हैं। अब तक अलग-अलग दलों के कई नेताओं से दोनों मुलाकात कर चुके हैं। इसकी शुरुआत 12 अप्रैल से हुई, जब दोनों ने दिल्ली में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और राहुल गांधी से मुलाकात की थी। चर्चा है कि विपक्षी दलों के नेताओं से मुलाकात के दौरान एक फॉर्मूले का भी जिक्र किया जा रहा है। इसी फॉर्मूले के आधार पर दलों को साथ आने के लिए कहा जा रहा है। आखिर वो फॉर्मूला क्या है? कैसे विपक्षी दलों को एकजुट करने की कोशिशें हो रहीं हैं? आगे किन मुद्दों पर ये दल साथ आ सकते हैं? आइए जानते हैं... विपक्षी एकता के लिए जदयू और राजद साथ काम कर रहे हैं। वहीं, कांग्रेस भी अपनी ओर से अलग से कोशिशें कर रही है।

कांग्रेस दक्षिण को साधने में लगी

दक्षिण भारत के राज्यों के क्षेत्रीय दलों को एकजुट करने की जिम्मेदारी कांग्रेस के पास है। कुछ राज्यों में क्षेत्रीय दल पहले से ही कांग्रेस के साथ गठबंधन में हैं। अब इन दलों से बातचीत करके 2024 लोकसभा चुनाव में प्रस्तावित महागठबंधन में शामिल होने के लिए आमंत्रित कर रहे हैं। दक्षिण के साथ-साथ वामदलों को भी एकसाथ लाने पर कांग्रेस काम कर रही है। 12 अप्रैल को नीतीश कुमार और तेजस्वी यादव से मुलाकात के बाद

कांग्रेस अध्यक्ष खरगे ने शरद पवार, अरविंद केजरीवाल से भी बात की थी।

नीतीश कुमार की अगुआई में जदयू और तेजस्वी यादव के नेतृत्व में राजद उत्तर भारत के विपक्षी दलों को एकसाथ लाने में जुटी हैं। खासतौर पर आम आदमी पार्टी, समाजवादी पार्टी, तृणमूल कांग्रेस जैसे दलों को एकजुट करने का काम नीतीश और तेजस्वी कर रहे हैं। इसके अलावा अन्य छोटे दलों को भी साथ लाने के लिए दोनों नेता लगातार कोशिश कर रहे हैं।

अब तक किन-किन नेताओं के बीच हुई बातचीत

12 अप्रैल को सबसे पहले बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और उप-मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और राहुल गांधी से मुलाकात की। इसी के साथ नीतीश ने ये भी साफ कर दिया कि विपक्षी एकता बगैर कांग्रेस को साथ लाए संभव नहीं है। राहुल-खरगे से मिलने के बाद नीतश कुमार और तेजस्वी यादव ने आम आदमी पार्टी के मुखिया अरविंद केजरीवाल से मुलाकात की। वहीं, दूसरी ओर खरगे और राहुल ने एनसीपी प्रमुख शरद पवार से मिलकर बातचीत की। खरगे ने अरविंद केजरीवाल और तमिलनाडु के मुख्यमंत्री स्टालिन से भी फोन पर बात की। इसके बाद नीतीश कुमार और तेजस्वी ने सोमवार को पहले पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी से मुलाकात की और फिर लखनऊ आकर समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव से मिले। इसे समझने के लिए हमने कांग्रेस के कुछ बड़े नेताओं से बात की। एक कांग्रेसी नेता ने कहा, नीतीश, तेजस्वी संग खरगे और राहुल की बैठक में विपक्षी एकजुटता को लेकर कई बिंदुओं पर सहमति बनी है। अब उसी फॉर्मूले के सहारे विपक्ष के अन्य दलों को एकसाथ लाने की कोशिश हो रही है। इस फॉर्मूले पर अंतिम मुहर तब लगेगी जब एकसाथ सारे विपक्षी दलों के नेता बैठक करेंगे।

नीतीश कुमार ने खरगे और राहुल से मुलाकात के दौरान ये बात कही थी। उन्होंने कहा था कि भाजपा के खिलाफ विपक्ष को वैचारिक तौर पर एकजुट होना होगा। कई ऐसे मुद्दे हैं, जिनपर विपक्ष की राय एक है। इन्हीं मुद्दों के सहारे सभी को एक होकर भाजपा से लड़ना होगा। राहुल और खरगे ने भी इसे स्वीकार किया।

विपक्षी एकता की अगुआई कांग्रेस करे

नीतीश ने ही इसका प्रस्ताव भी रखा। उन्होंने कहा कि कांग्रेस को ही विपक्ष के सभी दलों की अगुआई करनी चाहिए, लेकिन इसमें कहीं से भी ये न लगे कि किसी दल की उपेक्षा की जा रही है। सभी के सम्मान का ख्याल रखना चाहिए।

चुनाव में सीट बंटवारे का फॉर्मूला

नीतीश ने कहा कि चुनाव के वक्त जिस पार्टी का जिस भी राज्य या क्षेत्र में दबदबा हो वहां उसे लीड करने दिया जाए। मसलन बिहार में राजद-जदयू का प्रभाव है। ऐसे में यहां की ज्यादातर सीटों पर इन्हीं दो पार्टियों के उम्मीदवार उतारे जाएं। इसके अलावा अन्य पार्टी जिसका कुछ जनाधार हो, उन्हें भी कुछ सीटों पर मौका दिया जाए। इसी तरह यूपी में सपा को ज्यादा सीटें दी जा सकती हैं। राजस्थान-छत्तीसगढ़, हिमाचल प्रदेश जैसे राज्यों में कांग्रेस लीड कर सकती है। जहां विवाद की स्थिति बने, वहां आपस में बैठकर मसला हल किया जा सकता है।

दो मुद्दे जिनपर विपक्ष की एक राय है

विपक्षी दलों पर जांच एजेंसियों की कार्रवाई- इस वक्त सोनिया गांधी-राहुल गांधी से लेकर केसीआर, तेजस्वी यादव, उद्धव ठाकरे, ममता बनर्जी और अरविंद केजरीवाल तक कई मामलों में फंसे हुए हैं। ये एक ऐसा मुद्दा है, जिसको लेकर सभी दलों की राय एक है। सभी ने इसके खिलाफ सरकार पर हमला बोला है। अल्पसंख्यकों के मुद्दे पर विपक्ष ने लगातार आरोप लगाया है कि सरकार अल्पसंख्यकों के खिलाफ काम कर रही है। सरकार पर सांप्रदायिक होने का भी आरोप लगाया जा रहा है। ऐसे में इस मुद्दे पर भी विपक्ष सहमति बना सकता है।

पीएम मोदी ने मप्र को दीं कई सौगातें

मप्र में विधानसभा चुनावों से पहले पीएम मोदी को कई सौगातें दे रहे हैं। अभी हाल ही में मप्र को पीएम मोदी ने वंदे भारत ट्रेन की बड़ी सौगात दी है। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पहली वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन को हरी झंडी दिखाई. वंदे भारत ट्रेन का लोकार्पण हाईटेक कमलापति रेलवे स्टेशन पर पीएम मोदी ने किया. पीएम मोदी ने कहा कि एमपी को पहली वंदे भारत ट्रेन मिली है, जो प्रदेश के लोगों को कई सुविधाएं देगी और क्षेत्र के विकास का माध्यम बनेगी. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि भारतीय रेलवे देश के छोटे शिल्पकारों और कारीगरों के काम को देश के हर कोने तक पहुंचाने का माध्यम बन रही है. अब वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट के तहत कई जगहों पर 600 आउटलेट बनाए जा चुके हैं, जहां से करीब 1 लाक लोग खरीदी कर चुके हैं.

रीवा में पंचायती राज सम्मलेन में पीएम मोदी ने कहा, ग्रामीणों को बांटकर राजनैतिक दलों ने चलाई है अपनी दुकानें

एमपी के रीवा में आयोजित पंचायती राज सम्मेलन में शामिल हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि 90 के दशक में पंचायती राज के नाम पर खानापूर्ति की गई है. गांव के लोगों को बांटकर राजनैतिक दलों ने अपनी अपनी दुकानें चलाई है. श्री मोदी ने रीवा में 2300 करोड़ रुपए के रेल प्रोजक्ट व 7853 करोड़ रुपए की नल-जल योजनाओं का शिलान्यास व लोकार्पण किया.

पीएम श्री मोदी ने आगे कहा कि पूज्य बापू कहते थे कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है लेकिन कांग्रेस ने गांधी जी के विचारों को ही अनसुना कर दिया. आजादी के बाद जिस दल ने सबसे ज्यादा सरकार चलाई है उसी ने गांवों का भरोसा तोड़ दिया. कांग्रेस शासन के दौरान गांवों को निचले पायदान पर रखा गया. गांवों के साथ इस तरह का सौतेला व्यवहार कर देश आगे नहीं बढ़ सकता. पहले की सरकारों ने गांव व ग्रामीणों के साथ बड़ा अन्याय किया है, गांवों पर रुपया खर्च करने से बचती रही है, गांव अपने आप में कोई वोट बैंक तो नहीं था इसलिए उन्हे नजर अंदाज किया जाता था. हमारी सरकार ने गांवों के विकास के लिए तिजोरी खोल दी. वर्ष 2014 के बाद से पंचायतों के सशक्तिकरण का बीड़ा उठाया, पहले वित्त आयोग का अनुदान 70 हजार करोड़ से कम था, लेकिन 2014 के बाद 2 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा हो गया. 2014 से पहले के 10 साल में केंद्र सरकार की मदद से 6 हजार के आसपास पंचायत भवन बनाए गए लेकिन हमारी सरकार ने 8 साल के अंदर 30 हजार से ज्यादा नए भवन बनवा दिए हैं. उन्होने कहा कि गांव के लोगों के लिए सरकार ने हर घर जल योजना शुरू की. इस योजना से देश के 9 करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को घर में नल से पानी मिलने लगा. एमपी में पहले 13 लाख

ग्रामीण परिवार तक नल-जल से पानी पहुंचता था. करीब 60 लाख घरों तक पानी पहुंचने लगा है. एक जिले में तो शत-प्रतिशत है. पीएम श्री मोदी ने कहा कि काम के दायरे भले ही अलग हो लेकिन लक्ष्य एक है जन सेवा से राष्ट्र सेवा. आज मुझे खुशी है कि गांव, गरीब का जीवन आसान बनाने के लिए जो भी योजना केन्द्र सरकार ने बनाई है उन्हे हमारी पंचायत ने पूरी निष्ठा से जमीन पर उतारा है. हम पंचायतों की मदद से गांवों व शहरों के बीच की खाई को लगातार कम कर रहे है. आजादी के इस अमृत काल में हम सभी देशवासियों ने विकसित भारत का सपना देखा है. इसे पूरा करने के लिए दिन-रात मेहनत कर रहे हैं पीएम मोदी ने कहा कि पहले देश के बैंकों पर गांवों के लोगों का अधिकार नहीं माना जाता था. ग्रामीणों के बैंक खाते नहीं थे, न कोई सुविधा मिलती थी. सरकार जो रुपया ग्रामीणों के लिए भेजती थी वो बीच में ही लूट लिया जाता था. हमारी सरकार ने इसे पूरी तरह से बदल दिया. हमने जन-धन योजना चलाई गांव के 40 करोड़ से ज्यादा लोगों के बैंक खाते खुलवाए, पोस्ट आफिस का उपयोग कर गांवों तक बैंक पहुंच गए. आज इसका प्रभाव देश के हर गांव में देखने मिल रहा है, लोगों का रुपया सीधा खाते में आ रहा है. हमारे देश में पहले की सरकार ने ग्राम पंचायतों तक फाइबर पहुंचाने की योजना शुरु की थी, सिर्फ 70 से भी कम ग्राम पंचायतों को आप्टिकल फाइबर से जोड़ा गया.

बीजेपी की लाडली बहना के जवाब में कांग्रेस शुरू करेगी नारी सम्मान योजना,

आधी आबादी को साधने कमलनाथ का नया दांव

चुनावी साल में मध्य प्रदेश में दोनों प्रमुख पार्टियां- बीजेपी और कांग्रेस, आधी आबादी को अपने पाले में करने में जुटे हैं। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने लाडली बहना योजना लागू की तो अब पूर्व सीएम और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष इसका जवाब लेकर आए हैं। कमलनाथ ने नारी सम्मान योजना शुरू करने का ऐलान किया है। इसकी शुरुआत 9 मई से की जाएगी। कांग्रेस कार्यकर्ता घर-घर जाकर इसके फॉर्म भरवाएंगे।

प्रदेश स्तर पर लागू हो रही इस योजना में सभी कांग्रेस कार्यकर्ता हर घर में जाकर महिलाओं के फॉर्म भरवाएंगे। इसमें कांग्रेस की सरकार बनने पर महिलाओं को ?1500 प्रतिमाह पेंशन देने और ?500 में रसोई गैस के सिलेंडर देने का वचन दिया जाएगा। नारी सम्मान योजना के फॉर्म के साथ ही कांग्रेस महिला मतदाताओं को सीधे तौर पर पार्टी से जोड़ने का प्लान तैयार कर रही है।

कर्ज माफी की तरह होगा वचन पत्र

पिछले विधानसभा चुनाव में कमलनाथ ने किसानों से कर्ज माफी का वादा किया था। उसको लेकर भी गांव स्तर पर फॉर्म भरे गए थे। ठीक उसी तरह से नारी सम्मान योजना के फॉर्म भी भरे जाएंगे। कमलनाथ के बेटे सांसद नकुल नाथ ने बताया कि 9 मई से पूरे प्रदेश में कांग्रेस नारी सम्मान योजना की शुरुआत करेगी। इसको लेकर कांग्रेस के वरिष्ठ पदाधिकारियों को जिम्मेदारी दी गई है जो लगातार इसके क्रियान्वयन की मॉनिटरिंग करेंगे।

लाडली बहना योजना ने बढ़ाई कांग्रेस की बेचैनी

शिवराज सिंह चौहान की महत्वाकांक्षी लाडली बहना योजना को लेकर महिलाओं में खासा उत्साह देखा जा रहा है। इसके तहत महिलाओं को हर महीने एक हजार रुपये दिए जाने का प्रावधान किया गया है। इसने कांग्रेस की बेचैनी बढ़ा दी है। इसीलिए नारी सम्मान योजना की शुरुआत करने का फैसला पार्टी ने किया है।

कमलनाथ ने मध्य प्रदेश में नारी सम्मान योजना शुरू करने का किया ऐलान

कारगर होगा कांग्रेस का नया दांव!

कमलनाथ को उनके ही घर में घेरने के लिए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के दौरे के बाद भाजपा प्रत्येक बूथ को मजबूत करने में जुट गई है। दूसरी तरफ मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने पूरे प्रदेश में लाडली बहना योजना की घोषणा कर महिला मतदाताओं को रिझाने के लिए नया दाव फेंक दिया। कमलनाथ इसका जवाब नारी सम्मान योजना से देने की तैयारी में जुट गए हैं। उनका यह दांव कितना कारगर साबित होगा, यह तो चुनावी नतीजों से ही पता चलेगा, लेकिन अच्छी बात यह है कि प्रदेश की राजनीति में संभवतः पहली बार महिलाएं चुनावी दंगल के केंद्र में होंगी।

समलैंगिक विवाह पर घमासान

शादी यानी किसे के भी जीवन का सबसे अहम पड़ाव और कानून किसी को भी अपनी मर्जी से अपना जीवन साथी चुनने की आजादी देता है। कोई भी लड़का या लड़की अपने लाइफ पार्टनर को चुनने के लिए आजाद हैं। वो अपनी पसंद से शादी कर सकते हैं, लेकिन इन दिनों शादी को लेकर एक नई बहस छिड़ गई है और ये है सेम सेक्स मैरिज या फिर समलैंगिक विवाह। यानी जब एक ही जैंडर के लोग आपस में शादी करना चाहे। लड़का, लड़के से और लड़की, लड़की से। हमारे देश में अब तक न तो कानून इसकी इजाजत देता है और न ही भारतीय समाज इसे स्वीकार करता है।

आखिरकार समलैंगिक शादी से जुड़ी याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई शुरू कर दी। याचिकाकर्ताओं की सुप्रीम कोर्ट से दरख्वास्त है कि चूंकि अब देश में दो वयस्क लोगों का स्वेच्छा से आपस में समलैंगिक संबंध बनाना और एक साथ रहना अपराध नहीं है, इसलिए वे एक कपल के रूप में रह तो सकते हैं, लेकिन चाहकर भी अपने रिश्ते को शादी का नाम नहीं दे सकते क्योंकि शादी से जुड़े मौजूदा कानून जेंडर न्यूट्रल नहीं हैं। इनके मुताबिक शादी पुरुष और महिला के बीच ही हो सकती है। साफ है कि न केवल एलजीबीटीक्यू समुदायों से जुड़े लोग बल्कि कई मानवाधिकार कार्यकर्ता भी इसे समानता के अधिकार से जुड़े मसले के रूप में देख और समझ रहे हैं। उनके मुताबिक सुप्रीम कोर्ट में दायर ये याचिकाएं कानून में निहित असमानता को दूर करने की एक कोशिश है, जिसे पॉजिटिव रूप में लेना चाहिए।

मामला थोड़ा जटिल तब हो गया जब केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा दायर करते हुए कहा कि शादियों से जुड़े इस मसले पर कानून बनाने का अधिकार सिर्फ संसद को है। इसलिए कोर्ट को इस मामले की सुनवाई ही नहीं करनी चाहिए क्योंकि यह उसके अधिकार क्षेत्र में नहीं आता। केंद्र की दलील थी कि शादियों का यह विषय समवर्ती सूची में आता है। इसके अलावा विभिन्न धर्मों के पर्सनल लॉ भी इससे जुड़े हैं। जाहिर है, इसमें स्टेकहोल्डर्स का दायरा काफी व्यापक है। इसलिए कोर्ट को इसमें नहीं पड़ना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने पूरी जिम्मेदारी और संवेदनशीलता का परिचय देते हुए केंद्र की इस दलील को आंशिक रूप से स्वीकार किया कि इसका दायरा काफी बड़ा है। उसने यह भी साफ कर दिया कि उसे अपनी सीमाओं का पूरा अहसास है।

इसी वजह से सुप्रीम कोर्ट की संविधान पीठ ने पर्सनल लॉ से जुड़े पहलुओं को इस सुनवाई से अलग कर दिया। जाहिर है, अब मामला स्पेशल मैरिज एक्ट के प्रावधानों को जेंडर न्यूट्रल करने की बहस तक सीमित हो गया है। हालांकि इसके बाद केंद्र सरकार ने कोर्ट में एक और आवेदन दाखिल कर कहा कि उसने समलैंगिक शादी के मुद्दे पर तमाम राज्यों और केंद्र शासित इकाइयों से बातचीत और विचार-विमर्श की प्रक्रिया शुरू कर दी है। इसलिए इस केस में राज्यों को भी पार्टी बनाया जाए और केंद्र को यह मौका दिया जाए कि वह विचार-विमर्श की इस प्रक्रिया को पूरा कर सके। देखना होगा कि यह केस आगे क्या रूप लेता है और सुप्रीम कोर्ट समलैंगिक शादी को कानूनी मान्यता दिलाने की ओर बढ़ता है या नहीं। लेकिन आधुनिक मूल्यों वाले एक खुले समाज के रूप में यह हमारी जरूरत है कि समाज के सभी वर्गों को समानता और गरिमा से युक्त जीवन सुनिश्चित करने का संकल्प कमजोर न होने दिया जाए।

पुलिस आमजन के लिए हमेशा तत्पर: रवि भदौरिया

गूंज पुलिस ऑफिसर ऑफ द मंथ में इस बार हम अपने पाठकों को बेहतर पुलिसिंग के लिए जाने जाते पुलिस ऑफिसर रवि भदौरिया से रूबरू करा रहे हैं। जिन्होंने ग्वालियर शहर में रहकर कई बड़े केस सोल्वड करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। महाराजपुरा सीएसपी श्री भदौरिया आमजन के लिए हमेशा तत्पर रहकर अपनी ड्यूटी निभाते हैं। रवि भदौरिया ने गूंज के माध्यम से अपनी जिंदगी और पुलिस किस तरह से ग्वालियर में स्मार्ट पुलिलिंग से कार्य कर रही है आदि विषयों पर हमसे बातचीत की पेश हैं बातचीत के मुख्य अंश।

आप महाराजपुर के सीएसपी हैं तो गोले का मंदिर जो चोराहा है वहाँ काफ़ी ज़्यादा ट्रैफ़िक हो जाता है, तो उसके क्या कारण हैं?

गोले का मंदिर चोराहा एक एंट्री स्पॉट है सिटी का जिसमें मुरैना और भिंड से आने वाला ट्रैफ़िक आता है और साथ में शहर का भी ट्रैफ़िक है तो वो काफ़ी बिज़ी जगह है। वहाँ के ट्रैफ़िक को मेनेज करने के लिए हमारे सब इन्स्पेक्टर हमेशा रहते हैं अराउंड द क्लोक।

आपका जो एरिया है वहाँ पर कोलेज और यूनवर्सटीज़ काफ़ी आती है जैसे एमिटी यूनिवर्सिटी हो गयी, तो जो यंस्टर्ज़ है उनके साथ आप कैसे डील करते है और आपके सामने किस तरह के केसेज़ आते है?

मेरे सरकल में एमिटी यूनिवर्सिटी और iiitm दोनों ही बहुत बड़ी संस्था है, जिसमें ऑल ओवर इंडिया से स्टूडेंट्स आते है। स्टूडेंट्स की अपनी प्राब्लम्स भी होती है, प्रेज़ेंट डेज़ में कुछ ऐसे इशूज़ भी आते है जो रिलेटेड है उनके बाहर जाने से और कुछ उनका क्रिमिनल एलिमेंट से इंटरेक्शन होने से, तो हम उनसे ज़्यादा से ज़्यादा कम्यूनिकेट करने की कोशिश करते है तो मैं खुद भी इन दोनो जगहों पर जाता हूँ और वहाँ एडमिनिसट्रेटिव और टीचर्ज़ को अपने नम्बर्ज़ भी दिए हुए है।

आज कल सोशल मीडिया का क्रेज़ चरम पर है तो आज कल बहुत सारे फ्रॉड केसेज भी आते है, इसमें Photo morphing के केसेज़ भी आते हैं और लोग इनसे कैसे बच सकते हैं?

आज़ कल सोशल मीडिया का बहुत इन्फ्लूएंस हैं, जो प्रॉब्लम है उसका सोल्यूशन भी उन्ही प्लैटफॉर्म्स पर है सारे social media प्लैटफॉर्म्स पर उसकी सिक्योरिटी मेजर्स को फ़ॉलो करना चाहिए और उन सिक्योरिटी मेजर्स को यूज़ करना चाहिए तो उससे आपके डेटा का मिसयूज़ नहीं किया जा सकता।अपनी ज़्यादा पर्सनल इन्फ़र्मेशन नहीं देनी चाहिए।

कई बार किसी के अकाउंट से पैसे निकाल लिए गए,एक ऐप होता है उसे डाउनलोड किया या लिंक पर क्लिक कर दिया अगर किसी के साथ एसा हो जाता है तो उसे क्या करना चाहिए?

यह मामले काफ़ी आते रहते है क्यूँकि आज़ कल कैश लेस सिस्टम हो गया है तो लोगों ने पैसे रखना बंद कर दिया है तो फिजिकल थेफ़्ट ,पिक पॉकेटिंग यह चीज़ें ख़त्म हो गयी है पर डिजिटल फ्रॉड बहुत हो गये है तो जिसमें हमारे पास cyber cell और cyber थाना भी है। ग्वालियर में तो स्टेट cyber cell का भी setup है, जब भी इस तरह की कोई घटना होती है तो नम्बर्ज़ और एड्रेस भी है तो वहाँ जा कर कंप्लेंट फाइल करनी चाहिए।

जो बच्चे प्रिपरेशन कर रहे है इस फ़ील्ड में आने के लिए वो कई बार गिव अप कर देते है तो आप उनको क्या गाइडेंस देना चाहेंगे?

मैं उन्हें मोटिवेट ही करूँगा इस फील्ड में जाने के लिए कंसिस्टेंसी बहुत ज़रूरी है , मोरल डाउन ना करे, लगे रहने वाले लोग सक्सेसफुल हो ही जाते हैं।

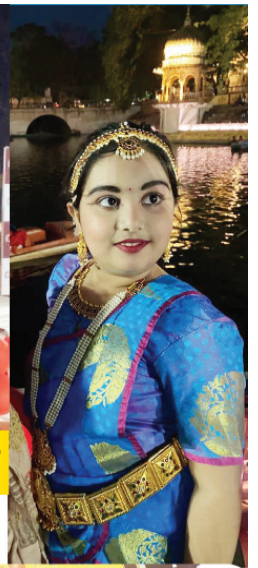

GOONJ **विश्व नृत्य दिवस पर रंगारंग कार्यक्रम, शहर की 25 संस्थाओं द्वारा दीं गईं शानदार प्रस्तुति**

बेटियों ने दी नृत्य की अद्भुत प्रस्तुतियां

ग्वालियर। विश्व नृत्य दिवस के अवसर पर गूँज 90.8 एफ एम आपकी अपनी आवाज एवं ग्वालियर नगर निगम, तिरूपति रंग शृष्टि के सयुक्त तत्वाधान में बेजाताल पर ऐतिहासिक रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्यअथिति के रूप में शहर की प्रथम नागरिक ग्वालियर महापौर डॉ. शोभा सतीश सिकरवार जी उपस्थित रही। महापौर ने प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी बच्चों एवं आयोजकों की प्रशंसा की। कार्यक्रम में महापौर ने कहा कि इस तरह के आयोजन से ग्वालियर शहर की होनहार प्रतिभाओं को आगे बढ़ने का मौका मिलेगा इस सफल आयोजन के लिए आयोजनकर्ताओं को बधाई एवं शुभकामनाएं। महापौर ने आगे कहा कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम के आयोजनों से सभी को भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति से रूबरू होने का अवसर मिलता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता गूँज ग्रुप के फाउंडर श्री जगदीश सिकरवार द्वारा की गई। उन्होने सभी को कार्यक्रम के उद्देश्यों पर विस्तार से जानकारी दी। वहीं कार्यक्रम में विशेष अथिति के रूप में वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता केशव पाण्डेय जी, पूर्व महापौर श्रीमती समीक्षा गुप्ता जी उपस्तिथ थी। कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रुप में भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश कार्यसमिति सदस्य श्री आशीष प्रताप सिंह राठौर जी, एडिशनल एस पी श्री राजेश डंडोतिया जी, नगर निगम उपायुक्त शिशिर जी, गूँज ग्रुप की डायरेक्टर कृति सिंह जी, नृत्य विशेषज्ञ श्रीमती पदमा जय शंकर जी सी ए ओ श्री हरीश पाल जी, गूँज ग्रुप के सह संपादक श्री अच्छेद्र सिंह कुशवाह आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम में बच्चों द्वारा नृत्य की शानदार प्रस्तुति पेश की गई। कार्यक्रम के अंत में 24 नृत्य शिक्षिकाओं का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन गूँज आर जे काल्पना पाल द्वारा किया एवं आभार स्तुति एवं प्रिया शिंदे द्वारा किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में श्रीलक्ष्मी शंकर , अभय बघेल, उमंग व गूँज टीम, तिरुपति रंग शृष्टि, नगर निगम की टीम आदि का विशेष योगदान रहा।

युवा पॉलिटिक्स में आगे आएं: विक्रांति भूरिया

मध्य प्रदेश की राजनीति में युवा राजनेता जिन्होंने संघर्ष और जनसेवा के पथ पर आगे बढ़कर राजनीति में एक नया मुकाम बनाया हम बात कर रहे हैं मध्य प्रदेश युवा कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष विक्रांत भूरिया की जो पिछले दिनों गूंज मीडिया हाऊस आए और गूंज को दिए इंटरव्यूह में उन्होंने अपनी जिंदगी और राजनीति से जुड़े कुछ अहम किस्से हमारे साथ शेयर किए पेश है उनसे बातचीत के मुख्य अंश।

आपने अपनी पॉलिटिक्स की जर्नी शुरू कैसे की?

यह बहुत कॉमन सवाल है जो सभी पूछते हैं, मैं सभी लिस्नर्स को बताना चाहूंगा कि मैंने एमबीबीएस किया है। उसके बाद मास्टर्स किया है। इंदौर में और डेफिनेटली यह कॉन्बिनेशन है जो कि नॉर्मल ली आप नहीं देख पाते हैं कि ऐसे डॉक्टर ऑफ एकदम से पॉलिटिक्स में एक्टिव हो जाए तो यह शुरुआत हुई थी 2010 में जब हम मास्टर्स कंप्लीट कर रहे थे। अपना इंदौर में क्योंकि स्टूडेंट के मूवमेंट्स में बहुत एक्टिव रहता था स्टूडेंट्स के राइट को लेकर हम लड़ाई करते थे महात्मा मेडिकल कॉलेज है इंदौर में उसका में 1 साल अध्यक्ष रहा। पूरे 1 साल 2010 से 2011 तक में जूनियर डॉक्टर्स का अध्यक्ष रहा। तू वहां से एक इंटरेस्ट डिवेलप डूबा और मैं आज आपके सामने हूं कांग्रेस प्रेसिडेंट के रूप में।

कई लोग तो पॉलिटिक्स में आने में बहुत हिचकते हैं उनके मन में बहुत सारे सवाल आते हैं कि आखिर कहां से स्टार्ट करेंगे कैसे स्टार्ट करेंगे तो ऐसे में आप उन्हें क्या कहना चाहेंगे इसी के साथ आपके पार्टी में जो यंगस्टर्स है उनके लिए क्या स्कोप है?

मैं सारे अपने यूथ को कहना चाहूंगा कि अगर आप अपनी लाइफ को बहुत नए लेवल पर ले जाना चाहते हैं। तो चैलेंज इज तो लेना पड़ेगा और आजकल मैं मानता हूं नॉट फॉर पॉलिटिक्स बट कोई भी फील्ड हो उसमें आपको स्ट्रगल करना ही पड़ेगा। तो आप है ना पॉलिटिक्स में आने से डरे नहीं आप अच्छे काम करिए। ऑटोमेटेकली आप अपने वर्थ इतनी पढ़ाई की पॉलीटिकल पार्टी आपको अप्रोच करें कि आप उनके पाठ बनेंगे तो उनको बहुत बड़ा बूस्ट मिलेगा इस तरह से आप ग्रैजुअली स्टार्ट करें क्योंकि पॉलिटिक्स में मैंने देखी है कि पेशंस बहुत रखना पड़ेगा आप यह सोचे कि आप आज ही पॉलिटिक्स में आए और मैं डायरेक्ट

एमएलए बन जाऊं फिर मैं एमपी बन जाऊं उसके बाद मैं मुख्यमंत्री बन जाऊं तो ऐसा नहीं होता है तो आप पेशंस रखिए और आज के समय में मैंने यूथ के अंदर पेशंस की बहुत कमी देखी है किसी भी फील्ड में आपको सक्सेस पाना है तो आपको हार्ड वर्क और पेशंस रखना जरूरी है।

एक पॉलीटिशियन के अंदर ऐसा कौन सा स्किल हो नीचे होनी चाहिए ऐसी कौन सी क्वालिटी होनी चाहिए जो उनको अच्छा पॉलीटिशियन बनाती है?

आपको रेसिलियंट होना चाहिए, आपको हार नहीं मानना है फर्स्ट आफ ऑल अगर आपने लाइफ में कोई गोल देखा है तो आपको उसके लिए इतना पागल होना पड़ेगा कि आपको उसके लिए कितना भी मेहनत करना पड़े कितना आपको अपने गोल तक पहुंचना है और इसके लिए आपको हार्ड वर्क करना पड़ेगा मैं आपको एक एग्जांपल देता हूं हम अपने कॉम्पिटेटिव एक्जाम की तैयारी करते थे हम 16 घंटे पढ़ते थे मतलब इट्स नोट जो कि 16 घंटे पढ़ रहे हैं क्योंकि अगर आपको कुछ चाहिए तो वो चाहिए वह अर्जुन वाला किस्सा है कि सिर्फ आपको आंख दिखनी चाहिए चिड़िया नहीं दिखनी चाहिए तो थोड़े बहुत सेट बैक सब बिल्कुल मत डरिए हार्ड वर्क और आपका बिजनेस क्लियर होना चाहिए लाइफ में विजन इज वेरी इंपॉर्टेंट तो क्या होता है कि मेहनत कर रहे हो पर बिना किसी गोल के कर रहे हो ना किसी एम को लेकर कर रहे हो तो आप कहीं नहीं पहुंच पाओगे आपकी सारी मेहनत बेकार हो जाएगी तो आप अपने आप अपने गोल्स पर ध्यान दीजिए बाकी सब भगवान पर छोड़ दीजिए।

जैसा आप ने बताया कि आपके फादर है वह भी पॉलिटिक्स में है तो आपके फादर ने आपको किस वेब इंस्पायरर किया है?

-देखिए उन्होंने तो कभी कोशिश नहीं की हम पॉलिटिक्स में आए क्योंकि मैं डॉक्टर बनना फिर सर्जन बना क्योंकि आप एक डॉक्टर सचिन की बात करें तो आफ्टर 12थ को मिनिमम 10 साल देने पड़ते हैं डॉक्टर की पढ़ाई के लिए मेरा एक बड़ा भाई भी है लेकिन वह पॉलिटिक्स में नहीं है वह पुलिस सर्विस में है हम दो ही भाई हैं और हम दोनों पॉलिटिक्स से बहुत दूर थे मैं तो यह डेस्टिनी मानता हूं कि ग्रैजुअली आपका इंटरेस्ट डेवलप्ड होता गया और आप कुछ करना चाहते थे इसलिए आप पॉलिटिक्स में आए बाकी फादर के साइड से कभी ऐसे प्रश्न नहीं था कि आप से पॉलिटिक्स में ही जाओ उनका यह कहना था कि आपको जो करना है वह करो तो डेफिनेटली है कि फैमिली प्रेशर कभी नहीं आया।

आप यंगस्टर को मोटिवेट करने और आकर्षित करने के लिए क्या करते हैं कि वह किस तरह से इंटरेस्ट ले?

देखिए यंगस्टर्स आप कौन गेज करना सबसे इंपॉर्टेंट है, अगर आपको यंगस्टर्स को इंग्लिश करना है तो उनकी बात करनी पड़ेगी देखी मध्य प्रदेश में 60-70परसेंट यूथ है जब तक आप स्ट्रांग यूथ पॉलिसी नहीं लेकर आएंगे एंप्लॉयमेंट क्या बात नहीं करेंगे , करप्शन फ्री स्टेट की बात नहीं करेंगे और आप भारत के निवासी हैं यह सब अगर आप पैदा नहीं करेंगे तो युद्ध आपकी तरफ अट्रैक्ट नहीं होगा। तो डेफिनेटली आपको इन सब मुद्दे पर और यीशु बेस्ट पॉलिटिक्स करें कि आप क्या कर सकते हैं ऐसा नहीं कि हम बड़े-बड़े घोषणा कर दें, बड़ी बातें करें। मैं मानता हूं कि अगर आपको यूथ को अट्रैक्ट करना है तो उनको क्लीन पॉलिटिक्स देनी पड़ेगी जिसमें भ्रष्टाचार ना हो ट्रांसपेरेंसी हो और एंप्लॉयमेंट का एक सबसे बड़ा रोल हो। क्योंकि आज का युद्ध बहुत पढ़ा लिखा है बहुत समझदार है आप उन्हें बेवकूफ नहीं बना सकते आप मुद्दे की बात करेंगे तो डेफिनेटली आपकी तरफ अट्रैक्ट होंगे।

ग्वालियर वासियों को आप अपनी तरफ से क्या मैसेज देना चाहेंगे?

-मैं यही कहना चाहता हूं कि कोई भी सपना हो तो उस सपने को बीच में छोड़ो मत सपने के पीछे आप बहुत हार्ड वर्क से पढ़ते हैं बहुत शिद्दत से पढ़ते हैं तो मैं नहीं समझता कि ऐसी कोई भी जॉब हो या फिर नौकरी हो जो आप हासिल नहीं कर सकते। आप अपने आप को लिमिट मत करो ,मेहनत करो, और सबसे इंपोर्टेंट बात गलत संगत में मत रहो ।

हीट वेबः इस साल झुलसाएगी गर्मी

धधकती धरती और कितना जलाएगी ये गर्मी ?

कुछ दिन पहले मुंबई के खारघार में लू लगने से 15 लोगों की मौत हो गई। राज्य में हीट स्ट्रोक से एक साथ इतनी मौत का पहला मामला है। देश में लू से पहले भी कई लोगों ने जान गंवाई है। हालांकि यूरोप जिसे हम एक ठंडा क्षेत्र मनाते हैं। वहां लू से हजारों लोग मारे गए। यूरोप ने पिछले साल असामान्य तापमान का सामना किया। कुछ देशों में रिकॉर्ड तापमान दर्ज किया गया। जिससे यूरोप में 15 हजार लोगों की मौत हुई। यह खुलासा विश्व मौसम विज्ञान संगठन की रिपोर्ट में हुआ है। डब्ल्यूएमओ की रिपोर्ट 21 अप्रैल को सामने आई है। ऐसा पहली बार होगा जब एक सीजन में इतनी मौतें हुई हो। ला नीना का असर अब कम हो गया है। साल 2023 को पिछले साल की तुलना में अधिक गर्म होने का अनुमान लगाया गया है। अल नीनो के कारण गर्मी बढ़ेगी और कुछ इलाकों में सूखे जैसे हालात हो सकते हैं। इस साल फरवरी का महीना भी गर्म रहा था। अप्रैल और आने वाले महीनों में लू चलने की संभावना है। मौसम विभाग का कहना है कि इस साल बारिश सामान्य रहेगी।

महाराष्ट्र भूषण सम्मान समारोह के दौरान लू लगने से 11 लोगों की मौत की खबर परेशान करने वाली है। यह महाराष्ट्र सरकार का कार्यक्रम था। मध्य अप्रैल में होने वाले इस कार्यक्रम का समय दिन में साढ़े 11 बजे से एक बजे के बीच पता नहीं क्या सोच कर रखा गया। ध्यान रहे नवी मुंबई में उस दिन अधिकतम तापमान 38 डिग्री सेल्सियस रेकॉर्ड किया गया था। इस तापमान में लोगों को कड़ी धूप में बैठे रहना पड़ा। स्वाभाविक ही कार्यक्रम समाप्त होते-होते तक 50 लोगों को लू लगने के कारण अस्पताल में भर्ती कराना पड़ गया। जाहिर है, हमारी सरकारों को ऐसे मामलों में ज्यादा संवेदनशील होने की जरूरत है। लेकिन मौसम के बदलते मिजाज से उपजे संकटों का दायरा बहुत बड़ा है। साल-दर-साल गर्म होते जा रहे मौसम से लोगों की जान को तो खतरा बढ़ ही रहा है, इकॉनमी के मोर्चे पर भी चुनौतियां बढ़ती जा रही हैं। भारत में साल 2000 से 2019 के बीच हर साल औसतन 24 दिन हीट वेव वाले रहे, जबकि उससे पहले के 20 वर्षों में औसत आंकड़ा साल में 10 दिनों का ही था। मौसम विभाग के मुताबिक मैदानी इलाकों में जब तापमान 40 डिग्री सेल्सियस से ऊपर चला जाए, तब हीट वेव की स्थिति बनती है। पहाड़ी इलाकों में तापमान 30 डिग्री सेल्सियस और तटीय इलाकों में 37 डिग्री सेल्सियस से ऊपर जाने पर ऐसी स्थिति बनती है। आश्चर्य नहीं कि साल 2010 से 2019 के बीच गर्म मौसम से मौतें करीब 30 फीसदी ज्यादा हुईं। इकॉनमी के मोर्चे पर भी हालात कम गंभीर नहीं हैं। नॉर्थ कैरोलाइना की ड्यूक यूनिवर्सिटी में हुई एक रिसर्च के मुताबिक, दिल्ली में जब तापमान बहुत बढ़ जाता है तो हर घंटे 15-20 मिनट काम का नुकसान होता है। इसीलिए यह और भी जरूरी है कि बचाव के इंतजाम अभी से शुरू कर दिए जाएं। इसके लिए कामकाज का

रिसर्च के मुताबिक भारत में हर साल गर्मी से 101 अरब मैन आवर का नुकसान होता है। आने वाले वर्षों में हालात और बदतर ही होने वाले हैं। अनुमान है कि 2030 तक गर्मी से काम के घंटों का नुकसान इतना बढ़ जाएगा कि जीडीपी को ढाई फीसदी (करीब 250 अरब डॉलर) तक की चपत लग सकती है। दिक्कत यह भी है कि भारत में वर्कफोर्स का करीब 75 फीसदी हिस्सा ऊंचे तापमान वाली जगहों पर काम करता है। पैटर्न बदलना और फैक्ट्रियों के भीतर काम करने के हालात में सुधार लाना होगा। चूंकि भारत में बड़ी आबादी को असंगठित क्षेत्र में रोजगार मिला हुआ है, इसलिए छोटी औद्योगिक इकाइयों को सबसिडी देकर उन्हें वर्कप्लेस को बेहतर बनाने के लिए प्रोत्साहित करना होगा। शहरों के विकास मॉडल पर भी मौसम के हिसाब से गौर करना होगा। सरकार को इस दिशा में प्रयास तत्काल शुरू कर देने चाहिए।

GOONJ **WORLD HERITAGE DAY**

भारत के ऐतिहासिक पर्यटन स्थल

विश्व विरासत दिवस

WORLD HERITAGE DAY

दुनियाभर में कई सारी ऐतिहासिक धरोहर मौजूद हैं, जिन्हें देखने के लिए दूर-दूर से लोग पहुंचते हैं। यह धरोहरें न सिर्फ पुरानी संस्कृति का अहसास कराती हैं, बल्कि खुद से जुड़े किस्से और कहानियों को भी बयां करती हैं। पूरे विश्व में मौजूद इन विरासतों को संभालने के मकसद से हर साल 18 अप्रैल को विश्व धरोहर दिवस मनाया जाता है। इस खास मौके पर आज हम बात करेंगे भारत में मौजूद कुछ ऐसी धरोहरों के बारे में, जहां आपको एक बार जरूर जाना चाहिए।

ताजमहल, उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश के आगरा स्थित ताजमहल को प्यार की निशानी कहा जाता है। सफेद संगमरमर बनी यह इमारत देखने बेहद खूबसूरत है। इस मकबरे को सन 1632 में मुगल सम्राट शाहजहां ने अपनी पत्नी मुमताज के मौत के बाद उनकी याद में बनवाया है। साल 1983 में यूनेस्को ने ताजमहल को विश्व धरोहर स्थलों की सूची में शामिल किया था।

कोणार्क सूर्य मंदिर, ओडिशा

भारत का ओडिशा राज्य यूं तो अपने जगन्नाथ मंदिर के लिए जाना जाता था। लेकिन यहां मौजूद कोणार्क सूर्य मंदिर भी अपनी खूबसूरती के लिए देश ही नहीं, बल्कि विदेश में भी काफी मशहूर है। भगवान सूर्य देव को समर्पित यह मंदिर राज्य का एक प्रमुख पर्यटन स्थल है, जिसे यूनेस्को ने साल 1984 में विश्व धरोहर स्थल घोषित किया था।

अजंता-एलोरा की गुफाएं, महाराष्ट्र

महाराष्ट्र के औरंगाबाद में स्थित अजंता-एलोरा की गुफाएं भी भारत के मशहूर पर्यटन स्थलों में से एक हैं। इसे देखने हर साल भारी संख्या में पर्यटक यहां पहुंचते हैं। यह घोड़े के नाल के आकार वाले पहाड़ पर बनी 26 गुफाएं हैं। यूनेस्को द्वारा इन गुफाओं को साल 1983 में विश्व धरोहर स्थलों में शामिल किया गया था।

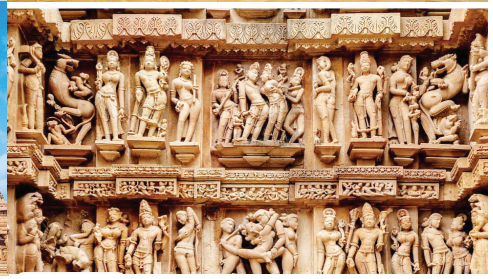

महाबलीपुरम मंदिर, तमिलनाडु

तमिलनाडु के शहर महाबलीपुरम में मौजूद महाबलीपुरम मंदिर भी विश्व धरोहर स्थलों की सूची में शामिल है। इस मंदिर में आपको पल्लव काल की कलाकृतियां देखने को मिलेगी। यही वजह है कि यहां दूर-दूर से पर्यटन आते हैं। यूनेस्को ने इस मंदिर को साल 1984 विश्व विरासत में शामिल किया था।

खजुराहो मंदिर, मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश में मौजूद खजुराहो मंदिर अपनी अनूठी कलाकृतियों के लिए दुनियाभर में काफी प्रसिद्ध है। जैन और हिंदू मंदिरों के संग्रह के साथ ही यहां आपको कामुक मूर्तियां और कलाकृतियां देखने को मिलेंगी। 20 किमी के एरिया में इस मंदिर में कुल 85 मंदिर हैं। इस मंदिर को साल 1986 में विश्व धरोहर की लिस्ट में शामिल किया गया था।

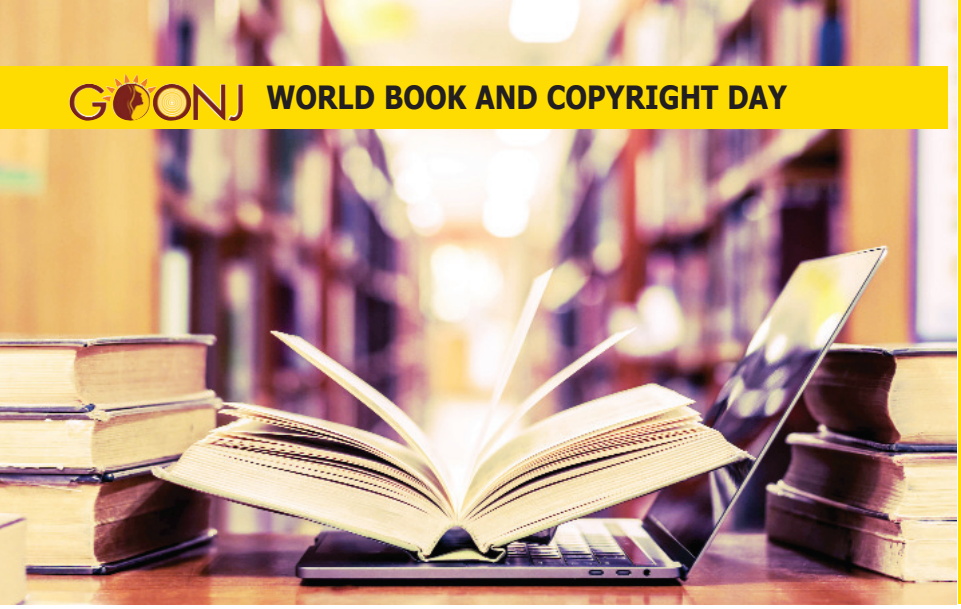

पुस्तक संस्कृति की जीवंतता से उन्नत जीवन संभव

हर साल 23 अप्रैल को दुनियाभर में पुस्तक पढ़ने की प्रेरणा देने एवं पुस्तक संकृति को जीवंत बनाये रखने के लिये विश्व पुस्तक दिवस के रूप में मनाया जाता है, इसे कॉपीराइट डे भी कहा जाता है। इस दिवस को किताबें पढ़ने, प्रकाशन और कॉपीराइट के लाभ को पहचानने और बढ़ावा देने के लिए मनाया जाता है। इस दिन कई विश्वप्रसिद्ध लेखकों का जन्मदिवस या पुण्यतिथि होती है। विलियम शेक्सपियर, मिगुएल डे सर्वेंट्स और जोसेप प्लाया का इसी दिन निधन हुआ था, जबकि मैनुएल मेजिया वल्लेजो और मौरिस ड्रून इसी दिन पैदा हुए थे। यूनेस्कों ने 23 अप्रैल 1995 को इस दिवस को मनाने की शुरुआत की थी। पैरिस में यूनेस्को की एक आमसभा में फैसला लिया गया था कि दुनियाभर के लेखकों का सम्मान करने, उनको श्रद्धांजली देने और किताबों के प्रति रुचि जागृत करने के लिए इस दिवस को मनाया जाएगा।

पुस्तकों को ज्ञान का बाग भी कहा जाता है। यदि कोई इन पुस्तकों से सच्ची दोस्ती कर ले तो यकीन मानिए उसे जीवन भर का ज्ञान और हर समस्या का समाधान कुछ ही समय में मिल जाता है। रबींद्रनाथ टेगौर ने कहा, 'उच्च शिक्षा वो है जो न केवल सूचनाएं देता है बल्कि हमारी जिंदगी को शांतिप्रिय भी बनाता है'। समस्याओं एवं परेशानी के दौर में यह पुस्तक दोस्ती का पूरा फर्ज निभाती हैं। शायद यही कारण है कि हर मुश्किल घड़ी में कई पुस्तक प्रेमी इन्हीं पुस्तकों के साथ ज्यादा से ज्यादा समय बिताते हैं। कोरोना महासंकट में यह बात विशेष रूप से देखने को मिली थी।

पुस्तक का महत्व सार्वभौमिक, सार्वकालिक एवं सार्वदैशिक है, किसी भी युग या आंधी में उसका महत्व कम नहीं हो सकता, इंटरनेट जैसी अनेक आंधियां आयेगी, लेकिन पुस्तक संस्कृति हर आंधी में अपनी उपयोगिता एवं प्रासंगिकता को बनाये रख सकेगी। क्योंकि पुस्तकें पढ़ने का कोई एक लाभ नहीं होता। पुस्तकें मानसिक रूप से मजबूत बनाती हैं तथा सोचने समझने के दायरे को बढ़ाती हैं। पुस्तकें नई दुनिया के द्वार खोलती हैं, दुनिया का अच्छा और बुरा चेहरा बताती, अच्छे बुरे का विवेक पैदा करती हैं, हर इंसान के अंदर सवाल पैदा करती हैं और उसे मानवता एवं मानव-मूल्यों की ओर ले जाती हैं। यही कारण ने अच्छी पुस्तकों को प्रोत्साहन देने के लिये सर्वोदय साहित्य भंडार की स्थापना खुद विनोबा भावे ने 1960 में की थी। यहां महात्मा गांधी और विनोबा भावे की किताबों के अलावा भारतीय ज्ञानपीठ की किताबें प्रमुखता से उपलब्ध हैं। यहां चुनिंदा रचनाकारों व प्रकाशकों की ही पुस्तकें रखी जाती हैं। इस साहित्य भंडार का उद्देश्य है युवाओं को ज्ञानवान, संस्कारित और चरित्रवान बनाना। यहां बाल साहित्य भी उपलब्ध है। इसी तरह आचार्य श्री तुलसी ने

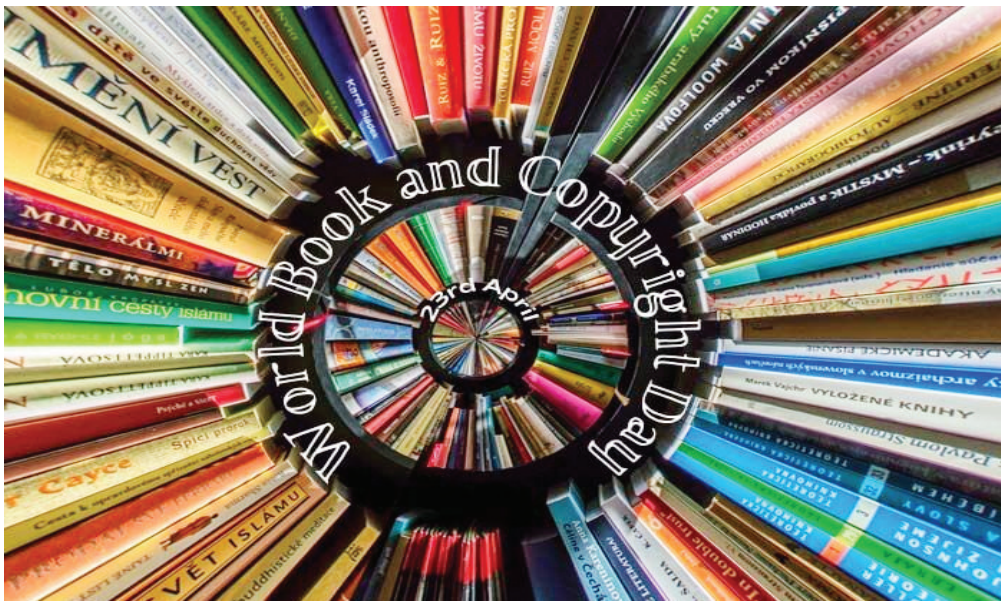

नैतिक साहित्य को जन-जन तक पहुंचाने के लिये आदर्श साहित्य संघ की स्थापना आजादी के तुरन्त बाद की।ज

किताबों का अस्तित्व खत्म नहीं हो सकता। आधुनिकता की बात करें तो भी यह बात हर वक्त संभव नहीं कि किताबों के स्थान पर लैपटॉप आदि से पढ़ा जाए। किताबें हर वक्त साथ निभाती हैं फिर चाहे वह बाल साहित्य हो या धार्मिक ग्रंथ। किताबों की दोस्ती हमेशा साथ निभाती है। किताबों का क्रेज कभी कम नहीं हो सकता। जिन्हें पुस्तकों में दिलचस्पी है वे किताब पढ़े बिना संतुष्ट नहीं होते भले ही किताब में लिखी बात अन्य मीडिया के माध्यम से वे जान चुके हों। किसी व्यक्ति की किताबों का संकलन देखकर ही आप उसके व्यक्तित्व का अंदाजा लगा सकते हैं। कहते हैं कि किताबें ही आदमी की सच्ची दोस्त होती हैं और दोस्तों से ही आदमी की पहचान भी। किताबों में ही किताबों के बारे में जो लिखा है वह भी बहुत उल्लेखनीय और विचारोत्तेजक है। मसलन टोनी मोरिसन ने लिखा है- 'कोई ऐसी पुस्तक जो आप दिल से पढ़ना चाहते हैं, लेकिन जो लिखी न गई हो, तो आपको चाहिए कि आप ही इसे जरूर लिखें।' मनुष्य के अंदर मानवीय मूल्यों के भंडार में वृद्धि करने में पुस्तकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। ये पुस्तकें ही हैं जो बताती हैं कि विरोध करना क्यूँ जरूरी है। ये ही व्यवस्था विरोधी भी बनाती हैं तो समाज निर्माण की प्रेरणा देती है। समाज में कितनी ही बुराइयां व्याप्त हैं उनसे लड़ने और उनको खत्म करने का काम पुस्तकें ही करवाती हैं। शायद ये पुस्तकें ही हैं जिन्हें पढ़कर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आज दुनिया की एक महाशक्ति बन गये हैं। वे स्वयं तो महाशक्ति बने ही है, अपने देश के हर नागरिक को शक्तिशाली बनाना चाहते हैं, इसीलिये उन्होंने देश भर में एक पुस्तक-पठन तथा पुस्तकालय आंदोलन का आह्वान किया है, जिससे न सिर्फ लोग साक्षर होंगे, बल्कि सामाजिक व आर्थिक बदलाव भी आएगा।

पुण्य कमाने वाली चारधाम यात्रा का महत्व

चारधाम यानी बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री की यात्रा शुरू हो गई है। वेद एवं पुराणों में चार धाम यात्रा को बहुत ही शुभ माना गया है। मान्यता है कि जो व्यक्ति चार धाम की यात्रा करता है, उसे समस्त पापों से मुक्ति प्राप्त हो जाती है। साथ ही जीवन में आ रही सभी समस्याएं दूर हो जाती हैं। बता दें कि हिंदू धर्म में दो प्रकार की चार धाम यात्रा की जाती है। एक बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री की यात्रा और दूसरा बद्रीनाथ, जगन्नाथ, रामेश्वरम और द्वारका धाम की यात्रा। यह सभी पवित्र धाम देश के विभिन हिस्सों में मौजूद हैं, जिसके कारण इसे बड़ा चार धाम यात्रा भी कहा जाता है। आइए जानते हैं, क्या है चार धाम यात्रा का महत्व और इससे जुड़ी कुछ रोचक बातें?

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, बद्रीनाथ धाम को सृष्टि का आठवां वैकुंठ भी कहा जाता है। यहां भगवान विष्णु छह महीने विश्राम करने के लिए आते हैं। साथ ही केदारनाथ धाम में भगवान शंकर विश्राम करते हैं। केदारनाथ में दो पर्वत हैं, जिन्हें नर और नारायण नाम से जाना जाता है। वह भगवान विष्णु के 24 अवतारों में से हैं। माना यह भी जाता है कि केदारनाथ धाम के दर्शन के बाद ही बद्रीनाथ धाम के दर्शन किए जाते हैं। ऐसा करने से ही पूजा का पूर्ण फल प्राप्त होता है।

शास्त्रों में बताया गया है कि चार धाम यात्रा करने से व्यक्ति को जीवन और मरण के चक्र से मुक्ति प्राप्त हो जाती है। एक कहावत यह भी कहा गया है की जो व्यक्ति एक बार भी बद्रीनाथ के दर्शन करता है, उसे उदर यानि गर्भ में नहीं जाना पड़ता है। शिव पुराण में बताया गया है कि केदारनाथ ज्योतिर्लिंग का पूजन करने के बाद जो व्यक्ति जल ग्रहण कर लेता है, उसे दोबारा जन्म नहीं लेना पड़ता है। देश के हर कोने में प्रसिद्ध चार धाम की यात्रा करने से व्यक्ति को विभिन्न क्षेत्रों की भाषा, इतिहास, धर्म इत्यादि और उस जगह से जुड़ी परंपरा आदि से परिचित होने का मौका मिलता है। इससे आत्मज्ञान में वृद्धि होती है। अधिकांश लोग बुढ़ापे में तीर्थ यात्रा करते हैं, लेकिन जो लोग जवानी में ही इस तीर्थ यात्रा को पूरा कर लेते हैं, उन्हें परम ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। तीर्थ यात्रा में व्यक्ति को अधिकांश समय पैदल चलना पड़ता है। जिससे शरीर में ऊर्जा बढ़ती है और ऐसा करने से आयु में वृद्धि होती है। इसलिए शास्त्रों में भी कहा गया है कि जो लोग चार धाम की यात्रा करते हैं, उन्हें आरोग्यता एवं आयु का आशीर्वाद प्राप्त होता है और वह आजीवन कई प्रकार की शारीरिक समस्याओं से दूर रहते हैं।

केदारनाथ

भगवान शिव का मंदिर केदारनाथ में है। यह समुद्र तल से 3,584 मीटर की ऊंचाई पर है। यहां मंदाकिनी नदी है। केदारनाथ धाम भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। गांधी सरोवर, फाटा, सोन प्रयाग, त्रियुगी नारायण मंदिर, चंद्रपुरी, कालीमठ, वासुकी ताल, शंकराचार्य समाधि, गौरीकुंड।

बद्रीनाथ

बद्रीनाथ अलकनंदा नदी के बाएं से समुद्र तल से 3133 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यहां भगवान विष्णु का मंदिर है। पांडुकेश्वर, योगध्यान बद्री मंदिर, माणा गांव, सतोपंथ झील, तप्त कुंड, नीलकंठ शिखर, चरण पादुका, माता मूर्ति मंदिर, नारद कुंड, भीम पुल, गणेश गुफा, ब्रह्म कपाल, शेषनेत्र, व्यास गुफा आदि।

GOONJ WORLD EARTH DAY

मानव जीवन को बचाने के लिये पृथ्वी संरक्षण जरूरी

पृथ्वी सभी ग्रहों में से अकेला ऐसा ग्रह है जिसपर अभी तक जीवन संभव हैं। मनुष्य होने के नाते, हमें प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग को कम करने वाली गतिविधियों में सख्ती से शामिल होना चाहिए और पृथ्वी को बचाना चाहिए क्योंकि यदि पृथ्वी रहने के लायक नहीं रही तो मनुष्य का विनाश निश्चित है। प्रदूषण और स्मॉग जैसी समस्याओं से निपटने के लिए पृथ्वी दिवस विश्व भर में मनाया जाता है। वहीं, लोगों को संदेश देने के लिए सरकार द्वारा कुछ बेसिक थीम भी तय किए जाते हैं। हर साल प्रकृति एवं पर्यावरण चुनौतियों को ध्यान में रख कर पृथ्वी दिवस के लिए एक खास थीम रखी जाती है और उस थीम के अनुसार टारगेट अचीव करने का प्रयास किया जाता है। इस बार विश्व पृथ्वी दिवस की थीम 'इन्वेस्ट इन अवर प्लैनेट' है। पृथ्वी दिवस या अर्थ डे जैसे शब्द को दुनिया के सामने लाने वाले सबसे पहले व्यक्ति थे- जूलियन कोनिग। दरअसल, उनका जन्मदिन 22 अप्रैल को होता था। इसी वजह से पर्यावरण संरक्षण से जुड़े आंदोलन की शुरुआत भी उन्होंने इसी दिन की और इसे अर्थ डे का नाम दे दिया।

सवाल यह है कि धरती का तापमान बढ़ते जाने के प्रमुख कारण क्या हैं? 'प्रदूषण मुक्त सांसें' पुस्तक के मुताबिक इसका सबसे अहम कारण है ग्लोबल वार्मिंग, जो तमाम तरह की सुख-सुविधाएं व संसाधन जुटाने के लिए किए जाने वाले मानवीय क्रियाकलापों की ही देन है। पैट्रोल, डीजल से उत्पन्न होने वाले धुएं ने वातावरण में कार्बन डाईऑक्साइड तथा ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा को खतरनाक स्तर तक पहुंचा दिया है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि वातावरण में पहले की अपेक्षा 30 फीसदी ज्यादा कार्बन डाईऑक्साइड मौजूद है, जिसकी मौसम का मिजाज बिगाड़ने में अहम भूमिका है।

प्रकृति पिछले कुछ समय से बार-बार भयानक आंधियों, तूफान और ओलावृष्टि के रूप में यह गंभीर संकेत देती रही है कि विकास के नाम पर हम प्रकृति से भयानक तरीके से जिस तरह का खिलवाड़ कर रहे हैं, उसके परिणामस्वरूप मौसम का मिजाज कब कहां किस कदर बदल जाए, कुछ भी भविष्यवाणी करना मुश्किल होता जा रहा है। ग्लोबल वार्मिंग के चलते दुनियाभर में मौसम का मिजाज किस कदर बदल रहा है, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि उत्तरी ध्रुव के तापमान में एक-दो नहीं बल्कि करीब 30 डिग्री तक की बढ़ोतरी देखी गई। मौसम की प्रतिकूलता साल दर साल किस कदर बढ़ती जा रही है, यह इसी से समझा जा सकता है कि कहीं भयानक सूखा तो कहीं बेमौसम अत्यधिक वर्षा, कहीं जबरदस्त बर्फबारी तो कहीं कड़ाके की ठंड, कभी-कभार ठंड में गर्मी का अहसास तो कहीं तूफान और कहीं भयानक प्राकृतिक आपदाएं, ये सब प्रकृति के साथ हमारे खिलवाड़ के ही दुष्परिणाम हैं और हमें यह सचेत करने के लिए पर्याप्त हैं कि अगर हम इसी प्रकार प्रकृति के संसाधनों का बुरे तरीके से दोहन करते रहे तो हमारे भविष्य की तस्वीर कैसी होने वाली है।

हालांकि प्रकृति कभी समुद्री तूफान तो कभी भूकम्प, कभी सूखा तो कभी अकाल के रूप में अपना विकराल रूप दिखाकर हमें चेतावनी भी देती रही है किन्तु जलवायु परिवर्तन से निपटने के नाम पर वैश्विक चिंता व्यक्त करने से आगे हम शायद कुछ करना ही नहीं चाहते। हिन्दी अकादमी दिल्ली के सौजन्य से प्रकाशित पुस्तक 'प्रदूषण मुक्त सांसें' के अनुसार हम यह समझना ही नहीं चाहते कि पहाड़ों का सीना चीरकर हरे-भरे जंगलों को तबाह कर हम जो कंक्रीट के जंगल विकसित कर रहे हैं, वह वास्तव में विकास नहीं बल्कि विकास के नाम पर हम अपने विनाश का ही मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। पहाड़ों में बढ़ती गर्माहट के चलते हमें अक्सर घने वनों में भयानक आग लगने की खबरें सुनने को मिलती रहती हैं। पहाड़ों की इसी गर्माहट का सीधा असर निचले मैदानी इलाकों पर पड़ता है, जहां का पारा अब हर वर्ष बढ़ता जा रहा है।

धरती का तापमान यदि इसी प्रकार साल दर साल बढ़ता रहा तो आने वाले वर्षों में हमें इसके बेहद गंभीर परिणाम भुगतने को तैयार रहना होगा क्योंकि हमें यह बखूबी समझ लेना होगा कि जो प्रकृति हमें उपहार स्वरूप शुद्ध हवा, शुद्ध पानी, शुद्ध मिट्टी तथा ढ़ेरों जनोपयोगी चीजें दे रही है, अगर मानवीय क्रियाकलापों द्वारा पैदा किए जा रहे पर्यावरण संकट के चलते प्रकृति कुपित होती है तो उसे सब कुछ नष्ट कर डालने में पल भर की भी देर नहीं लगेगी। करीब दो दशक पहले देश के कई राज्यों में जहां अप्रैल माह में अधिकतम तापमान औसतन 32-33 डिग्री रहता था, अब वह 40 के पार रहने लगा है। मौसम विभाग का तो अनुमान है कि अगले तीन दशकों में इन राज्यों में तापमान में वृद्धि 5 डिग्री तक दर्ज की जा सकती है और इसी प्रकार तापमान बढ़ता रहा तो एक ओर जहां जंगलों में आग लगने की घटनाओं में बढ़ोतरी होगी, वहीं धरती का करीब 20-30 प्रतिशत हिस्सा सूखे की चपेट में आ जाएगा तथा एक चौथाई हिस्सा रेगिस्तान बन जाएगा, जिसके दायरे में भारत सहित दक्षिण पूर्व एशिया, मध्य अमेरिका, दक्षिण आस्ट्रेलिया, दक्षिण यूरोप इत्यादि आएंगे।

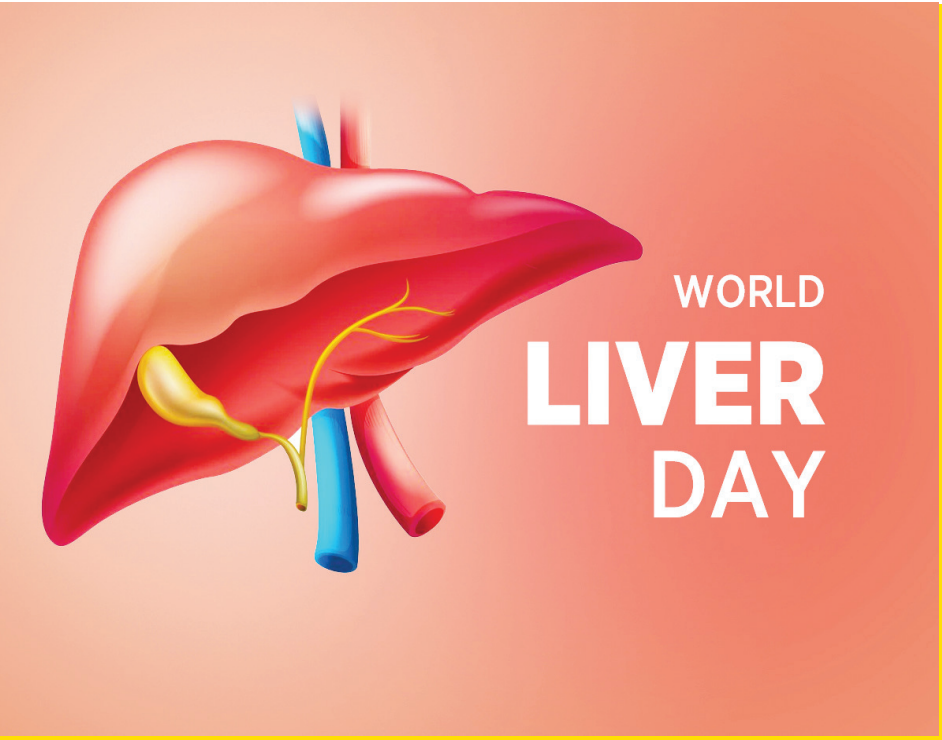

GOONJ WORLD LIVER DAY

स्वस्थ लिवर के लिए अपनी जीवनशैली में करें बदलाव

हर साल 19 अप्रैल को वर्ल्ड लिवर डे के रूप में मनाया जाता है। इस दिन को मनाने के पीछे का उद्देश्य लोगों में लिवर की बीमारियों के बारे में जागरुग करना होता है। बता दें कि मस्तिष्क के बाद लिवर शरीर का दूसरा सबसे बड़ा और अहम अंग है। लिवर पाचन, चयापचय, पोषक तत्वों के भंडारण, प्रतिरक्षा प्रणाली और पोषक तत्वों के उत्सर्जन के लिए जिम्मेदार है। लिवर को स्वस्थ और मजबूत रखने से ही कई गंभीर बीमारियों के बचाव हो जाता है। क्योंकि हम जो भी खाते-पीते हैं, वह सब लिवर से होकर जाता है। यह एक ऐसा अंग है जिसकी अगर ठीक से देखभाल न की जाए तो वह आसानी से क्षतिग्रस्त हो जाता है।

लिवर या यकृत से संबंधित बीमारी के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए हर साल 19 अप्रैल को विश्व लिवर दिवस मनाया जाता है। शरीर के अन्य हिस्सों की तरह लिवर भी हमें स्वस्थ्य रखने में काफी अहम भूमिका निभाता है। इसलिए उसका ख्याल रखना भी बेहद आवश्यक है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान के मुताबिक मस्तिष्क को छोड़कर लिवर शरीर का दूसरा सबसे बड़ा और सबसे जटिल अंग है, यह शरीर के पाचन तंत्र का एक प्रमुख अंग है। हम जो कुछ भी खाते या पीते हैं, चाहे वह भोजन हो, दवा या फिर कुछ और, इससे शरीर में उत्पन्न होने वाले विषाक्त पदार्थों और आंतों द्वारा अवशोषित हानिकारक पदार्थों को संभालने के लिए लिवर से होकर गुजरता है। इसके लिए लिवर को सबसे ज्यादा जिम्मेदार ठहराया जाता है। बिना लिवर के हम जीवित नहीं रह सकते। लिवर लगभग 300 से ज्यादा विभिन्न प्रकार के कार्य हमारे शरीर में करता है जैसे रक्त में शर्करा को नियंत्रण करना, विषाक्त पदार्थ को अलग करना, ग्लूकोज को ऊर्जा में बदलना, प्रोटीन पोषण की मात्रा को संतुलन करना आदि।

शरीर का यह ऐसा महत्वपूर्ण अंग है जिसकी अगर आप अच्छी तरह से देखभाल नहीं करते हैं तो यह आसानी से क्षतिग्रस्त हो सकता है। कई बार हम अनजाने में या फिर गलत आहार के चलते भी गंभीर परिणाम देखने को मिल सकते हैं। लिवर ऐसे सैकड़ों जटिल कार्य करता है, जिनमें शामिल हैं- संक्रमण और बीमारी से लड़ना, रक्त शर्करा का विनियमन, शरीर से विषाक्त पदार्थों को निकालना, कोलेस्ट्रॉल के स्तर को नियंत्रित करना, रक्त को थक्का जमने में मदद करना, पित्त का विमोचन अर्थात पाचन में सहायता करता है।

एक हेल्दी लिवर पाने के लिए अपने डाइट और जीवनशैली में बदलाव कर सकते हैं। लिवर को स्वस्थ रखने के लिए नियमित व्यायाम करें और स्वस्थ आहार लें। सभी खाद्य समूहों के खाद्य पदार्थ खाएं जिनमें अनाज, प्रोटीन, डेयरी उत्पाद, फल, सब्जियां और वसा शामिल हो। ऐसे खाद्य पदार्थ खाएं जिनमें बहुत सारे फाइबर हों जैसे ताजे फल और सब्जियां, साबुत अनाज की ब्रेड, चावल और अनाज। लहसुन, अंगूर, गाजर, हरी पत्तेदार सब्जियां, सेब और अखरोट खाएं। नींबू का रस और ग्रीन टी लें। शराब, धूम्रपान और नशीले पदार्थों को ना कहें, शराब, धूम्रपान और ड्रग्स लिवर की

कोशिकाओं को नुकसान पहुंचा सकते हैं। यहां तक कि पैसिव स्मोकिंग के शिकार भी न बनें। जहरीले रसायनों से सावधान रहें, एरोसोल और सफाई उत्पादों और कीटनाशकों जैसे रसायन, जहरीले पदार्थ पैदा करते हैं जो यकृत कोशिकाओं को घायल कर सकते हैं।

व्यक्ति को नियमित रूप से एक्सरसाइज करनी चाहिए। एक्सरसाइज करने से न केवल शरीर स्वस्थ रह सकता है बल्कि लिवर की चर्बी भी कम हो सकती है। एक्सरसाइज करने से लिवर के काम पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। वजन नियंत्रण में रखेंगे तो नॉन-अल्कोहल फैटी लिवर रोग को रोकने में मदद मिल सकती है। साथ ही बहुत सारी रोगों के फैलाव से बचाव होगा। ज्यादा शराब का सेवन न करें। यह लिवर की कोशिकाओं को नुकसान पहुंचा सकता है और सिरोसिस में सूजन पैदा कर सकता है, जो घातक हो सकता है। लिवर की बीमारी का आमतौर पर तब तक कोई स्पष्ट संकेत या लक्षण नहीं दिखता है जब तक कि यह काफी जटिल न हो और लिवर क्षतिग्रस्त न हो जाए। इस स्तर पर, संभावित लक्षण भूख में कमी, वजन घटने और पीलिया आदि हैं।

लिवर शरीर के महत्वपूर्ण अंगों में से एक है। वहीं इसका कार्य भोजन को पचाना होता है। लिवर का काम ब्लड शुगर को नियंत्रित रखने और प्रोटीन बनाने का भी होता है। शरीर के विकास के लिए प्रोटीन की आवश्यकता होती है। भोजन से भी पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन की जरूरतें शरीर में पूरी नहीं हो पाती हैं। इसलिए लिवर प्रोटीन का उत्पादन करता है और यहां तक कि एंजाइमों और रसायनों को रक्त के थक्के बनाने में मदद करता है, जो कि रक्तस्राव को रोकने के लिए जरूरी होता है। जिन लोगों में लिवर अस्वस्थ होता है, उन्हें रक्तस्राव आसानी से हो सकता है। इसके अलावा लिवर पित्त बनाने के साथ-साथ शरीर से विषैले पदार्थ निकालने और बॉडी को डिटॉक्स करने के काम भी आता है। ऐसे में यदि आप अनहेल्दी चीजों का सेवन करते हैं तो इससे लिवर का कार्य प्रभावित होता है और उसके खराब होने का खतरा बढ़ सकता है। अनहेल्दी खाद्य पदार्थ लिवर की कोशिकाओं को नुकसान पहुंचा सकते हैं। लिवर को स्वस्थ रखना है तो आप धूम्रपान, एल्कोहल, जंक फूड, प्रोसेस फूड, फास्ट फूड आदि से दूर रहें।

काफी गरीबी में बीता इसरो प्रमुख के. सिवन का बचपन कभी पढ़ाई के लिए भी नहीं होते थे पैसे

इसरो के अध्यक्ष के रूप में देश को अपनी सेवा दे चुके के सिवन किसी पहचान के मोहताज नहीं है। के सिवन का पूरा नाम कैलाशावादिवो सिवन है। वह एक भारतीय अंतरिक्ष वैज्ञानिक के तौर पर काम कर रहे हैं। सिवन ने भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन यानि इसरो के प्रमुख के रूप में भी सेवाएं दी हैं। इतना ही नहीं वह अंतरिक्ष आयोग के अध्यक्ष भी रहे हैंभी रहे हैं। आज ही के दिन यानि की 14 अप्रैल को के सिवन का जन्म हुआ था। आइए जानते हैं उनके जन्मदिन के मौके पर के सिवन की जिंदगी से जुड़ी कुछ अहम बातों के बारे में...

जन्म और शिक्षा

तमिलनाडु में 14 अप्रैल 1957 को के सिवन का जन्म हुआ था। उनके पिता का नाम कैलाशवडीवू और माता का नाम चेल्लम है। के सिवन गरीब किसान परिवार से ताल्लुक रखते थे। इसलिए उनका बचपन काफी संघर्षों में बीता। गांव में रहने के कारण के सिवन की शुरुआती शिक्षा गांव के ही एक गवर्नमेंट स्कूल से हुई। सरकारी स्कूल से 8वीं तक पढाई करने के बाद उनके सामने आर्थिक संकट आने लगा। कई बार उनके पास पढ़ाई के लिए भी पैसे नहीं हुआ करते थे। लेकिन सिवन ने विपरीत परिस्थितियों के सामने कभी घुटने नहीं टेके।

पढ़ाई को जारी रखने के लिए सिवन बाजार जाकर आमों की ब्रिक्री करते थे। इस दौरान उनको जो पैसे मिलते उसी से उन्होनें अपनी पढ़ाई को जारी रखा। नागेरकोयल के एसटी हिंदू कॉलेज से के सिवन ने बीएससी की डिग्री हासिल की। वह अपने परिवार के पहले ऐसे सदस्य थे जिसने ग्रेजुएशन तक पढ़ाई की थी। इसके बाद साल 1980 में सिवन ने मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से अपनी एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई कंप्लीट की। वह पढ़ाई में काफी

अच्छे हुआ करते थे। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस से सिवन ने इंजीनियरिंग में पोस्ट ग्रेजुएशन कंप्लीट किया। इसके अलावा साल 2006 में आईआईटी बांबे से एयरोस्पेस इंजीनियरिंग में पीएचडी की डिग्री भी हासिल की। अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद सिवन साल 1982 में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन यानि इसरो के साथ काम करने लगे। बता दें कि इसरो में काम करने के दौरान सिवन ने पोलर सेटेलाइट लांच व्हीकल परियोजना में भी अपना अहम योगदान दिया। जिसके बाद साल 2011 में सिवन को जीएसएलवी परियोजना का निदेशक पद की जिम्मेदारियां सौंपी गईं। उनके अच्छे काम को देखते हुए सिवन को साल 2014 में इसरो के लिक्विड प्रोपल्शन सिस्टम सेंटर का निदेशक बनाया गया।

इसके कुछ समय बाद के सिवन को साल 2015 में विक्रम साराभाई स्पेस सेंटर के निदेशक बनाया गया। वहीं साल 2018 में के सिवन इसरो के मुखिया बने। इसके अलावा सिवन के नाम एक और रिकॉर्ड भी दर्ज है। साल 2017 में इंडिया की तरफ से एक साथ 104 उपग्रहों को प्रक्षेपित किए जाने में के सिवन ने अहम योगदान दिया था। इसके अलावा साल 2019 को चंद्रयान-2 को उड़ान भरना था। लेकिन उसमें तकनीकी खराबी होने के कारण इसकी उड़ान को रोक दिया गया था। जिसके बाद 24 घंटे के अंदर चंद्रयान-2 की खराबी को दूरकर इसे फिर से लांच किया गया।

अंतरिक्ष में गूंजा सारे जहां से अच्छा

अपनी पर्सनल लाइफ के बारे में बात करते हुए के सिवन बताते हैं कि उनका बचपन काफी गरीबी में बीता था। वह हमेशा धोती पहना करते थे। के सिवन ने बताया कि उन्होंने पहली बार एमआईटी में पेंट पहना था। सिवन ने बताया कि वह इतने गरीब थे कि उनके भाई और दो बहनें अपनी शिक्षा पूरी नहीं कर पाई। 15 जनवरी 2022 में के सिवन इसरो के अध्यक्ष पद से रिटायर हुए थे।

विश्व स्वास्थ्य दिवसः कोरोना की जंग के स्वास्थ्य योद्धाओं को सलाम

हर वर्ष 7 अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य संगठन की वर्षगांठ को विश्व स्वास्थ्य दिवस के रूप में मनाया जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की स्थापना 7 अप्रैल 1948 को हुआ था। आज विश्व के करीब 200 से ज्यादा देश कोरोना महामारी से जूझ रहे हैं और ऐसे समय में सात अप्रैल को मनाया जाने वाले विश्व स्वास्थ्य दिवस का महत्व और भी ज्यादा बढ़ जाता है। आज दुनियाभर के स्वास्थ्यकर्मी कोरोना वायरस से संक्रमित लोगों की सेवा में और उनकी जान बचाने में लगे हैं। इस दिवस की शुरुआत 1950 में विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा की गई थी।

प्रत्येक वर्ष स्वास्थ्य दिवस की एक थीम तय कर स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता कार्यक्रम चलाए जाते हैं। कोरोना की वैश्विक महामारी को देखते हुए इस वर्ष की थीम नर्सों और मिडवाइव्स यानी दाइयों का योगदान रखी गई है। इस बार की थीम महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस बार डब्लूएचओ ने कोविड 19 यानी कोरोना महामारी के खिलाफ इस जंग में दुनियाभर के संक्रमित लोगों को स्वस्थ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली नर्सों और मिडवाइव्स के योगदान को सम्मान देने की कोशिश की है। विश्व की बड़ी आबादी कोरोना वायरस की वजह से फैली महामारी का प्रकोप झेल रही है। विश्वभर में इससे 13 लाख से ज्यादा लोग संक्रमित हैं, जिनमें सबसे ज्यादा संक्रमित अमेरिका, इटली, स्पेन, चीन और ब्रिटेन आदि देशों में हैं। विश्व में 71 हजार से ज्यादा लोगों की मौत कोरोना से हो चुकी है। वहीं भारत में देखा जाए तो इससे संक्रमित होने वालों और मरनेवालों की संख्या हर दिन बढ़ रही है। इस कोरोना संकट के बीच विश्व स्वास्थ्य दिवस का महत्व और भी बढ़ जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन निरंतर नज़र बनाये हुए है और समय-समय पर एडवाइजरी जारी कर रहा है।

कोरोना की जंग में विश्व की सरकारें प्रशासन, पुलिस की अहम भूमिका के साथ रात-दिन जुटे हुए हैं। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के अस्पतालों के डॉक्टर, नर्सिंग स्टाफ, सफाई कर्मियों की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। रात-दिन कार्य कर अपनी परवाह नहीं कर अथक सेवाओं से कोरोना मरीजों के बीच रह कर उन्हें सम्भाल रहे हैं, इलाज कर रहें हैं, कोरोना मुक्त करने में लगे हैं। साथ ही आशा सहयोगिनी और स्वास्थ्य वर्कर्स भी दिन रात एक किये हैं।

जहाँ स्वास्थ्य कर्मियों की सेवाएं ईश्वरीय वरदान हैं वहीं कुछ लोग इन से दुर्व्यवहार करने से भी बाज नहीं आ रहे हैं। ऐसे लोगों को समझना चाहिए कि वे इनका अपमान करते हैं तो ईश्वर का ही अपमान करते हैं। ये जोखिम उठा कर, अपने और अपने परिवार की चिंता न कर ऐसे विकट समय में चिकित्सीय कर्म के साथ सेवा भावना से कोरोना मरीजों की सेवाएं कर रहे हैं। प्रधानमंत्री जी ने स्वयं इनकी सेवाओं एवं इनके प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए आह्वान किया। आइये विश्व स्वास्थ्य दिवस पर कोरोना से लड़ रहे स्वास्थ्य योद्धाओं के प्रति अपना सम्मान प्रकट कर हौसला अफजाई करें और इनकी मानवीय सेवाओं का सम्मान करें।

पंजाब की राजनीति के शिखर पुरुष थे प्रकाश सिंह बादल

प्रकाश सिंह बादल जीवन या राजनीति के क्षेत्र में आसानी से हार मानने वालों में से नहीं थे। पिछले साल ही, शिरोमणि अकाली दल (शिअद) ने विधानसभा चुनाव के लिए पंजाब के मुक्तसर जिले में लंबी सीट से उन्हें उम्मीदवार बनाया था। प्रकाश सिंह बादल यह चुनाव भले हार गए थे, लेकिन देश में चुनाव लड़ने वाले सबसे उम्रदराज व्यक्ति होने के नाते रिकॉर्ड बुक में उनका नाम दर्ज हो गया। बठिंडा जिले के बादल गांव के सरपंच बनने के साथ शुरू हुए लंबे राजनीतिक करियर में यह उनकी 14वीं चुनावी लड़ाई थी। बादल एक अलग पंजाबी भाषी राज्य के लिए चलाए गए आंदोलन का हिस्सा भी रहे। पंजाब के पांच बार मुख्यमंत्री रह चुके बादल का चंडीगढ़ के पास मोहाली के एक निजी अस्पताल में निधन हो गया। सांस लेने में परेशानी होने के बाद उन्हें नौ दिन पहले ही अस्पताल में भर्ती कराया गया था। वह 95 वर्ष के थे। पंजाब की राजनीति के दिग्गज नेता बादल पहली बार 1970 में मुख्यमंत्री बने और उन्होंने एक गठबंधन सरकार का नेतृत्व किया, जिसने अपना कार्यकाल पूरा नहीं किया। इसके बाद वह 1977-80, 1997-2002, 2007-12 और 2012-2017 में भी राज्य के मुख्यमंत्री रहे। बादल 11 बार विधायक रहे और केवल दो बार राज्य विधानसभा का चुनाव हारे। वर्ष 1977 में वह केंद्र में कृषि मंत्री के रूप में मोरारजी देसाई की सरकार में थोड़े समय के लिए शामिल हुए। अपने राजनीतिक जीवन के आखिरी दौर में 2008 में बादल ने अकाली दल की बागडोर बेटे सुखबीर सिंह बादल को सौंप दी, जो उनके अधीन पंजाब के उपमुख्यमंत्री भी बने। प्रकाश सिंह बादल का जन्म आठ दिसंबर 1927 को पंजाब के बठिंडा के अबुल खुराना गांव में हुआ था। बादल ने लाहौर के फॉरमैन क्रिश्चियन कॉलेज से स्नातक किया। उन्होंने 1957 में कांग्रेस के उम्मीदवार के रूप में मलोट से पंजाब विधानसभा में प्रवेश किया। 1969 में उन्होंने अकाली दल के टिकट पर गिद्दड़बाहा विधानसभा सीट से जीत हासिल की। जब पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री गुरनाम सिंह ने 1970 में दल-बदल करके कांग्रेस का दामन थामा था तब अकाली दल फिर से संगठित हो गया तथा इसके बाद इसने जनसंघ के समर्थन से राज्य में सरकार बनाई। वह तब देश के सबसे कम उम्र के मुख्यमंत्री बने। यह बात दीगर है कि यह गठबंधन सरकार एक वर्ष से थोड़ा अधिक चली। वर्ष 2017 में बतौर मुख्यमंत्री अपना कार्यकाल समाप्त किया तो वह इस पर रहने वाले सबसे अधिक उम्र के नेता थे। वर्ष 1972 में बादल सदन में विपक्ष के नेता बने, लेकिन बाद में फिर से मुख्यमंत्री बने। बादल के नेतृत्व वाली सरकारों ने किसानों के हितों पर अपना ध्यान केंद्रित किया। उनकी सरकार के महत्वपूर्ण निर्णयों में कृषि के लिए मुफ्त बिजली देने का निर्णय भी शामिल था।

अकाली दल के नेता प्रकाश सिंह बादल ने सतलुज यमुना लिंक (एसवाईएल) नहर के विचार का कड़ा विरोध किया, जिसका उद्देश्य पड़ोसी राज्य हरियाणा के साथ नदी के पानी को साझा करना था। इस परियोजना को लेकर एक आंदोलन का नेतृत्व करने के लिए 1982 में उन्हें गिरफ्तार किया गया था। यह परियोजना पंजाब के निरंतर विरोध के कारण अभी तक लागू नहीं हो सका है। उनके नेतृत्व में राज्य विधानसभा ने विवादास्पद पंजाब सतलुज यमुना लिंक नहर (स्वामित्व अधिकारों का हस्तांतरण) विधेयक, 2016 पारित किया। यह विधेयक परियोजना पर तब तक की प्रगति को उलटने के लिए था। उनकी पार्टी ने 2020 में केंद्र के नए कृषि कानूनों के खिलाफ किसानों के आंदोलन को लेकर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) से अपना नाता तोड़ लिया। प्रकाश सिंह बादल की पत्नी सुरिंदर कौर बादल की 2011 में कैंसर से मौत हो गई थी। उनका बेटा सुखबीर सिंह बादल और बहू हरसिमरत कौर बादल दोनों ही राजनीति में सक्रिय हैं। सिखों की सर्वोच्च धार्मिक संस्था अकाल तख्त ने उन्हें पंथ रतन फख्र-ए-कौम - या प्राइड ऑफ द फेथ - की उपाधि से सम्मानित किया, जिसकी कई लोगों ने आलोचना भी की।

प्रधानमंत्री मोदी ने ग्वालियर रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास की 534 करोड़ की योजना के लिए वर्चुअली भूमिपूजन किया

एयरपोर्ट की तरह दिखेगा ग्वालियर स्टेशन

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रीवा में हुए राष्ट्रीय पंचायत राज दिवस कार्यक्रम में ग्वालियर को बड़ी सौगात दी है। मोदी ने यहां ग्वालियर रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास की 534 करोड़ की योजना के लिए वर्चुअली भूमिपूजन किया। इसके बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि हम सभी जनता के प्रतिनिधि हैं। हम सभी इस देश और लोकतंत्र के लिए समर्पित हैं। काम के दायरे भलै ही अलग-अलग हो, लेकिन लक्ष्य एक ही है जन सेवा से राष्ट्र सेवा।

गांव व गरीब का जीवन आसान बनाने के लिए दो लाख से ज्यादा गांव तक ऑप्टीकल फाइबर ले गए हैं। जब मोदी बोल रहे थे तो ग्वालियर में कार्यक्रम स्थल पर पांच में करीब 7 बार स्क्रीन पर ब्लैकआउट छा गया था। वहां स्क्रीन लगाई थी वो बार-बार बंद हो रही थी। इस अवसर पर राज्यपाल मंगुभाई पटेल,

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान सहित कई मंत्री और भाजपा नेता, रेलवे के जीएम सतीश कुमार उपस्थित थे। एलएनआईपीई में हुए कार्यक्रम में ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर, सांसद विवेक नारायण शेजवलकर तथा जिलाध्यक्ष अभय चौधरी मंच पर उपस्थित रहे।

इस मौके पर ऊर्जामंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने कहा कि ग्वालियर को लगातार सौगातें मिल रही है। रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास एवं विस्तारीकरण के रूप में मिली सौगात के बाद ग्वालियर रेलवे स्टेशन पर यात्रियों को और अधिक सुविधाएं मिलेंगी। उन्होंने कहा कि ग्वालियर शहर में बन रही एलीवेटेड रोड का निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है। नया एयर टर्मिनल पर काम भी तेजी से चल रहा है। वहीं अंतरराज्यीय बस अड्डे का काम भी चल रहा है। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में ग्वालियर का स्वरूप नया होगा। ग्वालियर रेलवे स्टेशन के विस्तारीकरण का कार्य हैदराबाद की केपीसी प्रोजेक्ट प्राइवेट लिमिटेड कंपनी को ठेका मिला है। कंपनी को विस्तारीकरण एवं सौंदर्यीकरण का काम दो साल में पूरा करना है। नया भवन ग्वालियर के ऐतिहासिक हैरिटेज की तर्ज पर बनाया जाएगा। यहां 21 एक्सलेटर और 19 लिफ्ट लगाई जाएगी इस नए प्रोजेक्ट के बाद ग्वालियर में रेलवे प्लेटफॉर्म की संख्या छह हो जाएगी। यहां वेटिंग हॉल बनाए जाएंगे। एयरपोर्ट की तर्ज पर यह स्टेशन बनेगा। उत्तर मध्य रेलवे ने हैदराबाद की केपीसी प्रोजेक्ट प्राइवेट लिमिटेड को 462.79 करोड़ रुपए में ठेका दिया है। कंपनी को दो साल में इस प्रोजेक्ट को पूरा करना है। प्रोजेक्ट में पहले ही तीन माह का विलंब हो चुका है। ऐसे में समय पर काम करना बड़ी चुनौती होगी। रेलवे स्टेशन पर दो और नए फुट ओवर ब्रिज बनाए जाएंगे। दो फुट ओवर ब्रिज पहले से ही बने हुए हैं। रेलवे स्टेशन पर यात्रियों की सुविधा के लिए 21 एक्सलेटर व 19 लिफ्ट लगाई जाएंगी। प्लेटफॉर्म की संख्या बढ़कर छह हो जाएगी। स्टेशन का भवन एयर पोर्ट की तर्ज पर तैयार किया जाएगा। नया भवन ग्वालियर के वास्तुशिल्प और हैरिटेज लुक लिए होगा। स्टेशन को आकर्षक और सुंदर बनाने के लिए आर्ट वर्क भी किया जाएगा। यात्रियों के लिए सुविधाएं भी बढ़ेंगी। स्टेशन पर बैठने के लिए नई कुर्सियां और फर्नीचर लगेगा।

दतिया में माँ पीताम्बरा माई लोक बनाया जायेगा

पीताम्बरा माई के प्रकटोत्सव एवं दतिया गौरव दिवस समारोह उत्साह और उमंग के साथ मनाया गया, उमड़ा भारी जनसैलाब

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि महाकाल महालोक की तर्ज पर पीताम्बरा माई लोक का भी निर्माण किया जायेगा। इसके साथ ही दतिया में आधुनिक स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स का निर्माण भी होगा। दतिया हवाई पट्टी को एयरपोर्ट में तब्दील करने के लिये भी भारत सरकार ने चर्चा कर पूरा किया जायेगा। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान सोमवार को दतिया में पीताम्बरा माई के प्रकटोत्सव एवं दतिया गौरव दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में यह बात कही। कार्यक्रम की अध्यक्षता राजस्थान सरकार की पूर्व मुख्यमंत्री एवं पीताम्बरा माई ट्रस्ट की अध्यक्ष वसुंधरा राजे सिंधिया ने की। विशेष अतिथि के रूप में प्रदेश के गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्र, दतिया जिले के प्रभारी मंत्री सुरेश राठखेड़ा, क्षेत्रीय सांसद श्रीमती संध्या राय, पूर्व मंत्री श्रीमती माया सिंह, ध्यानेन्द्र सिंह सहित जनप्रतिनिधि और बड़ी संख्या में माई के भक्त उपस्थित थे। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि दतिया में पीताम्बरा माई के प्रकटोत्सव का जो आयोजन प्रारंभ किया गया है वह ऐतिहासिक है। इसकी जितनी प्रशंसा की जाए उतनी कम है। माई के प्रकटोत्सव पर पूरे दतिया में उत्साह और उमंग का वातावरण है। केवल दतिया ही नहीं देश भर से लोग माई के प्रकटोत्सव में भक्तिभाव में शामिल होने पधारे हैं। मुख्यमंत्री चौहान ने कहा कि माँ पीताम्बरा माई की कृपा हो और हमारा प्रदेश निरंतर प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होकर देश के विकास में अपनी भागीदारी निभा सके। उन्होंने कहा कि यह प्रसन्नता की बात है कि दतिया में पीताम्बरा माई के प्रकटोत्सव पर दिवाली की तरह लोगों ने अपने घरों पर रोशनी की है, दीपक जलाए हैं और रंगोलियाँ सजाकर उत्साह और उमंग के साथ अपनी भागीदारी निभा रहे हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते

हुए राजस्थान सरकार की पूर्व मुख्यमंत्री एवं ट्रस्ट की अध्यक्ष श्रीमती वसुंधरा राजे सिंधिया ने कहा कि माँ पीताम्बरा की कृपा और गुरूजी के आशीर्वाद से दतिया निरंतर प्रगति के मार्ग पर अग्रसर है। प्रदेश सरकार ने भी दतिया के विकास में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी है। उन्होंने कहा कि माई की कृपा से ही दतिया में अनेकों उत्सवों का आयोजन प्रारंभ हुआ है। इसके साथ ही अनेक कथाओं का भी आयोजन कर लोगों को भक्तिरस में डूबने का अवसर मिल रहा है। उन्होंने कहा कि माँ पीताम्बरा माई के प्रकटोत्सव का यह दूसरा वर्ष है। उत्साह और उमंग के साथ बड़ी संख्या में लोग भागीदारी कर रहे हैं। आने वाले वर्षों में इसे और भव्यता प्रदान करने का कार्य किया जायेगा।

कार्यक्रम के विशेष अतिथि प्रदेश के गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्र ने कहा कि दतिया अब उत्सवों का शहर बन गया है। यहाँ पर वर्ष भर उत्सव एवं कथाओं का आयोजन किया जा रहा है। दतिया में माँ पीताम्बरा माई के प्रकटोत्सव का एक भव्य और आलोकिक आयोजन भी दतिया जिले का हर नागरिक उत्साह और उमंग के साथ मना रहा है। माई के कृपा से दतिया में विकास के अनेक कार्य हुए हैं। दतिया की पहचान प्रदेश में ही नहीं देश में भी बढ़ी है। गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्र ने मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान से पीताम्बरा माई लोक निर्माण, हवाई अड्डे का निर्माण और आधुनिक स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स बनाने की मांग भी की। उन्होंने कहा कि दतिया में सम्पूर्ण देश ही नहीं बल्कि विदेशों से भी भक्तजन माई के दर्शन के लिये पधारते हैं। यहाँ पर एयरपोर्ट बन जाने से देश ङ्क विदेश के भक्तों को सुविधा प्राप्त होगी। इसके साथ ही दतिया का छोटा सा स्टेडियम अब शहर के मध्य में आ गया है। दतिया में एक आधुनिक स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स का निर्माण भी बहुत जरूरी है।

शहर को स्वच्छ बनाने के लिये दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ कार्य करना जरूरी: महापौर

शहर को स्वच्छ और सुंदर बनाने के लिये हम सबको दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ स्वच्छता अभियान में अपनी भागीदारी निभाना होगी। सभी के प्रयासों से ही हम अपने शहर को स्वच्छ और सुंदर बना सकते हैं। महापौर डॉ. शोभा सतीश सिकरवार ने रविवार को स्वच्छता सर्वेक्षण-2023 के तहत शुरू हुए स्वच्छता पखवाड़े के शुभारंभ अवसर पर यह बात कही। बाल भवन के सभागार में स्वच्छता पखवाड़े के अवसर पर पूर्व नेता प्रतिपक्ष कृष्णराव दीक्षित, पार्षद श्रीमती ममता तिवारी, श्रीमती ममता शर्मा, अपर आयुक्त आर के श्रीवास्तव, मुकुल गुप्ता सहित जनप्रतिनिधि और निगम के अधिकारी उपस्थित थे। महापौर डॉ. शोभा सिकरवार ने कहा कि स्वच्छता सर्वेक्षण में ग्वालियर को अव्वल स्थान मिले इसके लिये केवल शासन प्रशासन ही नहीं सभी जनप्रतिनिधियों और शहर के हर नागरिक को दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ स्वच्छता अभियान में अपनी भागीदारी निभाना होगी। उन्होंने कहा कि ग्वालियर नगर निगम का पूरा अमला अपने सभी संसाधनों के साथ नियमित रूप से स्वच्छता के कार्य में लगा है। हमारे प्रयासों में कोई कमी नहीं है, लेकिन हमें अपने दायित्वों का निर्वहन पूरी दृढ़ इच्छाशक्ति से करने की आवश्कता है। महापौर ने नगर निगम के सभी पार्षदों से भी अपील की है कि वे अपने ङ्क अपने वार्ड में स्वच्छता अभियान के तहत निरंतर सक्रियता के साथ अपनी सहभागिता करें और नागरिकों को भी इस अभियान में भागीदार बनाएँ। उन्होंने यह भी कहा कि स्वच्छता के कार्य में जो लोग लापरवाही बरत रहे हैं उनके विरूद्ध भी कार्रवाई होना चाहिए। नगर निगम के सभापति मनोज तोमर ने कहा कि स्वच्छता अभियान में नगर निगम का पूरा अमला पूरी मेहनत के साथ काम कर रहा है। शहर के हर नागरिक को इस अभियान से जोड़कर इसे जन अभियान बनाने की आवश्यकता है। हर व्यक्ति अगर स्वच्छता के प्रति सचेत हो जायेगा तो कोई कारण नहीं है कि हमारा शहर भी स्वच्छ सुंदर होगा और स्वच्छता रैंकिंग में हमें अच्छा स्थान प्राप्त होगा। उन्होंने यह भी कहा कि हमारे पास न तो संसाधनों की कमी है और न काम करने वाले व्यक्तियों की । आवश्यकता है कि सभी लोग पूरी मेहनत और लगन के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करें। उन्होंने आश्वस्त किया कि नगर निगम के सभी पार्षद साथी भी स्वच्छता अभियान में पूरी सक्रियता के साथ अपनी भागीदारी निभायेंगे। नेता प्रतिपक्ष हरिपाल ने कहा कि स्वच्छता अभियान में सभी पार्षद प्रतिदिन अपने-अपने वार्ड में कार्य कर रहे हैं। सफाई अमले के साथ निरंतर समन्वय स्थापित कर अपने-अपने क्षेत्र में प्रतिदिन स्वच्छता का कार्य करा रहे हैं। स्वच्छता रैंकिंग में ग्वालियर को अच्छा स्थान मिले, इसके लिये भी सभी पार्षद साथी अपना पूरा योगदान देंगे। कार्यशाला के प्रारंभ में नगर निगम आयुक्त हर्ष सिंह ने स्वच्छता पखवाड़े के संबंध में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि स्वच्छता पखवाड़े का आयोजन प्रदेश भर में किया जा रहा है। इस दौरान ग्वालियर में भी स्वच्छता को लेकर अनेक कार्य किए जायेंगे। ग्वालियर में स्वच्छता के लिये निरंतर अच्छे कार्य किए जा रहे हैं। इस अभियान में सभी के सक्रिय सहयोग से हम ग्वालियर को भी स्वच्छता रैंकिंग में अच्छा स्थान दिलायेंगे। निगम आयुक्त हर्ष सिंह ने सभी पार्षदों से भी आग्रह किया कि वे स्वच्छता रैंकिंग के लिये किए जा रहे प्रयासों में न केवल स्वयं सहयोग करें बल्कि समाज के सभी वर्गों को स्वच्छता अभियान में जोड़ने के कार्य में भी अपनी अहम भूमिका का निर्वहन करें। पार्षदगण अपने-अपने वार्ड में निरंतर जन जागरूकता के अभियान भी चलाएँ और इससे जन जन को जोड़ें तो कोई कारण नहीं है कि हमारा शहर स्वच्छता में पीछे रहे। कार्यशाला में पूर्व नेता प्रतिपक्ष कृष्णराव दीक्षित ने भी स्वच्छता अभियान के संबंध में महत्वपूर्ण सुझाव दिए। इस मौके पर पार्षद श्रीमती ममता अजय तिवारी एवं ममता शर्मा ने भी अपने विचार रखे। महापौर डॉ. शोभा सतीश सिकरवार ने स्वच्छता पखवाड़े के आयोजन में सभी पार्षदों और निगम के अमले को स्वच्छता की शपथ दिलाई।

पाएं निखरी त्वचा

समर्स में आप हमेशा ऐसे ब्यूटी प्रॉडक्ट्स को चुनें, जो ऑयल फ्री हो। भले ही आपकी स्किन ऑयली हो या रूखी, समर्स में स्किन से अतिरिक्त ऑयल निकलता है, जिससे त्वचा चिपचिपी नजर आती है। जब मौसम बदलता है तो आपकी स्किन की जरूरतें भी बदल जाती हैं। इतना ही नहीं, इस मौसम में अगर आप सच में अपनी स्किन की केयर करना चाहते हैं तो यह जरूरी है कि आप सही प्रॉडक्ट्स का भी चयन करें। आपकी स्किन अधिकतर इसी बात पर निर्भर करती है कि आप किन ब्यूटी प्रॉडक्ट्स को चुनते हैं। तो चलिए आज हम आपको कुछ ऐसे ब्यूटी प्रॉडक्ट्स के बारे में बता रहे हैं, जो समर्स में आपकी स्किन के लिए बेहद लाभदायक होते हैं-

ऑयल फ्री हो प्रॉडक्ट

स्किन व मेकअप एक्सपर्ट कहते हैं कि समर्स में आप हमेशा ऐसे ब्यूटी प्रॉडक्ट्स को चुनें, जो ऑयल फ्री हो। भले ही आपकी स्किन ऑयली हो या रूखी, समर्स में स्किन से अतिरिक्त ऑयल निकलता है, जिससे त्वचा चिपचिपी नजर आती है। वहीं अगर ब्यूटी प्रॉडक्ट भी ऑयल बेस्ड होंगे तो इससे आपकी स्किन हमेशा ग्रीसी नजर आएगी।

जरूरी है सनस्क्रीन

आमतौर पर सांवली स्किन की लड़कियां यह मानती हैं कि उन्हें सनस्क्रीन की कोई जरूरत नहीं है। जबकि यह सच नहीं है। वैसे तो आपको हमेशा ही घर से बाहर निकलने से पहले सनस्क्रीन अप्लाई करना चाहिए। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपकी स्किन टोन क्या है, सूरज की हानिकारक किरणें आपकी स्किन को बेहद नुकसान पहुंचा सकती हैं। सूरज की किरणों से आपको सनटैन के अलावा स्किन रैशेज व अन्य स्किन प्रॉब्लम्स होने का खतरा भी रहता है।

एसपीएफ युक्त हो लिप बाम

चूंकि समर्स में आप लिप्स पर सनस्क्रीन नहीं लगा सकती हैं, इसलिए अपनी लिप्स की अतिरिक्त केयर करने व उसे सूरज की किरणों से प्रोटेक्ट करने के लिए आप समर्स में ऐसे लिप बाम को अप्लाई करें, जो एसपीएफ युक्त हो। इस तरह के लिप बाम समर्स में आपके होंठों को नमी प्रदान करने के साथ-साथ सूरज से भी प्रोटेक्ट करते हैं।

बीबी क्रीम आएगी काम

समर्स में जब मेकअप की बात होती है तो आपको खुद को लाइट रखना चाहिए। इसके लिए हैवी फाउंडेशन या मेकअप प्रॉडक्ट अप्लाई करने की जगह बीबी क्रीम लगाएं। यह एक हल्का मेकअप प्रभाव देता है और एक मॉइस्चराइज़र के रूप में कार्य करता है, जो आपकी त्वचा को यूवी क्षति से बचाता है।

कम कीमत में पाए गज़ब का निखार

आज के समय हर कोई इतना बिजी रहने लगा है की उनके पास ज़रा भी टाइम नहीं रहता है, फिर चाहे वो महिलाएँ हो या पुरुष, लगातार नज़रअंदाज़ होने के कारण महिलाओ की स्किन रूखी और बेजान हो जाती है, जिससे उनके चेहरे का रंग सांवला होने लगता है. कई महिलाएँ समय बचाने के लिए फेयरनेस क्रीम्स का इस्तेमाल करती है पर इससे भी कोई फायदा नहीं होता है,.

इसलिए आज हम आपको एक ऐसा तरीका बताने जा रहे है जिसके इस्तेमाल से आपकी स्किन ग्लोइंग हो जाएगी और समय के साथ साथ आपके पैसे भी बच जायेगे. अपने स्किन में निखार लाने के लिए सबसे पहले एक बाउल में थोड़ा सा बेसन ले ले, अब इसमें एक चुटकी हल्दी मिलाये और इसे कच्चे दूध की सहयता से गाढ़ा गोल कर पेस्ट बना ले, अब इस पेस्ट को अपने चेहरे और गर्दन पर अच्छे से लगाए. और जब ये सूख जाये तो इसे ठन्डे पानी से धो ले, अगर आप हफ्ते में 4 बार इस पैक का इस्तेमाल करती है तो इससे आपकी स्किन में गज़ब का ग्लो आ जायेगा, इसके अलावा आप दही में नींबू का रस मिलाकर भी चेहरे पर लगा सकते है. इससे भी आपका रंग गोरा हो जायेगा और स्किन के सभी दाग-धब्बे दूर हों जायेगे.

स्किन का ध्यान रखने के लिए इस्तेमाल करें फेस पैक

आपकी स्किन हमेशा ही केयर मांगती है, लेकिन मानसून के दौरान तो स्किन को नजरअंदाज करना बेहद भारी पड़ जाता है। बारिश का पानी और ह्यूमिडिटी आपकी स्किन को परेशान कर सकती है और उसे अधिक चिपचिपा बना सकती है। ऐसे में सीटीएम रूटीन को फॉलो करने के साथ-साथ आप कुछ फेस पैक अप्लाई करके अपनी स्किन को पैम्पर करें। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको मानसून में स्किन की केयर करने के लिए कुछ बेहतरीन फेस पैक्स के बारे में बता रहे हैं-

करें चंदन का इस्तेमाल

चंदन आपकी स्किन को ठंडक प्रदान करने के साथ-साथ उसका ख्याल भी रखता है। मानसून में इसकी मदद से आप डार्क स्किन से छुटकारा पा सकती हैं और अपनी स्किन को बेदाग बना सकती हैं। इस फेस पैक को बनाने के लिए आप चंदन पाउडर में चुटकी भर हल्दी मिलाएं। अब गुलाबजल की मदद से पेस्ट तैयार करें। अब इसे फेस को क्लीन करके अप्लाई करें और 15-20 मिनट तक इसे ऐसे ही रहने दें। अंत में साफ पानी की मदद से स्किन को साफ करें।

केले का फेस पैक

स्किन और बालों के लिए केला किसी वरदान से कम नहीं है। यह आपकी स्किन को अधिक फर्म व ग्लोइंग बनाता है। आप इसे पुदीने के साथ इस्तेमाल कर सकती हैं। पुदीना आपकी स्किन को ठंडक प्रदान करने के साथ-साथ उसकी अशुद्धियों को भी दूर करता है। इसके लिए आप पुदीना में हल्का सा पानी डालकर उससे एक फाइन पेस्ट बना लें। अब इसमें आधा केला अच्छी तरह मैश करें। अब इन दोनों को मिक्स करके चेहरे पर अप्लाई करें ।

ऐसे बचें मधुमेह से

आजकल के इस भागदौड़ भरे युग में अनियमित जीवनशैली के चलते जो बीमारी सर्वाधिक लोगों को अपनी गिरफ्त में ले रही है वह है मधुमेह। मधुमेह को धीमी मौत भी कहा जाता है। यह ऐसी बीमारी है जो एक बार किसी के शरीर को पकड़ ले तो उसे फिर जीवन भर छोड़ती नहीं। इस बीमारी का जो सबसे बुरा पक्ष है वह यह है कि यह शरीर में अन्य कई बीमारियों को भी निमंत्रण देती है। मधुमेह रोगियों को आंखों में दिक्कत, किडनी और लीवर की बीमारी और पैरों में दिक्कत होना आम है। पहले यह बीमारी चालीस की उम्र के बाद ही होती थी लेकिन आजकल बच्चों में भी इसका मिलना चिंता का एक बड़ा कारण हो गया है। जब हमारे शरीर के पैंक्रियाज में इंसुलिन का पहुंचना कम हो जाता है तो खून में ग्लूकोज का स्तर बढ़ जाता है। इस स्थिति को डायबिटीज कहा जाता है। इंसुलिन एक हार्मोन है जोकि पाचक ग्रंथि द्वारा बनता है। इसका कार्य शरीर के अंदर भोजन को एनर्जी में बदलने का होता है। यही वह हार्मोन होता है जो हमारे शरीर में शुगर की मात्रा को कंट्रोल करता है। मधुमेह हो जाने पर शरीर को भोजन से एनर्जी बनाने में कठिनाई होती है। इस स्थिति में ग्लूकोज का बढ़ा हुआ स्तर शरीर के विभिन्न अंगों को नुकसान पहुंचाना शुरू कर देता है। यह रोग महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों में अधिक होता है। मधुमेह ज्यादातर वंशानुगत और जीवनशैली बिगड़ी होने के कारण होता है। इसमें वंशानुगत को टाइप-1 और अनियमित जीवनशैली की वजह से होने वाले मधुमेह को टाइप-2 श्रेणी में रखा जाता है। पहली श्रेणी के अंतर्गत वह लोग आते हैं जिनके परिवार में माता-पिता,

दादा-दादी में से किसी को मधुमेह हो तो परिवार के सदस्यों को यह बीमारी होने की संभावना अधिक रहती है। इसके अलावा यदि आप शारीरिक श्रम कम करते हैं, नींद पूरी नहीं लेते, अनियमित खानपान है और ज्यादातर फास्ट फूड और मीठे खाद्य पदार्थों का सेवन करते हैं तो मधुमेह होने की संभावना बढ़ जाती है। डायबिटीज के मरीजों में सबसे ज्यादा मौत हार्ट अटैक या स्ट्रोक से होती है। जो व्यक्ति डायबिटीज से ग्रस्त होते हैं उनमें हार्ट अटैक का खतरा आम व्यक्ति से पचास गुना ज्यादा बढ़ जाता है। शरीर में ग्लूकोज की मात्रा बढ़ने से हार्मोनल बदलाव होता है और कोशिशएं क्षतिग्रस्त होती हैं जिससे खून की नलिकाएं और नसें दोनों प्रभावित होती हैं। इससे धमनी में रुकावट आ सकती है या हार्ट अटैक हो सकता है। स्ट्रोक का खतरा भी मधुमेह रोगी को बढ़ जाता है। डायबिटीज का लंबे समय तक इलाज न करने पर यह आंखों की रेटिना को नुकसान पहुंचा सकता है। इससे व्यक्ति हमेशा के लिए अंधा भी हो सकता है। अपने ग्लूकोज स्तर को जांचें और भोजन से पहले यह 100 और भोजन के बाद 125 से ज्यादा है तो सतर्क हो जाएं। हर तीन महीने पर ॥ङ्ग1ष टेस्ट कराते रहें ताकि आपके शरीर में शुगर के वास्तविक स्तर का पता चलता रहे। उसी के अनुरूप आप डॉक्टर से परामर्श कर दवाइयां लें।अपनी जीवनशैली में बदलाव करें और शारीरिक श्रम करना शुरू करें। जिम नहीं जाना चाहते हैं तो दिन में तीन से चार किलोमीटर तक जरूर पैदल चलें या फिर योग करें।कम कैलोरी वाला भोजन खाएं। भोजन में मीठे को बिलकुल खत्म कर दें। सब्जियां, ताज़े फल, साबुत अनाज, डेयरी उत्पादों और ओमेगा-3 वसा के स्रोतों को अपने भोजन में शामिल कीजिये। इसके अलावा फाइबर का भी सेवन करना चाहिए।दिन में तीन समय खाने की बजाय उतने ही खाने को छह या सात बार में खाएं।धूम्रपान और शराब का सेवन कम कर दें या संभव हो तो बिलकुल छोड़ दें। आफिस के काम की ज्यादा टेंशन नहीं रखें और रात को पर्याप्त नींद लें। कम नींद सेहत के लिए ठीक नहीं है। तनाव को कम करने के लिए आप ध्यान लगाएं या संगीत आदि सुनें। नियमित रूप से स्वास्थ्य की जांच कराते रहें और शुगर लेवल को रोजाना मॉनीटर करें ताकि वह कभी भी लेवल से ज्यादा नहीं हो। एक बार शुगर बढ़ जाता है तो उसके लेवल को नीचे लाना काफी मुश्किल काम होता है और इस दौरान बढ़ा हुआ शुगर स्तर शरीर के अंगों पर अपना बुरा प्रभाव छोड़ता रहता है।

कोरोना से लड़ने में मदद करेंगी यह पांच चीज़ें, इम्यूनिटी भी होगी मजबूत

यदि आपको अपनी इम्यूनिटी को मज़बूत करना है, तो आप टमाटर का सेवन कर सकते हैं। टमाटर एंटी-ऑक्सीडेंट्स से भरपूर होता है साथ ही, विटामिन- सी, ई, लाइकोपीन, पोटेशियम, आदि भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। आप टमाटर को अपने सलाद में शामिल कर सकते हैं। पूरा देश कोरोना महामारी के दौर से जूझ रहा है। देशभर में कोरोना के मामले में दिन प्रतिदिन बढ़ रहें हैं। यह पहले के मुकाबले ज्यादा खतरनाक व जानलेवा साबित हुआ है। डॉक्टर्स भी ज्यादा से ज्यादा विटामिन सी, हरी सब्ज़ियां, ज़िंक, आदि के सेवन करने की राय दे रहे हैं।तो चलिए आज हम आपको बताने जा रहे हैं ऐसे फूड्स के बारे में जो आपकी इम्यूनिटी को मज़बूत बनाने में मदद कर सकते हैं-

संतरा-

गर्मियों में संतरे का सेवन बेहद ज़रूरी है, खासकर इस कोरोना काल में। संतरा हमारी इम्यूनिटी मज़बूत करने के साथ-साथ खून साफ करने व स्टेमिना बढ़ाने में सक्षम है। इस फल में विटामिन- ए, बी व सी, मैग्नीशियम,

पोटेशियम, कैल्शियम, फॉस्फोरस और कोलिन जैसे अन्य पोषक तत्व पाए जाते हैं। इतना ही नहीं, संतरा आपके हीमोग्लोबिन की मात्रा बढ़ाता है व हार्ट रेट और ब्लड प्रेशर को भी रेगुलेट करता है। आप चाहें तो संतरे का ताज़ा जूस भी ले सकते हैं।

टमाटर-यदि आपको अपनी इम्यूनिटी को मज़बूत करना है, तो आप टमाटर का सेवन कर सकते हैं। टमाटर एंटी-ऑक्सीडेंट्स से भरपूर होता है साथ ही, विटामिन- सी, ई, लाइकोपीन, पोटेशियम, आदि भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। आप टमाटर को अपने सलाद में शामिल कर सकते हैं। वहीं, रोज़ाना सुबह खाली पेट एक टमाटर या उसके जूस का सेवन करने से खून साफ होता है और आंत भी मज़बूत होती है। **नींबू-**

नींबू का सेवन इम्यूनिटी बढ़ाने में काफी कारगर है। यह विटामिन सी,ए, बी6 व सोडियम, मैग्नेशियम, फॉस्फोरस, पोटेशियम और फोलेट जैसे तत्व पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। रोज़ सुबह खाली पेट नींबू पानी पीने से रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाया जा सकता है। साथ ही यह हमें कई संक्रामक बीमारियों से भी बचाता है और शरीर के पाचनतंत्र को भी ठीक करता है। आप नींबू पानी या फिर सलाद आदि में इसका सेवन कर सकते हैं।

आखिर किसे डेट कर रहीं हैं रश्मिका

पिछले काफी समय से ये खबरें आ रही हैं कि नेशनल क्रश रश्मिका मंदाना और विजय देवरकोंडा एक दूसरे को डेट कर रहे हैं। यह खबरें काफी तेजी से वायरल हुई थी लेकिन अब लगता हैं यह दावे महज अफवाह थे क्योंकि रश्मिका मंदाना को आजकल किसी और के साथ देखा जा रहा है। अब अफवाहें उड़ी हैं कि नेशनल क्रश रश्मिका मंदाना अब बेलमकोंडा श्रीनिवास को डेट कर रही हैं। वजह- उनका बार-बार साथ दिखना है। दावा किया जा रहा था कि नेशनल क्रश रश्मिका मंदाना और अर्जुन रेड्डी स्टार विजय देवरकोंडा सिर्फ दोस्त से कहीं अधिक हैं। हालाँकि, अब अफवाहें हैं कि वे अलग हो सकते हैं और रश्मिका मंदाना किसी अन्य अभिनेता को देख सकती हैं। हम बात कर रहे हैं बेलमकोंडा श्रीनिवास की। रिपोर्ट्स की मानें तो रश्मिका मंदाना और बेलमकोंडा श्रीनिवास डेट कर रहे हैं। कारण- पिछले कुछ दिनों में उनका बार-बार स्पॉट होना! मुंबई एयरपोर्ट से लेकर हाल के एक कार्यक्रम तक, वे सुर्खियां बटोर रहे हैं। हालाँकि, क्या वे वास्तव में प्यार में हैं? ईटाइम्स के हवाले से एक सूत्र के अनुसार रश्मिका और बेलमकोंडा साई श्रीनिवास इन दिनों अक्सर सार्वजनिक रूप से दिखाई दे रहे हैं।

हाईएस्ट पेड एक्टर अल्लू अर्जुन

पुष्पा राज मैं झुकेगा नहीं साला। इस डायलॉग और फिल्म से पैन इंडिया स्टार का खिताब जीतने वाले अल्लू अर्जुन ने अभी हाल ही में अपना 41वां बर्थ-डे मनाया। फिल्मी परिवार में जन्मे वो सुपरस्टार राम चरण के कजिन हैं। बचपन से ही फिल्मी माहौल में रहे अल्लू 3 साल की उम्र में ही बतौर चाइल्ड आर्टिस्ट फिल्मों में आ गए थे। लैविश लाइफ की वजह से भी वो सुर्खियों में बने रहते हैं। 360 करोड़ की संपत्ति के मालिक अल्लू के पास 7 करोड़ की वैनिटी वैन है। वो परिवार के साथ 100 करोड़ के आलीशान घर में रहते हैं। 2021 में रिलीज हुई फिल्म पुष्पा का सीक्वल पुष्पा 2 इस साल रिलीज होने वाली है। इसके लिए अल्लू ने 125 करोड़ रुपए फीस चार्ज की है। इस फीस के बाद अल्लू पूरी भारतीय फिल्म इंडस्ट्री में सबसे ज्यादा फीस लेने वाले एक्टर बन गए हैं। पहले पार्ट के लिए उन्होंने 40 करोड़ फीस ली थी। अल्लू अर्जुन की बेहतरीन फिल्म पुष्पा ने बॉक्स ऑफिस पर खूब कमाई की थी। दर्शकों को ये फिल्म काफी पसंद आई थी। फिल्म को हर भाषा में दर्शकों का प्यार मिला था। पहले पार्ट पुष्पा के बाद अब इस फिल्म के मेकर्स इसके दूसरे पार्ट को जल्द ही दर्शकों के सामने लेकर आने वाले हैं। पुष्पा द रूल का टीजर रिलीज कर दिया है। जिसे काफी पसंद किया जा रहा है। वहीं बात अल्लू अर्जुन की करें तो अल्लू अर्जुन का जन्म 8 अप्रैल 1982 को चेन्नई में एक संपन्न परिवार में हुआ था। उनका पूरा परिवार फिल्म इंडस्ट्री से जुड़ा हुआ था। उनके दादा अल्लू रामलिंगैया एक होम्योपैथिक डॉक्टर और स्वतंत्रता सेनानी थे। अल्लू रामलिंगैया को बचपन से ही अभिनय का शौक था। उन्होंने कई नाटकों में रोल भी प्ले किया। उन्होंने अपने फिल्मी करियर की शुरुआत 1953 में तेलुगु फिल्म पट्टिलु से की थी। वो दर्शकों के बीच अपनी कॉमिक टाइमिंग के लिए जाने जाते थे। वह नाक से बोलते थे और इससे उनकी आवाज प्रशंसकों के बीच काफी लोकप्रिय हो गई थी। अल्लू रामलिंगैया की शादी कनक रत्नम से हुई थी। कनक से शादी करने का कारण यह था कि वे भी स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हुई थीं। कनक और अल्लू रामलिंगैया का एक बेटा अल्लू अरविंद और तीन बेटियां सुरेखा, वसंतलक्ष्मी और नवभारती हैं। 1990 में अल्लू रामलिंगैया को तेलुगु सिनेमा में उनके योगदान के लिए पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। 1997 में उन्हें फिल्मफेयर अवॉर्ड साउथ फॉर लाइफटाइम अचीवमेंट मिला। 2001 में आंध्र प्रदेश सरकार ने उन्हें रघुपति वेंकैया पुरस्कारसे सम्मानित किया81 साल की उम्र में 30 जुलाई 2004 को उनका आंध्र प्रदेश में निधन हो गया। अल्लू रामलिंगैया की आखिरी फिल्म जल उनके निधन से चार महीने पहले मार्च 2004 में रिलीज हुई थी अल्लू अर्जुन के पिता अल्लू अरविंद तेलुगु फिल्मों के फेमस प्रोड्यूसर और डिस्ट्रीब्यूटर हैं। उन्होंने 1972 में गीता आर्ट्स नाम से एक प्रोडक्शन कंपनी बनाई। इस प्रोडक्शन कंपनी के तहत कई हिट फिल्में दी हैं। एक प्रोडक्शन कंपनी के अलावा अल्लू अरविंद ने अपने पिता की याद में 2020 में हैदराबाद में अल्लू स्टूडियो भी स्थापित किया है। 10 एकड़ में फैला यह स्टूडियो हाईटेक टेक्नोलॉजी से लैस है। अल्लू अरविंद ने अल्लू एंटरटेनमेंट नाम से एक अलग कंपनी भी बनाई और यह कंपनी फिल्मों का निर्माण भी करती है। अल्लू अरविंद फुटबॉल क्लब केरल ब्लास्टर्स एफसी और तेलुगु डिजिटल प्लेटफॉर्म अहा के सह-मालिक हैं।

GUEST OF THE MONTH

DR PRIYANKA SIKARWAR MANAGER & RESEARCH ASSOCIATE IN AMITY UNIVERSITY

Dr Anurag Garg , Principal, IPS College of Technology and Management, Gwalior

डॉ ममसी धाकरे (जनरल मेडिसिन) हेल्थ पर आर जे कल्पना के साथ हुई चर्चा..

डॉ प्रबल प्रताप सिंह, जिला क्षयरोग अधिकारी एवं नोडल एच. आई. वी ऑफिसर

MAHENDRA VISHWAKARMA CENTRE MANAGER (ISKCON GWALIOR)

वरिष्ठ पत्रकार श्री श्याम श्रीवास्तव, संपादक दैनिक सत्ता सुधार

Mr. Dharamveer Gurjar

Mr. Nand Kishor Rawat (Nandu Sir) Hindi Teacher

ग्वालियर का विकास ही पहली प्राथमिकता: शेजवलकर

गूंज राजनीति विशेष में इस माह हम अपने पाठकों को एक ऐसी राजनीतिक शख्सियत से रूबरू करा रहे हैं जो किसी परिचय के मोहताज नहीं है बल्कि उन्होंने राजनीति में शून्य से शिखर तक का सफर खुद तय किया है। स्वच्छ, विनम्र, सहज-सरल व्यक्तित्व के धनी ग्वालियर के सांसद विवेक नारायण शेजवलकर। श्री शेजवलकर संघ से जुड़े साफ-सुथरी छवि के नेता के रूप में जाने जाते हैं। वे कई अहम व बड़े पदों पर रह चुके विवेक शेजवलकर ग्वालियर के महापौर भी रह चुके हैं। शेजवलकर बीजेपी के सभी बड़े नेताओं की पसंद भी हैं। श्री शेजवलकर की मराठी वोटरों पर अच्छी पकड़ है। पार्टी ने जब भी उन्हें जो जिम्मेदारी सौंपी उसे उन्होंने बखूबी निभाया और वर्तमान में ग्वालियर लोकसभा सीट से सांसद हैं। अपनी लोकसभा सीट ग्वालियर के लिए वह निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर होकर कार्य कर रहे हैं और शहर विकास के नित नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। श्री शेजवलकर ने ग्वालियर के लिए कई अहम बड़े विकास कार्य स्वीकृत कराए हैं। गूंज विशेष में सांसद शेजवलकर ने अपनी जिंदगी एवं कई अहम पहलुओं पर हमसे बातचीत की पेश हैं बातचीत के मुख्य अंश।

● गूंज न्यूज नेटवर्क

संसदीय अध्याय के 4 साल आपको पूरे होने वाले हैं कैसा सफर रहा और कितना चुनौती भरा रहा यह आपके लिए?

मेरे लिए भी एक नया अनुभव था एक नया चैलेंज ही था शुरुआत की लगभग 1 साल कोरोना का दो ढाई साल का पीरियड गया उसके बाद संसद ठीक से चली भी नहीं। कई बातें सांसद के लिए और सीखने के लिए भी होती हैं और करने के लिए भी उसके बाद जो संसद चली तो बहुत काम संसद में होना था दुर्भाग्यपूर्ण उसे जैसे ही संसद चालू होती थी ऐसी कई मुद्दे उठाए जो वास्तव में रिलेटिव नहीं थे उसका कोई विशेष संबंध भी नहीं था उसके कारण कोरोना के बाद भी संसद की कार्यवाही बाकी थी उसके बाद भी जो हम जैसे लॉ वर्कर्स हैं जो जरूरी कानून बनाने थे पास होने

थे वह हम सब लोगों ने किया चुनौतीपूर्ण तो था बार बार संसद डिस्टर्ब होता था। पार्टी ने तय किया डिस्टर्ब होने के बाद भी चलाएंगे और इस बार आप लोगों ने भी देखा होगा कि बजट पास हुआ पर देखिए काम रुकना नहीं चाहिए।

फोकस गो ऑन और इसी नीति को भारतीय जनता पार्टी के नेताओं ने अपनाई और काम हमने रुकने नहीं दिया और बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थिति बनी है इसके लिए भी एक बार सोचने की जरूरत है कि इससे कैसे उभरा जाए क्योंकि संसद का महत्वपूर्ण समय नष्ट होता है। यह कोई अच्छी बात नहीं है। क्योंकि जनता हमें चुनकर संसद भेजती है उनके मुद्दे उठाने के लिए उनकी समस्याओं को दूर करने के लिए और नए कानून बनाने के लिए जो पुराने कानून है उनको हटाने के लिए तो पीछे रह जाता है मेरा मानना है इस पर सोच विचार करसबको मिलकर कोई सुझाव बनाने की जरूरत है।

गूंज मीडिया हाउस में सांसद विवेक नारायण शेजवलकर जी का स्वागत करतीं गूंज मीडिया ग्रुप की डायरेक्टर कृति सिंह।

आने वाले समय में ऐसे कौन से प्रोजेक्ट देखने को मिलेंगे शहर के विकास के लिए

देखिए अमृत योजना लगभग पूरी हो चुकी है। उसमें अमृत के बारे में शहर में पीने के पानी की व्यवस्था यह और सी. बी. ए. सिस्टम पूरा होना था जो डीपीआर बनी थी उसके हिसाब से जो काम बाकी रह गया है। जैसे 6 वाट जो ग्रामीण क्षेत्र के नगर निगम में शामिल हुए थे। और वह जो 60 वार्डों में काम अधूरा रह गया है। वो पूरा का पूरा काम करने के लिए अमृत-2 आ रहा है। यह भी एक बहुत बड़ी महत्वकांक्षी योजना है जो अमृत-2 है उससे सारे गैप हम पूरे करेंगे जो पूरे नहीं हुए हैं। स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट में उसके बारे में एक धारणा भ्रामक भी हैं। स्मार्ट सिटी योजना एक एरिया डेवलपमेंट प्रोग्राम था मतलब उन्होंने तय किया था कि करीब साडे 500 एकड़ एरिया में करेंगे उसको पूरा स्मार्ट सिटी बनाएंगे। उसमें से रिव्यू जनरेशन का भी उसमें प्रोविजन था उसके बाद उसको हम डेवलिकेट करेंगे। यह मूल भावना स्मार्ट सिटी की थी पर उसमें कितना हो पाया कितना नहीं हो पाया इसका तो मूलधन बाद में किया जाएगा पर मूर्तिशीय था इसलिए कई लोग पूछते हैं। ना कि स्मार्ट तो शहर हुआ ही नहीं पूरा शहर स्मार्ट होना भी नहीं था वह एक एरिया हमको बनाना था और बाकी कुछ उसमें ऐसे प्रोजेक्ट थे जो पेन सिटी थी पैसे का भी थोड़ा बहुत उसमे था ला करके यह उसकी योजना थी अब पूरा होने आ रहा है। जैसे ही वह पूरा हो जाएगा तब पता लगेगा कि उसमें कितना अचीव कर पाए और कितना अभी नहीं कर पाए।

विद्यार्थी जीवन कितना चैलेंजिंग रहा, आपने कैसे तय किया कि आपको राजनीति में जाना है?

देखिए पिताजी राजनीति में थे और घर का ही मेन सदस्य राजनीति में थे तो मेरा भी थोड़ा हाथ उसमें था पर पूरी तरह से राजनीति में नहीं था। पिताजी के चुनाव होते थे तो उसमें काम करता था मतलब में उनकी एक तरह से

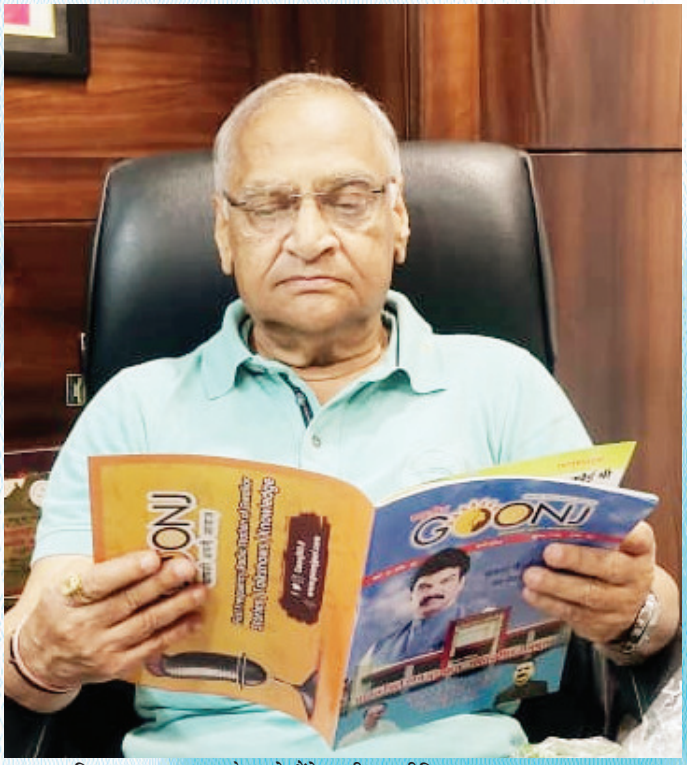

सहायता किया करता था। उनके रहते मैंने कभी राजनीति में भाग नहीं लिया उनके जाने के बाद में फिर सब मैंने संभाला मैंने चुनाव भी लड़ा। पार्टी के पदों पर भी मैं रहा और उसी का ही परिणाम है कि मैं सांसद भी हूं बस यह है कि मैं ऐसा कोई तय करके राजनीति में नहीं आया वैसे बेसिकली मैं एक मैकेनिकल इंजीनियर हूं।

पिताजी से आपने क्या-क्या सीखा और कितना परिवर्तन आप समय के साथ देखते हैं ?

देखिए राजनीति में बहुत परिवर्तन होता है और विशेष करके मैं यह कहूं कि भारतीय जनता पार्टी के विपक्ष में थे बरसों तक लोगों ने काम किया जीवन लगा दिया जब मेरे पिताजी ने राजनीति चालू की थी। तब शायद किसी ने इतनी कल्पना भी नहीं की होगी कि यह मौका भी कभी आएगा कि हमारा प्रधानमंत्री होगा हमारी सरकार होगी तो उस समय राजनीति थी। एक केवल चलना चलते रहे सामने कभी एक मंजिल मिलेगी इसका कभी कोई सोचा भी नहीं लोगो ने और दिखता भी नहीं था पर आज राजनिति पूरी तरह इसके विपरित हो गई है।

सर क्या कहना चाहेंगे आप स्टूडेंट से और उनके पैरेंट्स से

देखिए मेरा मानना है कि रिजल्ट के बारे में बिल्कुल नहीं सोचना चाहिए। बच्चे तैयारी करके एग्जाम लिखते हैं इसके बाद भूल जाना चाहिए। कोई भी एग्जाम हो मतलब एग्जाम कोई एंड नहीं है। लोग यह सोच लेते हैं कि बस यही मौका है इसके बाद कुछ नहीं है। अगर मान लीजिए यहां सक्सेस नहीं हो पाए तो आगे कुछ नहीं है। यह भावना है मेरा मानना है कि यह नहीं होना चाहिए। अनंत आकाश है और मेरा तो यही मानना है कि सफलता जो है सफलता की पहली सीढ़ी है और ऐसा लोग कहते भी हैं और सही भी है। तो असफल होने पर निराश नहीं होना चाहिए। परीक्षा देने के बाद मेरा मानना है कि भूल जाना चाहिए कुछ यही रिजल्ट है हमारा जीवन है ऐसा नहीं मानना चाहिए जीवन बहुत बड़ा है इसमें हार जीत लगी रहती है।

केंद्रीय जेल में सुंदरकांड की संगीतमय कथा सुनकर भावुक हुए कैदी

● गूंज न्यूज नेटवर्क

ग्वालियर स्थित केंद्रीय जेल में कैदी और बंदी संगीतमय रामकथा सुनकर भाव विभोर हो गए। इस सुंदरकांड का आयोजन गूंज 90.8 एफएम के द्वारा आयोजित किया गया

। केंद्रीय जेल में संगीतमय सुंदरकांड का आयोजन किया गया इसमें सुंदरकांड की चौपाइयों के साथ ही भजनों के जरिये प्रेरक कथाएं भी सुनाई गई। इस कथा में पंडित अंकित शर्मा की टीम ने जीवन में अध्यात्म का महत्व बताते हुए यह बताया कि अध्यात्म के साथ ही सुंदरकांड हमारे जीवन को कैसे और सार्थक बनाता है। कार्यक्रम का संचालन करते हुए गूँज ग्रुप एवं एफ पी ए आई ग्वालियर

के कार्यक्रम अधिकारी अच्छेद्र सिंह कुशवाह ने सभी आगामी नवीन गतिविधियों पर जानकारी दी इस अवसर पर अतिथि के रूप में बोलते हुए केंद्रीय जेल के अधीक्षक विदित सिरवैया ने बताया कि कैसे छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखकर हम अपने जीवन में बड़े परिवर्तन ला सकते हैं। इस अवसर पर केंद्रीय जेल के जेलर विदित सिरवैया के अलावा असिस्टेंट सुप्रिडेंट विपिन दंडोतिया, मिस्टर प्रवीण त्रिपाठी , राघवेंद्र सिंह, सुमित शर्मा, अनिरुद्ध सिंह नरवरिया उपस्थित थे । कार्यक्रम में गूंज की डायरेक्टर कृति सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया और बताया कि

गूंज सामुदायिक रेडियो के जरिये कैसे समाज मे बदलाव लाने और कुरीतियों के खिलाफ लोगो को जागरूक करने का प्रयास कर रही है । उन्होंने बताया कि हम मनोरंजन के साथ समाज को जागरूक करने के लिए भी काम करते है और आज का यह आयोजन भी इसी श्रृंखला का हिस्सा है। गूंज ने इस मौके पर जेल में अच्छा काम करने वाले बंदियों को सम्मानित भी किया। कार्यक्रम के समापन पर गूँज ग्रुप की तरफ से सभी आभार व्यक्त हरीश कुमार ने किया.. कार्यक्रम को सफल बनने में गूँज ग्रुप की और से स्तुति सिंह प्रिया शिंदे, उमंग अदिति स्मृति सिंह रवी शंकर अभय एबं उमंग की मुख्य् भूमिका रही

Goonj event on traffic rules and vision zero at Bhartiyam Vidya Niketan

साइबर सिक्योरिटी अवेयरनेस एंड मोटिवेशनल टॉक शो में बच्चों को किया जागरूक

● **गूंज न्यूज नेटवर्क**

गूंज 90.8 एफ. एम. द्वारा ग्वालियर शहर के स्कूलों कॉलेजों में बच्चों को यातायात और विज़न ज़ीरो के प्रति जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इसी के अन्तर्गत शिवपुरी लिंक रोड स्थित भारतीयम विद्या निकेतन स्कूल के छात्र छात्राओं एवं स्टाफ को यातायात नियमों के प्रति जागरूक करने हेतु यातायात जागरूकता सेमिनार का आयोजन किया। गूंज 90.8 एफ. एम. ने भारतीयम विद्या निकेतन स्कूल में साइबर सिक्योरिटी अवेयरनेस एंड मोटिवेशनल टॉक शो का आयोजन किया जहाँ मुख्य अतिथि के रूप में एडिशनल एसपी क्राइम राजेश दंडोतिया ने साइबर क्राइम के बारे में बताया विद्यालय के छात्र-छात्राओं को जागरूक किया।

इससे पहले डीएसपी यातायात नरेश अन्नोटिया द्वारा उक्त सेमिनार में उपस्थित छात्र छात्राओं एंव स्टाफ को

यातायात नियमों की जानकारी प्रदान की गई जैसे दो पहिया वाहन पर हेलमेट की उपयोगिता चार पहिया वाहन पर सीट बेल्ट की उपयोगिता के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करते हुए कहा कि दो पहिया वाहन पर तीन सवारी ना बैठाए, रॉन्ग साइड से ओवरटेक ना करें निर्धारित गति में ही वाहन चलाएं, बिना लाइसेंस के वाहन ना चलाएं, बिना बीमा के वाहन ना चलाएं, रेड लाइट का उल्लंघन ना करें आदि। यदि आप यातायात नियमों का पालन कर सुरक्षित वाहन चलाएंगे तब आप भी सुरक्षित रहेंगे तथा अन्य लोगों को भी सुरक्षित रख सकेंगे। कार्यशाला में उपस्थित छात्र - छात्राओं को यातायात नियम संबंधी शॉर्ट वीडियो के माध्यम से भी यातायात नियमों के प्रति जागरूक किया गया। कार्यशाला के अंत में सभी छात्र छात्राओं एवं स्टाफ को यातायात नियमों का पालन करने की शपथ दिलाई गई। कार्यक्रम में गूंज मीडिया ग्रुप की डायरेक्टर कृति सिंह ने बच्चों को विज़न जीरो के बारे में विस्तार से बताया और बच्चों का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम में विशेष रूप से गूंज मीडिया ग्रुप की टीम एवं हरीश पाल आदि उपस्थित रहे।

हेरिटेज में है बेहतर कैरियरः कामाक्षी माहेश्वरी

वर्ल्ड हेरिटेज डे के अवसर पर गूंज पर्यटन विशेष में हम अपने पाठकों को रूबरू करा रहे हैं डॉ. कामाक्षी माहेश्वरी से जो अस्सिटेंट प्रोफेसर इंडियन इंस्ट्टीयूट ऑफ टूरिज्म-ट्रेवल मैनेजमेंट हैं, हेरिटेज एवं टूरिज्म के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। पेश हैं उनसे बातचीत के मुख्य अंश।

ग्वालियर में कुछ पर्यटन स्थल ऐसे हैं कि लोग दूर से आते हैं देखने के लिए लेकिन कुछ स्थल ऐसे हैं जिसके बारे में हमें अभी भी नहीं पता है तो आप उन हेरिटेज के बारे में बताएं ?

य ह हमारे लिए गर्व की बात है कि हम वर्ल्ड हेरिटेज डे सेलिब्रेट कर रहे हैं। क्योंकि ग्वालियर एक ऐतिहासिक शहर है और यहां के हेरिटेज हिस्टोरिकल हैं। जैसे कि हमारा ग्वालियर का किला, तानसेन का मकबरा हुआ, जय विलास पैलेस जिसे देखने दुनियांभर देशी-विदेशी पर्यटक ग्वालियर आते हैं। लेकिन कई सारी ऐसी जगह भी हैं जिससे लोग आज भी अनजान हैं। उन्होंने वह जगह नहीं देखी हैं। हमारी बारादरी या फिर जैसे कि ठंडी सड़क , ग्वालियर में ऐसे 100 से ज्यादा पर्यटन स्थल होंगे। जहां पर्यक अभी नहीं गए हैं और मैं दावे के साथ कह सकती हूं कि ग्वालियर का किला लोग पूरा नहीं घूमे होंगे। क्योंकि किले पर ही करीब 60 ऐसे स्मारक हैं जहां तक पर्यटक पहुंच ही नहीं पाते हैं या फिर उन्हें देख नहीं पाते। हमने सूरजकुंड देखा होगा जोहर ताल देखा होगा लेकिन क्या हमने किले पर विक्रम महल देखा है, क्या जागीर महल देखा, या फिर शाहजहां महल देखा। ऐसे बहुत सारे पर्यटन स्थल हैं जो हमारे ग्वालियर को एक सुंदर और हेरिटेज शहर बनाती है। दर्शकों को मैं यह भी बताना चाहूंगी कि बाबरनामा एक किताब है जो कि बाबर ने लिखी है। और बाबरनामा में उन्होंने यह जिक्र किया है की मोतियों की माला में ग्वालियर फोर्ट जो है वह सबसे सुंदर मोती है। इस तरह से हम देखें कि ग्वालियर आज से नहीं गई सालों पहले से ही हिस्टोरिकल और हेरिटेज शहर है।

दो तरह के टूरिस्ट होते हैं एक वह जो नॉर्मल ही घूमने के लिए आते हैं और दूसरे वह होते हैं जो कल्चर को जाने और जो बहुत करीब से उस कल्चर को देख सकें तो ग्वालियर में किस तरह का टूरिस्ट ज्यादा आता है?

ग्वालियर में हिस्ट्री और हेरिटेज के क्षेत्र में टूरिस्ट सबसे ज्यादा आते हैं जो कि बहुत अच्छी बात है। ग्वालियर एक बहुत ही फेमस डेस्टिनेशन है। डोमेस्टिक टूरिस्ट में जिसमें से हमारे यहां बंगाल से बहुत टूरिस्ट आते हैं। हमारे यहां साउथ इंडियन से बहुत टूरिस्ट आते हैं। यह इसलिए है क्योंकि अपने ग्वालियर फोर्ट के वजह से और अपना ग्वालियर फोर्ट को कोपादरी बोलते हैं क्योंकि यह गोपाचल पर्वत के ऊपर है। अपना जो फोटो है वह हिल फोर्ट्स ऑफ इंडिया में आता है। ग्वालियर में जो टूरिस्ट आता है, हम 12 - 15 साल से बस यही देख रहे हैं कि ग्वालियर में जो भी टूरिस्ट आता है वह सिर्फ और सिर्फ केले के लिए आता है ग्वालियर फोर्ट के लिए आता है । या फिर हमारे जय विलास पैलेस में जो 1 सिल्वर की ट्रेन है, जो कि पूरे इंडिया में कहीं और नहीं है , उस ट्रेन को देखने आता है। तो यह हमारे लिए बहुत अच्छी बात है कि ग्वालियर के विरासत को पहचान मिलती है। ग्वालियर के अधिकतर जो पर्यटक आते हैं वह हेरिटेज देखने ही आते हैं। यह बहुत अचंभित करने वाली बात है कि हमारा ऐतिहासिक किला है वह कई वेदों में डिवाइडेड है।

Dr.Kamakshi Maheshwari
Asst. Professor AtIndian Institute of Tourism and Travel Management.Nodal officer - Central Nodal Agency for Rural Tourism and Rural Homestays, Ministry of Tourism ,Govt. of India

ग्वालियर के टूरिज्म में पहले से आज कितना बदलाव आया है?

अगर हम ग्वालियर के पर्यटन की बात करें तो पहले की अपेक्षा बहुत बदलाव आए हैं। मैं पिछले 15 साल से ग्वालियर के पर्यटन के ऊपर ही काम कर रही हूं। और मुझे यह याद आता है कि 15 साल पहले हम ग्वालियर को से टूरिस्ट नहीं बोल सकते थे। ग्वालियर इतना शांत हुआ करता था कि रात में जो फोर्ट पर लाइट एंड शो होता है उसे टूरिस्ट रात में देखने से कतराते थे क्यों क्योंकि लौटते समय किले का जो रोड रहता था वह सुनसान हो जाता था। काफी अंधेरा रहता है लेकिन आज सब कुछ बदल गया है सैकड़ों पर्यटक रात में लाइट एंड शो देखने ग्वालियर किले पर आते हैं और पर्यटकों को पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था एवं लाइटिंग की व्यवस्था भी रहती है। वर्तमान में बहुत बदलाव आया है।

जब टूरिज्म की बात आती है तो एक होमस्टे प्रोग्राम का बहुत जिक्र होता है एक्जेक्टली यह होता क्या है?

होम स्टे एक तरह से यह कॉन्सेप्ट है जैसे कि हम हमारे घर में रहकर बाहर हैं आजकल का जो टूरिस्ट है वह कोरोना के बाद ऐसी जगह चाहता है कि जहां उसको लगे कि वह घर में ही है तो यह होमस्टे प्रोग्राम लोकल जो कम्युनिटी है। लोकल जो लोग हैं उनको पर्यटन में इंवॉल्व करने के लिए डेवलप किया गया है जिसके अंतर्गत कोई भी व्यक्ति जिसके पास दो या चार कमरे हो जिसमे 6 बेड मिनिमम कंपलसरी है तो वह होमस्टे में रजिस्टर्ड होकर अपने घर में होमस्टे चला सकते हैं अब जब होमस्टे में जो व्यक्ति आता है। जैसे घरवाले बैठकर टीवी देखते हैं खाते हैं बातें करते हैं बैठते हैं वैसे ही वह पर्यटन भी करेगा वह भी आपकी डाइनिंग टेबल पर अटके आपके साथ खाना खाएगा बातें करेगा टीवी देखेगा जैसे आप घर के लोग करते हैं बिल्कुल वैसे ही वह भी करेगा तू होमस्टे कांसेप्ट बेसिकली यह है कि जो पर्यटन आएगा। आप उसे अपने घर में बिठा लेंगे अपने कल्चर के बारे में बताएंगे अपने बारे में बताएंगे आपका खाना वह खाएगा आएगा जिससे उसको आपके बारे में आपके शहर के बारे में आपके कल्चर के बारे में जानकारी मिलेगी जैसे कि मानी मेरे घर में पुरानी चीजें हैं ग्रामोफोन है और जैसे कि मेरे दादाजी हैं उनके साथ बैठा है कुछ अपनी बता रहा है मेरे दादाजी कहानी सुना रहे हैं तू यह जो पर्यटक है उनको होमस्टे से ज्यादा लगाव हो गया है।

मैम मैं आपसे पूछना चाहूंगी कि कुछ लोग या कुछ स्टूडेंट्स जो हेरिटेज से बहुत लगाव रखते हैं उसे जोड़ना चाहते हैं तो वह आपसे कैसे जुड़ सकते हैं?

सबसे पहली बात में यह बताना चाऊंगी की मैं 14-15 साल से ही एक पर्यटन संस्था में ही असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हूं। सबसे पहले जुड़ाव तो स्टूडेंट का ही हो जाता है हमारे यहां मास्टर और बेचलर दोनों कराए जाते हैं। इसके अलावा जो हेरिटेज में रुचि रखते हैं में उनको सलाह देना चाऊंगी वो इन्हिशियल लेवल पर कई तरह की ऐसी चीजे होती है जिससे वो हेरिटेज से जुड़ सकते है जैसे आप फोटोग्राफी का शोक रखते है तो आप हेरिटेज फोटोग्राफी करे अगर आप म्यूजिक का शोक रखते है तो आप हेरिटेज म्यूजिक करे अगर आप लिखने का शोक रखते है तो आप हेरिटेज कंटेंट लिखिए क्युकी यह आजकल बहुत कॉमन है हमारे यंगरस्ट में एस वैल एस आप हैरिटेज कंस्वीनिश का कोर्स कर सकते है तो हेरिटेज में ही हेरिटेज ट्यूरिसम में ही ऐसी कई ऑपर्च्युनिटी मिलती है जब आप हेरिटेज के बारे में और जानने को कोसिस करते है तो आप कल्चर को जानते हैं आप लोगो को पहचाना शुरू करते है आप उनके रहन सहन को पहचाना शुरू करते है आप हिस्ट्री में चले जाते है तो यह सब ऐसी चीज है जो इंटरेस्ट पैदा करती है यह बहुत एंजॉयफुल फील्ड है।

सम्मान

नमन पब्लिक वेलफेयर सोसाइटी द्वारा मुख्यमंत्री शहरी स्वछता संकल्प ग्वालियर गौरव सम्मान समारोह में गूँज मीडिया ग्रुप की डायरेक्टर कृति सिंह को समाजसेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेत नगर निगम डिप्टी कमिशनर अमर गुप्ता एवं एडिशनल एस पी द्वारा उत्कृष्ट कार्य हेतु सम्मानित किया गया।

ग्वालियर नगर निगम कमिश्नर हर्ष सिंह का गूंज कार्यालय में स्वागत करतीं गूंज मीडिया ग्रुप की डायरेक्टर कृति सिंह।

Goenka school में गूंज द्वारा एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर स्कूल के समस्त स्टाफ एवं गूंज मीडिया ग्रुप की पूरी टीम उपस्थित रही।

Seminar on importance of Women police station in reducing the crime against women

ग्वालियर स्थित आत्मा ज्योति आवासीय विद्यालय गोले का मंदिर थाना स्थित PERIODS WALLAH FOUNDATION & GOONJ F.M के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित रियूजेबल क्लॉथ सेनेटरी पैड वितरित गये। एवम् वहाँ की बेटियों द्वारा संगीत प्रस्तुति दी गई। इस अवसर पूर्व महापौर श्रीमती समीक्षा गुप्ता, गूंज मीडिया ग्रुप की डायेरक्टर कृति सिंह, गौरव जादौन, डी. एस. जी, रजनी, अचेंद्र कुशवाहा सहित सम्मानित वरिष्ठ जन उपस्थित रहे।

EDUCATION AND TRAINING ARE CRUCIAL IN INSTILLING APPROPRIATE BEHAVIORS AND ATTITUDES IN ROAD USERS

CRACKING DOWN ON TRAFFIC OFFENCES WILL MAKE A DIFFERENCE

90% of ALL ACCIDENTS ARE LINKED TO HUMAN ERROR

THE BEHAVIORS OF ROAD USERS IS THE ARE WITH
BY FAR THE BIGGEST POTENTIAL FOR IMPROVING ROAD SAFETY

IN **30%** OF FATAL ACCIDENTS **SPEEDING**

DISTRACTION CAUSES **10-30%** OF ROAD DEATHS

25% OF ALL ROAD FATALITIES IN EUROPE ARE **ALCOHOL**- RELATED

ABOUT **65%** OF FATAL ACCIDENTS ARE CAUSED BY **VIOLATIONS OF TRAFFIC RULES**

ON AIR
90.8 FM
GOONJ
आपकी अपनी आवाज़
First Frequency Radio Station of Gwalior
Stories | Talkshows | Knowledge
Goonj90.8
www.goonjgwl.com